प्रश्न-पत्र प्रारूप

हिंदी (केन्द्रिक)

कक्षा-बारहवीं

समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्रश्नों के प्रकार	अपठित बोध	लेखन	साहित्य	विशेष टिप्पणी
अति लघुत्तरात्मक	अपठित काव्यांश 5(5) अपठित गद्यांश 11(11)	प्रश्न 1		पठन, भाव बोध व लेखन संबंधी
लघुत्तरात्मक	अपठित गद्यांश 4(2)	प्रश्न 2 प्रश्न 7	काव्य-अर्थग्रहण 8(4)	अवबोध, पठन व लेखन
		प्रश्न 8	काव्य-सौंदर्य बोध 6(3)	अवबोध, पठन व लेखन
		प्रश्न 9	काव्य-विषयवस्तु 6(2)	अवबोध, पठन व लेखन
		प्रश्न 10	गद्य-अर्थ ग्रहण 8(4)	अवबोध, पठन व लेखन
		प्रश्न 13	पूरक-विचार/संदेश 4(2)	अवबोध, पठन व लेखन

निबंधात्मक प्रश्न	प्रश्न 3 प्रश्न 4 प्रश्न 6 प्रश्न 5(अ) प्रश्न 5(आ)	निबंध 5(1) पत्र 5(1) फीचर 5(1) जनसंचार 5(1) संपादकीय 5(1)	पूरक-विषयवस्तु प्रश्न 14 5(1)	लेखन व अभिव्यक्ति लेखन व अभिव्यक्ति व लेखन लेखन व अभिव्यक्ति लेखन व अभिव्यक्ति लेखन व अभिव्यक्ति
बोधात्मक		प्रश्न 11 प्रश्न 11	गद्य-विषयवस्तु 12(4) पूरक-विषयवस्तु 6(2)	भावग्रहण, अवबोध व लेखन भावग्रहण, अवबोध व लेखन

नोट : प्रश्न संख्या कोष्ठक के भीतर व अंक कोष्ठक के बाहर हैं।

सी.बी.एस.ई. प्रतिदर्श प्रश्नपत्र-1

हिंदी - केंद्रिक

कक्षा - बारहवीं

समयः 3 घंटे **पूर्णांक - 100**

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - 'क', 'ख', 'ग', 'घ'। सभी प्रश्नों को क्रमानुसार कीजिए।

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खंड 'क'	
प्र.1	**निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -** (1X5)	5
	1. आह ; हुई फिर ''कोई है?'' की वही पुकार, कुशल करें भगवान कि आया फिर वह मित्र उदार। चरणों की आहट तक मैं हूँ खूब गया पहचान, सुनकर जिसे काँपने लगते थर-थर मेरे प्राण। मैं न डरूँगा पड़े अगर यमदूतों से भी काम; मगर, दूर से ही करता हूँ श्रद्धा-सहित प्रणाम उन्हे, नहीं आकर जो फिर लेते जाने का नाम।	
	2. मेरी कुर्सी खींच, बैठ कर बहुत पूछता हाल, (कह दूँ, आहट सुनी तुम्हारी, और हुआ बेहाल) उलट - पुलट कविता की कापी देने लगता राय, कहाँ पंक्तियाँ शिथिल हुई हैं? कहाँ हुई असहाय? देता है उपदेश बहुत, देता है नूतन ज्ञान, मेरी गन्दी रहन-सहन पर भी देता है ध्यान। सब कुछ देता, एक नहीं देता अपने से त्राण।	
	3. झपट छीन लेता है मेरे हाथों से अख़बार कहता, 'क्या पढ़-पढ़ कर डालोगे अपने को मार? फिर कहता, 'कुछ द्रव्य जुगा कर खड़ा करो करुछ काम, पैसे भी कुछ मिलें और हो दुनिया में भी नाम।'	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(क) प्रथम काव्यांश में किससे डरने की बात कही जा रही है?	1
	(ख) 'उदार मित्र' से कवि का क्या तात्पर्य है?	1
	(ग) मित्र के अत्यधिक देने से भी कवि को क्या परेशानी है?	1
	(घ) 'फिर कहते, 'कुछ द्रव्य जुगा कर खड़ा करो कुछ काम' का क्या अर्थ है?	2
प्र.2	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -**	**15**
	1. आप एक ऐसे मुल्क में हैं, जहाँ करोड़ों युवा बसते हैं। इनमें से कई बेरोज़गार हैं, तो कई कोई छोटा-मोटा काम-धंधा कर रहे हैं। ये सब पैसा कमाने की ख्वाहिश रखते हैं, ताकि ये सभी अपनी रोज़मर्रा की जिंदगी को चला सकें और भविष्य को बेहतर बना सकें। ऐसे लोगों से आप यह उम्मीद कैसे रख सकते हैं कि वे समाजसेवा के कार्यों में रुचि लेंगे? 2. यह उन कई मुश्किल सवालों में से एक है, जिनका सामना शिक्षाविद सूसन स्ट्रॉड को भारत में करना पड़ा। उन्होंने अमेरिका में 'राष्ट्रीय युवा सेवा संगठन अमेरिका' की स्थापना की है। 3. सूसन का मकसद युवाओं की ऊर्जा का इस्तेमाल एक रणनीति के तहत राष्ट्रीय विकास, लोकतंत्र को बढ़ावा देने और बेरोजगारी की समस्या से निपटने के लिए करना है। लेकिन क्या विकासशील देशों के युवा मुफ्त में वह काम करना चाहेंगे? क्या ये लोग अपनी पढ़ाई या कॅरियर को दरकिनार कर न्यूनतम वेतन पर ऐसी किसी मुहिम से जुड़ेंगे? प्रोत्साहन कहाँ है? 4. इसके जवाब में सुश्री स्ट्रॉड कहती हैं, ''मैं सोचती हूँ कि ऐसे कुछ तरीके हैं, जिनसे भारत जैसे बेरोजगारी से जूझ रहे देशों में भी युवाओं की सेवाएँ ली जा सकती हैं।'' वह पिछले साल नवंबर में दिल्ली में हुए स्वयंसेवी प्रयासों के अंतर्राष्ट्रीय संगठन के सम्मेलन में मानद अतिथि थीं। वह कहती हैं, ''युवाओं के लिए रोज़गार प्राप्ति में उनके पास नौकरी का कोई पूर्व अनुभव न होना एक सबसे बड़ी बाधा होता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमने कई साल पहले दक्षिण अफ्रीका में ऐसे बेरोज़गार युवाओं के लिए कुछ कार्यक्रम शुरू किए जो राजनीतिक संघर्षों में सक्रिय रहे। ये युवा स्कूलों से बाहर हो चुके थे और रोज़गार के मौके भी गँवा चुके थे। हमने इनके लिए कुछ कार्यक्रम तैयार किए। मिसाल के तौर पर हमने उन्हें अश्वेतों के इलाकों में कम कीमत के मकान बनाने के काम से जोड़ा। वहाँ इन्होंने भवन निर्माण के गुर सीखे और जाना कि एक टीम के रूप में कैसे काम किया जाता है। इस तरह ये लोग एक हुनर में माहिर हुए और रोजगार पाने के दावेदार बने।'' 5. नौकरियों से जुड़े बहुत से प्रशिक्षण कार्यक्रम अमूमन किसी खास कौशल के विकास पर केन्द्रित होते हैं, लेकिन सेवा संबंधी कार्यक्रम इनसे कुछ बढ़कर होते हैं। इनमें शामिल लोग, ज्यादा उपयोगी और पहल करने वाले नागरिक होते हैं। स्ट्रॉड के मुताबिक, इनकी यह खासियत इनमें समाज के प्रति एक जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता का अहसास भरती है। युवाओं के लिए चलाए जाने वाले सेवा संबंधी कार्यक्रमों के जरिए उन्हें उपयोगी परियोजनाओं से जोड़ा जा सकता है और इसके एवज़ में कुछ पैसा भी दिया जा सकता है।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	6. वह कहती हैं, ''ज़रा 1930 के दशक के मंदी के दौर के अपने देश को याद कीजिए। राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट ने संरक्षण कार्यक्रम चलाए। उन्होंने देश के युवाओं को, खासकर बेरोजगारों को कई तरह के कामों से जोड़ दिया। इसका इन युवाओं और पूरे देश को जबर्दस्त फायदा हुआ।'' स्ट्रॉड बताती हैं, ''इन युवाओं को उनके काम के बदले में पैसा दिया जाता था, जिसका एक हिस्सा उन्हें अपने परिवारों को देना होता था। अगर आप अमेरिका के किसी राष्ट्रीय उद्यान में जाएँगे तो आपको पता चलेगा कि इन लोगों ने कितनी समृद्ध विरासत का निर्माण किया था। इन युवाओं ने अमेरिका के ज्यादातर राष्ट्रीय उद्यानों का सृजन किया और वहाँ लाखों पेड़ लगाए।'' 7. अमेरिका में ऐसे ही प्रयासों की सबसे ताजा मिसाल है 'अमेरिका', इसके जरिए हर साल 75 हजार युवाओं को रोजगार दिया जाता है और इनमें से ज्यादातर बीस से तीस की आयुवर्ग के होते हैं। कई तो बस अभी हाईस्कूल से निकले ही होते हैं, तो कई स्कूल छोड़ चुके होते हैं और कई पी. एच.डी. भी होते हैं। सूसन बताती हैं कि आइडिया यह होता है कि ''लोग छात्रवृत्ति पाते हैं, जो न्यूनतम वेतन से कम होती है। इसके बदले ये युवा देश के सबसे विपन्न इलाकों में एक या दो साल तक कई तरह के काम करते हैं।'' 8. स्ट्रॉड स्पष्ट करती हैं, ''इसमें दो राय नहीं कि इस पैसे से ये अमीर नहीं हो सकते, पर इतना ज़रूर है कि इससे इनका खर्चा आराम से चल जाता है। साल के आखिर में इन युवाओं को 4,725 डॉलर का एक वॉउचर दिया जाता है, जिसे ये सिर्फ शिक्षा या प्रशिक्षण की फीस चुकाने या कॉलेज का ऋण अदा करने के लिए ही इस्तेमाल कर सकते हैं।'' इन युवाओं में बहुत से मिसिसिपी और लुइसियाना में राहत का काम कर चुके हैं, जहां तूफान कैटरीना ने भारी तबाही मचाई थी। 9. स्ट्रॉड का मानना है कि स्वयंसेवी संगठन और व्यक्ति विशेष अपनी ऊर्जा और विचारों से विभिन्न योजनाओं को साकार कर सकते हैं, उन्हें कम करने और उसे फैलाने दीजिए। ''यदि आप वाकई ऐसा कुछ करना चाहते हैं, जिससे ज़्यादा से ज़्यादा युवाओं की ज़िंदगी प्रभावित हो तो इसके लिए आपको ज़्यादा से ज़्यादा जन संसाधनों की व्यवस्था करनी होगी।'' 10. वह कहती हैं, ''भारत में भी युवाओं के लिए कई कार्यक्रम हैं। यहाँ एन. सी. सी. है और राष्ट्रीय सेवा योजना भी है, जिससे पूरे देश में पाँच हजार स्वयंसेवक जुड़े हुए हैं। लेकिन वह सवाल करती हैं कि इस योजना से सिर्फ पाँच हजार युवा ही क्यों जुड़े हुए हैं, दस लाख क्यों नहीं?क्या इसे समाज की जरूरतों और रोज़गार से जोड़ा गया? युवाओं को इससे जोड़ने की मुहिम क्यों नहीं छेड़ी जाती? इस देश में गाँधीवादी परम्पराएँ हैं, दान और उदारता की भावना है, जिनके दम पर बड़े पैमाने पर सेवा संबंधी कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं।''	
	(क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।	1
	(ख) भारत में करोड़ों युवाओं की कैसी स्थिति है?	1
	(ग) शिक्षाविद् 'सूसन स्ट्रॉड' को भारत में क्या सामना करना पड़ा?	1

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(घ) सूसन युवाओं की ऊर्जा का इस्तेमाल कैसे करती है?	1
	(ङ) अफ्रीका में बेरोजगार युवाओं के लिए किस तरह के कार्यक्रम तैयार किए गए?	1
	(च) युवाओं को उपयोगी परियोजनाओं के साथ कैसे जोड़ा जा सकता है?	1
	(छ) अमेरिका में युवाओं ने राष्ट्रीय उद्यानों का सृजन कैसे किया?	1
	(ज) बेरोज़गार युवाओं को रोज़गार देने के संदर्भ में 'अमेरिका' की भूमिका क्या है?	1
	(झ) ज़्यादा युवाओं की ज़िंदगी को कैसे प्रभावित किया जा सकता है?	1
	(ञ) 'छात्रवृत्ति' तथा 'विकासशील' शब्दों के वाक्य बनाइए।	2
	(त) 'अमीर' और 'अतिथि' शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए।	2
	(थ) 'विपन्न' तथा 'न्यूनतम' शब्दों के विलोम लिखिए।	1
	(द) 'बेरोज़गारी' शब्द में से उपसर्ग और प्रत्यय अलग-अलग कीजिए।	1
	खंड-ख	**25**
प्र.3	**निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए** -	**5**
	(क) तकनीक से बदलता जीवन	
	(ख) जो है उससे बेहतर चाहिए	
	(ग) युवा पीढ़ी और देश का भविष्य।	
	(घ) मीडिया की सामाजिक ज़िम्मेदारी।	
प्र.4	**दूरदर्शन के महानिदेशक को दूरदर्शन के कार्यक्रमों की समीक्षा करते हुए एक पत्र लिखिए।**	**5**
	अथवा	
	अपने मुहल्ले के समीप स्थित ''बुद्धा पार्क'' की दुर्दशा की ओर निगमायुक्त का ध्यान आकर्षित करते हुए गौतम/रुचि की ओर से पत्र लिखिए, जिसमें पार्क के समुचित रख-रखाव की व्यवस्था का आग्रह किया हो।	
प्र.5	**(अ) निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए** -	
	(क) 'पेज थ्री' पत्रकारिता का तात्पर्य क्या है?	1
	(ख) 'स्तम्भ लेखन' से क्या तात्पर्य है?	1

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(ग) 'डेड लाइन' क्या है?	1
	(घ) 'पत्रकारीय लेखन' और 'साहित्यिक सृजनात्मक लेखन' में क्या अन्तर है?	1
	(ङ) फीचर लेखन की भाषा शैली कैसी होनी चाहिए?	1
	(आ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर आलेख लिखिए।	**5**
	(1) लोकतंत्र से देश की रक्षा कैसी की जा सकती है? युवा-पीढ़ी का इसमें क्या योगदान है? इन बिन्दुओं के आधार पर एक आलेख तैयार कीजिए।	
	(2) खेती की ज़मीन पर फैक्टरी लगाने को लेकर चलने वाली बहस में भाग लेते हुऐ आलेख लिखिए?	
प्र.6	**किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों का फीचर आलेख लिखिए-**	**5**
	(क) यमुना जल की स्वच्छता के प्रयास हेतु अभियान	
	(ख) सांप्रयादिकता और भारत	
	खंड-ग	**55**
प्र.7	**निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -**	**8**
	मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ, फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ; कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ! मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ, मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ, जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते, मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!	
	(क) ये पंक्तियाँ किस कविता से ली गई हैं और इसके कवि कौन हैं?	**1**
	(ख) 'जग जीवन का भार और फिर भी जीवन से प्यार' - यहाँ कवि ने जीवन के संदर्भ	**2**

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	में यह विरोधी बात क्यों कही है?	
	(ग) कवि स्नेह-सुरा का पान कैसे करता है?	**2½**
	(घ) 'जग पूछ रहा उनको जो जग की गाते' से कवि का क्या अभिप्राय है?	**2½**
	अथवा	
	बात सीधी थी पर एक बार भाषा के चक्कर में जरा टेढ़ी फँस गई। उसे पाने की कोशिश में भाषा को उलटा-पलटा तोड़ा-मरोड़ा घुमाया-फिराया कि बात या तो बने या फिर भाषा से बाहर आए - लेकिन इससे भाषा के साथ-साथ बात और भी पेचीदा होती चली गई। सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना मैं पेंच को खोलने के बजाए उसे बेतरह कसता चला जा रहा था क्योंकि इस करतब पर मुझे साफ़ सुनाई दे रही थी तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाह।	
	(क) ये पंक्तियाँ किस कविता से ली गई हैं और इसके कवि कौन हैं?	1
	(ख) बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किन्तु कभी-कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है।' स्पष्ट कीजिए, कैसे?	2½
	(ग) इन काव्यापंक्तियों के आधार पर बताइए कि हमें भाषा का प्रयोग कैसे करना चाहिए?	2½

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(घ) 'क्योंकि ..... वाह वाह' - इसका भावार्थ स्पष्ट कीजिए।	2½
प्र.8	**निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-** खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि, बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी। जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस, कहें एक एकन सों 'कहाँ जाई, का करी बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत, साँकरे सबैं पै, राम! रावरें कृपा करी। दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु! दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी।। **(क) किसान, व्यापारी, भिखारी और चाकर किस बात से परेशान हैं?** **(ख) बेदहूँ पुरान कही ..... कृपा करी' - इस पंक्ति का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।** **(ग) कवि ने दरिद्रता को किसके समान बताया है और क्यों?** अथवा उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी।। अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाई अनुज उर लायऊ।। सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।। मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।। सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई।। जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मनतेउँ नहिं ओहू।। सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा। अस बिचारि जियैं जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।। जथा पंख बिन खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।। अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।। जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतू प्रिय भाइ गँवाई।। बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।।	6

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(क) काव्यांश के भाव सौंदर्य पर प्रकाश डालिए। **(ख) इन पंक्तियों को पढ़कर राम और लक्ष्मण की किन-किन विशेषताओं का पता चलता है?** **(ग) अंतिम दो पंक्तियों को पढ़कर हमें क्या सीख मिलती है?**	
प्र.9	**निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए -** **(3+3)** (क) 'छोटा मेरा खेत' कविता में 'बीज गल गया नि:शेष' से क्या तात्पर्य है? (ख) फ़िराक की गजल में प्रकृति को किस तरह चित्रित किया गया है? (ग) 'बादल-राग' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।	6
प्र.10	**निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -** सेवक-धर्म में हनुमान जी से स्पद्र्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनाम-धन्या गोपालिका की कन्या है-नाम है लछमिन अर्थात लक्ष्मी। पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्राय: सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है; पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि-सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया; पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूँ। उपनाम रखने की प्रतिभा होती, तो मैं सबसे पहले उसका प्रयोग अपने ऊपर करती, इस तथ्य को वह देहातिन क्या जाने, इसी से जब मैंने कंठी माला देखकर उसका नया नामकरण किया तब वह भक्तिन-जैसे कवित्वहीन नाम को पाकर भी गद्गद हो उठी।	8
	(क) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है? इसके रचनाकार कौन हैं?	1
	(ख) भक्तिन अपना नाम किसी को क्यों नहीं बताती थी?	2
	(ग) भक्तिन को हनुमान जी से स्पद्र्धा करने वाली किस अर्थ में कहा गया है?	2½
	(घ) महादेवी जी ने लक्ष्मी का नामकरण कैसे किया?	2½
	अथवा उनका आशय था कि यह पत्नी की महिमा है। उस महिमा का मैं कायल हूँ। आदिकाल से इस विषय में पति से पत्नी की ही प्रमुखता प्रमाणित है। और यह व्यक्तित्व का प्रश्न नहीं, स्त्रीत्व का प्रश्न है। स्त्री माया न जोड़े, तो क्या मैं जोडूँ? फिर भी सच सब है और वह यह कि इस बात में पत्नी की ओट ली जाती है। मूल में एक और तत्त्व की महिमा सविशेष है। वह तत्त्व ही है - मनीबैग, अर्थात्	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	पैसे की गरमी या एनर्जी। पैसा पावर है। पर उसके सबूत में आस-पास माल-टाल न जमा हो तो क्या वह खाक पावर है। पैसे को देखने के लिए बैंक-हिसाब देखिए, पर माल-असबाब मकान-कोठी तो अनदेखे भी दीखते हैं। पैसे की उस 'पर्चेजिंग पावर' के प्रयोग में ही पावर का रस है। लेकिन नहीं। लोग संयमी भी होते हैं। वे फिजूल सामान को फिजूल समझते हैं। वे पैसा बहाते नहीं हैं और बुद्धिमान होते हैं। बुद्धि और संयमपूर्वक वह पैसे को जोड़ते जाते हैं, जोड़ते जाते हैं। वह पैसे की पावर को इतना निश्चय समझते हैं, उसके प्रयोग की परीक्षा उन्हें दरकार नहीं है। बस खुद पैसे के जुड़ा होने पर उनका मन गर्व से भरा फूला रहता है।	
	(क) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?इसके रचनाकार कौन हैं?	**1**
	(ख) लेखक के अनुसार पत्नी की महिमा का क्या कारण है?	**2**
	(ग) आपके अनुसार स्त्री की आड़ में किस सच को छिपाया जा रहा है?	**2½**
	(घ) सामान्यतः संयमी व्यक्ति क्या करते हैं?	**2½**
प्र.11	**निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए - (4X3)**	**12**
	(क) यदि आप धर्मवीर भारती के स्थान पर होते तो जीजी के तर्क सुनकर क्या करते और क्यों? 'काले मेघा पानी दे' - पाठ के आधार पर बताइए।	
	(ख) 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर बताइए कि लुट्टन सिंह ढोल को अपना गुरु क्यों मानता था?	
	(ग) चार्ली चैप्लिन की जिन्दगी ने उन्हें कैसा बना दिया? 'चार्ली चैप्लिन यानी हम सब' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।	
	(घ) लाहौर और अमृतसर के कस्टम अधिकारियों ने सफ़िया के साथ कैसा व्यवहार किया? 'नमक' पाठ के आधार पर बताइए।	
	(ङ) कालिदास ने शिरीष की कोमलता और द्विवेदी जी ने उसकी कठोरता के विषय में क्या कहा है? 'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर बताइए।	
प्र.12	**निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (3+3)**	**6**
	(क) यशोधर बाबू की पत्नी मुख्यतः पुराने संस्कारों वाली थी, फिर किन कारणों से वह आधुनिक बन गई? 'सिल्वर वैडिंग' पाठ के आधार पर बताइए।	
	(ख) पाँचवी कक्षा में पास न होने के पश्चात लेखक को कैसा लगा? 'जूझ' कहानी के आधार	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	पर लिखिए?	
	(ग) ऐन की डायरी के माध्यम से हमारा मन सभी युद्ध पीड़ितों के लिए कैसा अनुभव करता है? 'डायरी के पन्ने' कहानी के आधार पर बताइए।	
प्र.13	**निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-** **(2+2)**	**4**
	(क) सिंधु-सभ्यता में नगर-नियोजन से भी कहीं ज्यादा सौंदर्य-बोध के दर्शन होते हैं। 'अतीत में दबे पाँव' पाठ में दिए तथ्यों के आधार पर जानकारी दीजिए।	
	(ख) 'जूझ' कहानी की कौन सी बात आपको याद रह जाती है?	
	(ग) यशोधर बाबू का व्यवहार आपको कैसा लगा?'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर बताइए।	
प्र.14	**निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए** -	**5**
	(क) 'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर ऐन द्वारा वर्णित सेंधमारों वाली घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।	
	(ख) 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर सिंधु-सभ्यता में प्राप्त वस्तुओं का वर्णन कीजिए।	

अंक योजना प्रतिदर्श प्रश्नपत्र-1

हिंदी - केंद्रिक

कक्षा - बारहवीं

समयः 3 घंटे **पूर्णांक - 100**

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र के चार खंड है - 'क', 'ख', 'ग', 'घ'। सभी प्रश्नों को क्रमानुसार कीजिए।

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	खंड-क	
प्र.1	(क) प्रथम काव्यांश के बिन बुलाए मित्र से डरने की बात कही जा रही है ।	1
	(ख) 'उदार मित्र' से कवि का तात्पर्य है कि कवि का समय नष्ट करने वाला बिन बुलाया मित्र ।	1
	(ग) कवि समय ना होने के कारण अपने रहन-सहन पर ध्यान नही दे पाता है। मित्र उसकी आलोचना कर उसे परेशान कर देता है।	1
	(घ) 'कुछ द्रव्य जुगा कर खड़ा करो कुछ काम' का अर्थ है कि कुछ धन एकत्र कर व्यापार आदि आरंभ करो।	2
	(ङ) कवि का मित्र।	1
प्र.2	(क) शीर्षक-बेरोज़गारों के लिए रोज़गार/रोजगार के लिए सूसन की भूमिका।	1
	(ख) भारत में करोड़ों युवाओं में से कई तो बेरोजगार हैं तो कई कोई छोटा-मोटा धंधा कर रहे हैं। ये सभी पैसा कमाने की इच्छा रखते हैं ताकि, भविष्य में जी सकें।	1
	(ग) शिक्षाविद् सूसर स्ट्रॉड को भारत में कई मुश्किल सवालों का सामना करना पड़ा।	1
	(घ) सूसन युवाओं की ऊर्जा का इस्तेमाल एक रणनीति के तहत राष्ट्रीय विकास, लोकतंत्र को बढ़ावा देने और बेरोजगारी की समस्या से निपटने के लिए करती है।	1
	(ङ) अफ्रीका में बेरोजगार युवाओं को अश्वेतों के इलाके में कम कीमत के मकान बनाने के कार्यक्रम से जोड़ा गया। इससे इन्होंने भवन निर्माण के गुर सीखे तथा टीम के रूप में काम करना सीखा।	1
	(च) युवाओं को सेवा संबंधी कार्यक्रमों के माध्यम से उपयोगी परियोजनाओं से जोड़ा जा सकता है तथा इसके एवज में इन्हें कुछ पैसा भी दिया जा सकता है।	1
	(छ) अमेरिका में युवाओं ने ज़्यादातर राष्ट्रीय उद्यानों का सृजन लाखों की संख्या में पेड़ लगा कर किया।	1

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	(ज) 'अमेरिका' के जरिए हर साल 75 हजार युवाओं को रोज़गार दिया जाता है। इन युवाओं की आयु बीस से तीस साल तक होती हैं।	1
	(झ) ज़्यादा युवाओं की ज़िन्दगी को प्रभावित करने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा जन संसाधनों की व्यवस्था करनी होगी।	1
	(ञ) छात्रवृत्ति - कक्षा दसवीं से प्रथम आने पर मेरे छोटे भाई को दिल्ली सरकार ने छात्रवृत्ति दी। विकासशील - विकासशील देश भी आगे बढ़ने की प्रतिस्पर्धा में लगे हुए हैं।	2
	(त) पर्यायवाची (दो-दो) - अमीर - धनी, धनाढ्य अतिथि - मेहमान, आगन्तुक	2
	(थ) विलोम शब्द - विपन्न - सम्पन्न न्यूनतम - अधिकतम	1
	(द) बेरोजगारी उपसर्ग - बे प्रत्यय - ई	1
	खंड-ख	
प्र.3	किसी एक विषय पर निबंध अपेक्षित है -	**5**
	(क) भूमिका और उपसंहार	2
	(ख) विषय वस्तु (कम से कम तीन प्रमुख बिन्दुओं पर विमर्श)	2
	(ग) भाषा की सफाई एवं समग्र भाव	1
प्र.4	पत्र-लेखन किसी एक विषय पर अपेक्षित है -	**5**
	(क) प्रारंभ एवं अंत की औपचारिकताएँ	2
	(ख) प्रश्नानुरूप विषय-वस्तु	2
	(ग) भाषा की सफाई, सुन्दरता और समग्र भाव	1

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
प्र.5	**(अ) सभी के संक्षिप्त उत्तर अपेक्षित हैं -**	
	(क) 'पेज थ्री' पत्रकारिता का तात्पर्य ऐसी पत्रकारिता से हैं जिसमें फैशन, अमीरों की बड़ी-बड़ी पार्टियों, महफिलों तथ लोकप्रिय लोगों के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है। यह सामान्य तथा समाचार पत्र के पृष्ठ तीन पर प्रकाशित होती है।	1
	(ख) महत्वपूर्ण, लोकप्रिय लेखकों के लेखों की नियमित श्रृंखला को स्तंभ लेखन कहा जाता है। इसमें लेखक के विचार अभिव्यक्त होते हैं।	1
	(ग) समाचार माध्यमों में किसी समाचार को प्रकाशित या प्रसारित होने के लिए पहुँचने की आखिरी समय-सीमा को डेड लाइन कहा जाता है।	1
	(घ) पत्रकारीय लेखन में पत्रकार पाठकों, दर्शकों व श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, जब कि साहित्यिक-सृजनात्मक लेखन में चिंतन के जरिए नई रचना का उद्‌भव होता है।	1
	(ङ) फीचर लेखन की भाषा सरल, रूपात्मक, आकर्षक व मन को छूने वाली होनी चाहिए।	1
	(आ) (1) विषय पर सम्यक् चिंतन	5
	(2) भाषा, सहज, सरल व रोचक	2
	(3) उपसंहार	2
प्र.6	**फीचर-लेखन**	**5**
	(क) प्रारम्भ और समापन	2
	(ख) प्रभावी प्रस्तुति	2
	(ग) उपयुक्त भाषा	1
	खंड-ग	
प्र.7	**कोई एक पद्यांश के उत्तर अपेक्षित हैं-**	
	(क) कवि - हरिवंश राय बच्चन कविता - आत्म परिचय	1
	(ख) क्योंकि दोनों (कवि और संसार) अलग-अलग प्रवृत्तियों के हैं। कवि को संसार अपूर्ण लगता है और वह उसके अवसाद, दुख-दर्द में भी खुशी तलाश लेता है।	2
	(ग) कवि प्रेम की मादकता, उसके पागलपन को हर पल महसूस करता रहता है - मानो	**2½**

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	किसी ने उसके जीवन को प्रेम-स्पर्श देकर उसके मन की झंकृत कर दिया हो।	
	(घ) इससे यह अभिप्राय है कि संसार उन्हें ही आदर-सम्मान देता है जो संसार का गुणगान करते हैं, उनका सम्मान नहीं करता जो संसार की इच्छा से नहीं अपितु अपनी इच्छा से गीत गाते हैं।	**2½**
	अथवा	
	(क) कवि - श्री कुवँर नारायण	1
	कविता - बात सीधी थी पर	
	(ख) भाषा और बात में परस्पर संबंध है कई बार कवि अपनी बात को प्रभावी बनाने के लिए, तारीफ़ लिए पाने के लिए, भाषा का जाल बुनता है। फिर इसी जाल में फँसकर बात अपना अर्थ और स्वरूप खोकर टेढ़ी हो जाती है।	**2½**
	(ग) जिस बात को हम सीधी सरल भाषा में बोलकर अभिव्यक्त कर सकते हैं, उसके लिए पेचीदा शब्द जाल नहीं बुनना चाहिए। भाषा को सहज रूप से प्रयोग किया जाना चाहिए।	**2**
	(घ) भावार्थ कवि ने भाषा को जितना बनावटी ढंग से और उसे लाग-लपेट करने वाले शब्दों के साथ प्रयोग किया, उस पर उसे उतनी ही अधिक प्रशंसा मिल रही थी।	**2½**
प्र.8	**किसी एक काव्यांश के उत्तर अपेक्षित है-**	
	(क) किसान को खेती के अवसर नहीं मिलते, व्यापारी के पास व्यापार की कमी है, भिखारी को भीख नहीं मिलती और नौकर को नौकरी नहीं मिलती।	2
	(ख) वेद-पुराण में भी यही लिखा है कि भगवान श्री राम की महिमा अपार है उन कृपा दृष्टि पड़ने पर ही दरिद्रता दूर हो सकती है।	2
	(ग) दरिद्रता को दस मुख वाले रावण के समान बताया है क्योंकि वह भी रावण की तरह समाज के हर वर्ग को प्रभावित कर अपना अत्याचार चक्र चला रही है।	2
	अथवा	
	(क) विष्णु भगवान के अवतार भगवान श्री राम का मनुष्य के समान व्याकुल होना, आज के युग में जब लोग अपने भाइयों से झगड़ते रहते हैं, तो राम, लक्ष्मण और भरत का यह परस्पर अगाध प्रेम हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है।	
	(ख) दोनों भाइयों में परस्पर अगाध प्रेम था। श्री राम अनुज से बहुत लगाव रखते थे तथा दोनों में पिता-पुत्र का सा संबंध था। वहीं लक्ष्मण श्री राम का बहुत सम्मान करते थे।	
	(ग) भगवान श्री राम के अनुसार संसार के सब सुख भाई पर न्यौछावर किए जा सकते हैं। भाई के अभाव में जीवन व्यर्थ है और भाई जैसा कोई हो ही नहीं सकता। आज के युग में यह सीख अनेक सामाजिक कष्टों से मुक्त करवा सकती है।	

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
प्र.9	**कोई दो उत्तर अपेक्षित हैं -**	
	(क) कविता की खेती में कवि ने कागज़नुमा खेत पर आई विचारों की आँधी का उल्लेख किया है। इसी के परिणामस्वरूप वह क्षण आया जब लेखन आरंभ हुआ। कल्पनाओं के प्रभाव से वह क्षण गौण हो गया और कविता का जन्म हुआ, जैसे खेत में रोपा हुआ बीज लुप्त होकर अंकुर और पौधे को जन्म देता है। इसके अतिरिक्त नवीन सृजन के लिए सृजनकर्ता को त्याग करना पड़ता है। कभी-कभी तो यह स्थिति भी होती है कि बलिदान के पश्चात नवनिर्माण आकार पाता है।	3
	(ख) फ़िराक की गज़ल के प्रथम दो शेर प्रकृति वर्णन को ही समर्पित हैं। प्रथम शेर में कलियों के खिलने की प्रक्रिया का भावपूर्ण वर्णन है। कवि इस शेर को नव रसों से आरंभ करता है। हर कोमल गाँठ के खुल जाने में कलियों का खिलना और दूसरा प्रतीकात्मक अर्थ भी है कि सब बंधनों से मुक्त हो जाना, संबंध सुधर जाना। इसके बाद कवि कलियों के खिलने से रंगों और सुगंध के फैल जाने की बात करता है। पाठक के समक्ष एक बिंब उभरता है सौंदर्य और सुगंध दोनों को महसूस करता है।	3
	(ग) 'बादल राग' शीर्षक पढ़ते ही हमारे मन-मस्तिष्क में बादलों की गर्जन सुनाई देने लगती है। कवि ने बादलों के गर्जन-तर्जन को क्रांति अर्थात् रणभेरी कहा है। बादल के आगमन से प्राणियों और परिवेश में जो कोलाहल सुनाई देता है, जो परिवर्तन आते हैं, उन्हे वर्णित किया है। वर्णन इतना सशक्त और नादमय है कि कविता में आरंभ से अंत तक बादल का स्वर सुनाई देता रहता है। इन सभी विशेषताओं के कारण 'बादल राग' शीर्षक ही सबसे उपयुक्त है।	
प्र.10	**किसी एक गद्यांश के उत्तर अपेक्षित है-**	
	(क) प्रस्तुत गद्यांश 'भक्तिन' पाठ से लिया गया है। इसे 'महादेवी वर्मा' ने लिखा है।	1
	(ख) भक्तिन का असली नाम लछमिन था। वह इस नाम को सबसे छिपाती थी, क्योंकि इस समृद्धि -सूचक नाम जैसा उसके जीवन में कुछ था ही नहीं। अत: उसे नाम पर शर्म महसूस होती होगी। इसीलिए वह किसी को अपना नाम नहीं बताती थी।	2
	(ग) हनुमान जी को सेवक-धर्म को सर्वाधिक निष्ठा से निभानेवाला रामभक्त माना जाता है। महादेवी जी भक्तिन के सेवा भाव से इतनी प्रभावित थी कि उन्होंने इसी सद्गुण के कारण भक्तिन को हनुमान जी के समकक्ष माना।	2½
	(घ) लक्ष्मी ने ईमानदारी से अपना नाम बताने और इस नाम को छिपाने की बात स्पष्ट रूप से बता दी थी। अत: उसकी कंठी-माला देखकर लेखिका ने उसे 'भक्तिन' नाम दे डाला।	2½
	अथवा	

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	(क) प्रस्तुत गद्यांश 'बाज़ार दर्शन' पाठ से लिया गया है, इसकी रचना जैनेंद्र कुमार जी ने की है।	1
	(ख) आदिकाल से ही स्त्री को महत्त्वपूर्ण माना गया है। खरीदारी के मूल में स्त्री (पत्नी) ही महिमा है और इस महिमा का प्रशंसक है उसका पति। वही इसकी प्रमुखता को प्रमाणित कर रहा है।	2
	(ग) स्त्री की आड़ में यह सच छिपाया जा रहा है कि इन महाशय के पास भरा हुआ मनीबैग है, पैसे की गर्मी है। ये इस गर्मी से अपनी एनर्जी साबित करने के लिए स्त्री को फिज़ूल खर्च करने देते हैं।	2½
	(घ) संयमी लोग 'पर्चेज़िंग पावर' के नाम अपनी शान नहीं दिखाते। वे धन को जोड़कर बुद्धि और संयम से अपनी पावर बनाते हैं। प्रसन्न रहते हैं और फ़िजूलखर्च नहीं करते।	2½
प्र.11	**कोई चार उत्तर अपेक्षित है -**	
	(क) यदि हम लेखक के स्थान पर होते तो जीजी के तर्क सुनकर वही करते जो लेखक ने किया, क्योंकि तर्क करने से तो जीजी शायद ही कुछ समझ पातीं, उनका दिल दुखता और हमारे प्रति उनका सद्भाव भी घट जाता। लेखक की भाँति हम भी जीजी के प्यार और सद्भाव को खोना नहीं चाहते। यही कारण है कि बहुत-सी बेतुकी परंपराएँ हमारे देश को जकड़े हुए हैं।	3
	(ख) ढोल को पहलवान ने अपना गुरु माना और एकलव्य की भांति हमेशा उसी की आज्ञा का अनुकरण करता रहा। ढोल को ही उसने अपने बेटों का गुरु बनाकर शिक्षा दी कि सदा इसको मान देना। ढोल लेकर ही वह राज-दरबार से रुखसत हुआ। ढोल बजा-बजा कर ही उसने अपने अखाड़े में बच्चों-लड़कों को शिक्षा दी, कुश्ती के गुर सिखाए। ढोल से ही उसने गाँववालों को भीषण दुख में भी संजीवनी शक्ति प्रदान की थी। ढोल के सहारे ही बेटों की मृत्यु का दुख पाँच दिन तक दिलेरी से सहन किया। और अंत में वह भी मर गया। यह सब देखकर लगता है कि उसका ढोल उसके जीवन का संबल, जीवन साथी ही था।	3
	(ग) चार्ली एक परित्यक्ता, दूसरे दर्जे की स्टेज अभिनेत्री के बेटे थे। उन्होंने भयंकर गरीबी और माँ के पागलपन से संघर्ष करना सीखा। साम्राज्य, औद्योगिक क्रांति, पूँजीवाद तथा सामंतशाही से मगरूर एक समाज का तिरस्कार सहन किया। इसी कारण मासूम चैप्लिन को जो जीवन मूल्य मिले, वे करोड़पति हो जाने के बाद भी अंत तक उनमें रहे। इन परिस्थितियों ने चैप्लिन में भीड़ का वह सच सदा जीवित रखा, जो इशारे से बतला देता है कि राजा भी उतना ही नंगा है, जितना मैं हूँ और हँस देता है। यही वह कलाकार है, जिसने विषम परिस्थितियों में भी हिम्मत से काम लिया।	3
	(घ) दोनों जगह के कस्टम अधिकारियों ने सफ़िया और उसकी नमक रूपी सद्भावना का सम्मान किया। केवल सम्मान नहीं, उसे यह भी जानकारी मिली कि उनमें से एक देहली को अपना	3

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	वतन मानते और दूसरे ढाका को अपना वतन कहते हैं। उन दोनों ने सफ़िया के प्रति पूरा सद्भाव दिखाया, कानून का उल्लंघन करके भी उसे नमक ले जाने दिया। अमृतसर वाले सुनील दास गुप्त तो उसका थैला उठाकर चले और उसके पुल पार करने तक वहीं पर खड़े रहे। उन अधिकारियों ने यह साबित कर दिया कि कोई भी कानून या सरहद प्रेम से ऊपर नहीं है।	
	(ङ) कालिदास और संस्कृत साहित्य ने शिरीष को बहुत कोमल माना है। कालिदास का कथन कि ''पदं सहते भ्रमरस्य पेलवं शिरीष पुष्पं न पुनः पतत्रिणाम्'' - शिरीष पुष्प केवल भौरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का बिलकुल नहीं। लेकिन इससे हजारी प्रसाद द्विवेदी सहमत नहीं है। उनका विचार है कि इसे कोमल मानना भूल है। इसके फल इतने मज़बूत होते है कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल-पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते, तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन पर जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है, तब भी शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं।	
प्र.12	**कोई दो उत्तर अपेक्षित हैं -**	
	(क) यद्यपि यशोधर बाबू की पत्नी अपने मूल संस्कारों से किसी भी तरह आधुनिक नहीं है, पर अब बच्चों का पक्ष लेने की मातृ सुलभ मजबूरी ने उन्हें आधुनिक बना दिया है। वे बच्चों के साथ खुशी से समय बिताना चाहती हैं। यशोधर बाबू का समय तो दफ़्तर में कट जाता है, लेकिन उनकी पत्नी क्या करे? अतः बच्चों का साथ देना ही उन्हें अच्छा लगता है। इसके अतिरिक्त उनके मन में इस बात का भी बड़ा मलाल था कि जब वे शादी होकर आई थीं, तो संयुक्त परिवार में उन पर बहुत कुछ थोपा गया और उनके पति यशोधर बाबू ने कभी भी उनका पक्ष नहीं लिया। युवावस्था में ही उन्हें बुढ़िया बना दिया गया। अब तो कम-से-कम बच्चों के साथ रहकर कुछ मन की कर लें।	3
	(ख) जो लड़के चौथी पास करके कक्षा में आए, लेखक उनमें से गली के दो लड़कों के सिवाए और किसी को जानता तक नहीं था। जिन लड़कों को वह कम अक्ल और अपने से छोटा समझता था, उन्हीं के साथ अब उसे बैठना पड़ रहा था। वह अपनी कक्षा में पुराना विद्यार्थी होकर भी अजनबी बनकर रह गया। पुराने सहपाठी तो उसे सब तरह से जानते समझते थे, मगर नए लड़कों ने तो उसकी धोती, उसका गमछा, उसका थैला आदि सब चीज़ों का मज़ाक उड़ाना आरंभ कर दिया। उसके मन में यह दुख भी था कि इतनी कोशिश करके पढ़ने का अवसर मिला और वह पास नहीं हो सका। इससे उसके आत्मविश्वास में भी कमी आ गई।	3
	(ग) ऐन की डायरी में युद्ध पीड़ितों की ऐसी सूक्ष्म पीड़ाओं का सच्चा वर्णन है जैसा अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। इससे पीड़ितों के प्रति हमारा मन करुणा और दया से भर जाता है। मन में हिंसा और युद्ध के प्रति घृणा का भाव आता है। हम सोचते हैं कि युद्ध, विजेता और पराजित पक्ष दोनों के लिए ही आघात और पीड़ा देनेवाला होता है। जीवन की मूलभूत	3

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	आवश्यकताओं के लिए भी नागरिकों के नन्हें बच्चों को कितना भटकना पड़ता है, यह पीड़ा की पराकाष्ठा है। यदि ऐन के साथ ऐसा बुरा व्यवहार न हुआ होता तो उसकी इस तरह अकाल मृत्यु न हुई होती। ऐन के परिवार के साथ जैसा हुआ वैसा न जाने कितने लोगों के साथ हुआ होगा। मन करता है कि वे लोग जो युद्ध का कारण बनते हैं वे ऐन की डायरी पढ़कर उसे अपने लिए अनुभव करके देखें।	
प्र.13	**कोई दो उत्तर अपेक्षित हैं -**	
	(क) कहा जा सकता है कि खुदाई में प्राप्त धातु और पत्थर की मूर्तियों, मृद-भांड, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति और पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुंदर मुहरें, उन पर बारीकी से उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, केश-विन्यास और आभूषण आदि उस समय के लोगों के सौंदर्य-बोध के परिचायक हैं। इस सबसे कहीं ज्यादा सौंदर्य-बोध कराती हैं वहाँ की सुघड़ लिपि। यदि गहराई से सोचें तो वहाँ की प्रत्येक सुघड़ योजना भी तो सौंदर्य-बोध का ही एक प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। ढकी हुई पक्की नालियाँ बनाने के पीछे गंदगी से बचाव का जो उद्देश्य था वह भी तो मूल रूप से स्वच्छता और सौंदर्य का ही बोध कराता है। आवास की सुंदर व्यवस्था हो या अन्न भंडारण, सभी के पीछे अप्रत्यक्ष रूप से सौंदर्य-बोध काम कर रहा है। अतः यह स्पष्ट है कि सिंधु सभ्यता में किसी भी अन्य व्यवस्था से ऊपर सौंदर्य-बोध ही था।	2
	(ख) हमारा लेखक प्रतिभा संपन्न था, मगर ढोर चराने और खेत में पानी देने तथा उपले बनाने में अपनी सारी शक्ति लगा रहा था। पढ़ने की इच्छा भीतर-ही-भीतर कुलबुलाती रहती थी। सभी उसे छोरे कहकर बुलाते। वह पशुओं का-सा जीवन जी रहा था। जब पढ़ने का अवसर मिला, तो उसने कविता पाठ में सबको पीछे छोड़ दिया। गणित के सवाल हल करने में भी उसने पूरी कक्षा को पीछे छोड़ दिया। सभी अध्यापक उसे आनंद कहकर पुकारते थे, उसे मानो अपनी स्वयं की पहचान मिल गई। उसके लगा उसे पंख निकल आए हैं। वह वह बहुत ही खुश रहने लगा। मनुष्य के जीवन में शिक्षा का बहुत महत्त्व है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य पशु के समान होता है। इस कहानी के कहानी के माध्यम से लेखक ने यही सीख दी है।	2
	(ग) इस पार्टी में यशोधर बाबू का व्यवहार बड़ा अजीब लगा। उन्हें पार्टी इंप्रापर लगी, क्योंकि उनके अनुसार ये सब अंग्रेज़ों के चोचले थे। अपनी पत्नी और पुत्री की ड्रेस इंप्रापर लगी, व्हिस्की इंप्रापर लगी, केक भी नहीं खाया, क्योंकि उसमें अंडा होता है। लड्डू भी नहीं खाया, क्योंकि शाम की पूजा नहीं की थी। पूजा में जाकर बैठ गए ताकि मेहमान चले जाएँ। उनका ऐसा व्यवहार बड़ा ही इंप्रापर लग रहा था। यदि वे कहीं किसी जगह पर भी ज़रा-सा समझौता कर लेते, तो शायद इतना बुरा न लगता।	2

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
प्र.14	**कोई एक उत्तर अपेक्षित है-**	
	(क) ऐन ने अपनी डायरी में अनेक कष्ट देने वाली बातों में सबसे प्रमुख अज्ञातवास को ही कहा है। किसी बस्ती में छिपकर रहना बड़ा ही कठिन काम है। 11 अप्रैल 1944 की जो घटना ऐन ने लिखी है उससे पता चलता है कि वे लोग अनेक कष्टदायी स्थितियों के साथ-साथ सेंध मारों से भी संघर्ष करते थे। उस दिन रात साढ़े नौ बजे पीटर ने जिस प्रकार ऐन के पिता को बाहर बुलाया उससे ऐन समझ गई कि दाल में कुछ काला है। सेंधमारों ने अपना काम शुरू कर दिया था। इसलिए ऐन के पिता, मिस्टर वान दान और पीटर लपककर नीचे पहुँचे। ऐन, मार्गोट उनकी माँ और मिसेज वान डी ऊपर डरे-सहमे से इंतज़ार करते रहे। एक ज़ोर के धमाके की आवाज़ से इन लोगों के होश उड़ गए। नीचे गोदाम में सन्नाटा था और पुरुष लोग वहीं सेंधमारों के साथ संघर्ष कर रहे थे। डर से काँपने पर भी ये लोग शांत बने रहे। तकरीबन 15 मिनट बाद ऐन के पिता सहमे हुए ऊपर आए और इन लोगों से बत्तियाँ बंद करके ऊपर छत पर चले जाने को कहा; अब ये लोग डरने की प्रतिक्रिया जताने की स्थिति में भी नहीं थे। सीढ़ियों के बीच वाले दरवाज़े पर ताला जड़ दिया गया। बुककेस बंद कर दिया गया, नाइट लैंप पर स्वेटर डाल दिया गया। पीटर अभी सीढ़ियों पर ही था कि ज़ोर के दो धमाके सुनाई दिए। उसने नीचे जाकर देखा कि गोदाम की तरफ का आधा भाग गायब था। वह लपककर होम गार्ड को चौकन्ना करने भागा। मिस्टर वान ने समझदारी दिखाते हुए शोर मचाया 'पुलिस! पुलिस' यह सुनकर सेंधमार भाग गए और गोदाम के फट्टे फिर से लगा दिए गए। लेकिन वे कुछ ही मिनट में लौट आए और फिर से तोड़ा-फोड़ी शुरू हो गई। उस डरावनी रात में बड़ी मुश्किल से पुरुषों ने संघर्ष करके जान बचाई।	5
	(ख) सिंधु-सभ्यता की खुदाई में मिली अनेक वस्तुओं को अजायबघर में रखा गया है। स्थानीय अजायबघर में बहुत कम वस्तुओं को रखा गया है। अधिकांश महत्त्वपूर्ण चीज़ें कराची, लाहौर, दिल्ली और लंदन में हैं। यों अकेले मुअनजो-दाड़ों की खुदाई में निकली पंजीकृत चीज़ों की संख्या पचास हज़ार से ज़्यादा है, जिनमें से प्रत्येक सिंधु सभ्यता की उत्कृष्टता की मिसाल है। काले भूरे चित्र, चौपड़ की गोटियाँ, दीये, माप-तौल के पत्थर, ताँबे का आईना, मिट्टी की बैलगाड़ी, अन्य कई प्रकार के खिलौने, दो पाटनवाली चक्की, कंघी मिट्टी के कंगन, रंग-बिरंगे पत्थर के हार और पत्थर के औज़ार। अजायबघर में तैनात चौकीदार ने बताया कि पहले कुछ सोने के आभूषण भी थे जो चोरी हो गए। प्रत्येक वस्तु देखकर दर्शक हैरत में पड़ जाते हैं। काले पड़ गए गेहूँ, ताँबे और काँसे के बरतन, मुहरें, वाद्य, चाक पर बने विशाल मृद भांड, अनेक लिपि चिह्न साक्षर सभ्यता के प्रमाण हैं। कुएँ और चाक पर बने बरतनों के अतिरिक्त सब कुछ चौकोर है- बस्तियाँ, कुंड, चौपड़, ठप्पेदार मोहरें, गोटियाँ, तौलने के बाट आदि। सोने की सुइयाँ संभवत: कशीदेकारी के काम आती होगी। सबसे प्रसिद्ध दाढ़ीवाले नरेश की	

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	मूर्ति जिसके बदन पर आकर्षक गुलकारीवाला दुशाला भी है, कुछ हाथी दाँत और ताँबे की सुइयाँ भी मिली हैं। खुदाई में प्राप्त नर्तकी की मूर्ति अपने-आप में एक अद्‌वितीय रचना है। प्रसिद्‌ध इतिहसकारों ने इसे संसार की तत्कालीन सभ्यताओं की सर्वश्रेष्ठ रचना माना है और कहा है कि इससे उत्तम और कुछ हो ही नहीं सकता।	

सी.बी.एस.ई. प्रतिदर्श प्रश्नपत्र-2

हिंदी - केन्द्रिक

कक्षा - बारहवीं

समयः 3 घंटे **पूर्णांक - 100**

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र के चार खंड है - 'क', 'ख', 'ग', 'घ'। सभी प्रश्नों को क्रमानुसार कीजिए।

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खंड-क	
प्र.1	**निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -** **(1X5)** 1. मनमोहनी प्रकृति की जो गोद में बसा है। सुख स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है? जिसके चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है। जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है? 2. नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं। सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है? जिसके बड़े रसीले, फल कंद, नाज, मेवे। सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन-सा है? 3. जिसके सुगंध वाले, सुंदर प्रसून प्यारे। दिन-रात हँस रहे हैं, वह देश कौन-सा है? मैदान, गिरि, वनों में, हरियालियाँ महकतीं। आनंदमय जहाँ है, वह देश कौन-सा है? 4. जिसकी अनंत वन से धरती भरी पड़ी है। संसार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है? सब से प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी। जगदीश का दुलारा, वह देश कौन-सा है?	**5**

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(क) मनमोहिनी प्रकृति की गोद में कौन-सा देश बसा हुआ है और वहाँ कौन-सा सुख प्राप्त होता है?	1
	(ख) भारत की नदियों की क्या विशेषता है?	1
	(ग) भारत के फूलों का स्वरूप कैसा है?	1
	(घ) जगदीश का दुलारा देश भारत संसार का शिरोमणि कैसे है?	1
	(ङ) काव्यांश का सार्थक एवं उपयुक्त शीर्षक लिखिए।	1
प्र.2	**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -**	
	हमारे अंग्रेजीदाँ दोस्त मानें या न मानें मैं तो यही कहूँगा कि गुल्ली-डण्डा सब खेलों का राजा है। अब कभी लड़कों को गुल्ली-डण्डा खेलते देखता हूँ, तो जी लोट-पोट हो जाता है कि इनके साथ जाकर खेलने लगूँ। न लॉन की जरूरत, न कोर्ट की, न नेट की, न थापी की। मजे से किसी पेड़ की एक टहनी काट ली, गुल्ली बना ली, और दो आदमी भी आ गए; तो खेल शुरू हो गया। विलायती खेलों में सबसे बड़ा ऐब है कि उनके सामान महँगे होते हैं। जब तक कम से कम एक सैकड़ा न खर्च कीजिए, खिलाड़ियों में शुमार नही हो सकता। यह गुल्ली-डण्डा है कि बिना हर्र-फिटकरी के चोखा रंग देता है; पर हम अंग्रेजी चीज़ों के पीछे ऐसे दीवाने हो रहे हैं कि अपनी सभी चीजों से अरूचि हो गई है। हमारे स्कूलों में हरेक लड़के से तीन-चार रूपए सलाना केवल खेलने की फीस ली जाती है। किसी को यह नहीं सूझता कि भारतीय खेल खिलाएँ; जो बिना दाम-कौड़ी के खेले जाते हैं। अंग्रेजी खेल उनके लिए है, जिनके पास धन है। गरीब लड़कों के सिर क्यों यह व्यसन मढ़ते हो। ठीक है, गुल्ली से आँख फूट जाने का भय रहता है। तो क्या क्रिकेट से सिर फूट जाने, तिल्ली फट जाने, टाँग टूट जाने का भय नहीं रहता? अगर हमारे माथे में गुल्ली का दाग आज तक बना हुआ है, तो हमारे कई दोस्त ऐसे भी हैं, जो थापी को बैसाखी से बदल बैठे । खैर, यह अपनी-अपनी रूचि है। मुझे गुल्ली ही सब खेलों से अच्छी लगती है और बचपन की मीठी स्मृतियों में गुल्ली ही सबसे मीठी है। वह प्रात: काल घर से निकल जाना, वह पेड़ पर चढ़कर टहनियाँ काटना और गुल्ली-डण्डे बनाना, वह उत्साह, वह लगन, वह खिलाड़ियों के जमघटे, वह पदना और पदाना, वह लड़ाई-झगड़े, वह सरल स्वभाव जिसमें छूत-अछूत, अमीर-गरीब का बिलकुल भेद न रहता था, जिसमें अमीराना चोंचलों की, प्रदर्शन की, अभिमान की गुंजाइश ही न थी, यह उसी वक्त भूलेगा जब घरवाले बिगड़ रहे हैं, पिताजी चौके पर बैठे वेग से रोटियों पर अपना क्रोध उतार रहे हैं, अम्माँ की दौड़ केवल द्वार तक है, लेकिन उनकी विचारधारा में मेरा अंधकारमय भविष्य टूटी हुई नौका की तरह डगमगा रहा है, और मैं हूँ कि पदाने में मस्त हूँ, न नहाने की सुधि है, न खाने की। गुल्ली है तो जरा-सी; पर उसमें दुनिया-भर की मिठाइयों कि मिठास और तमाशों का आनंद भरा हुआ है।	
	(क) गुल्ली डंडा किस तरह का खेल है?	1
	(ख) गुल्ली डंडा सारे खेलो का राजा क्यों है?	1

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(ग) भारतीय और अंग्रेजी खेलों में कैसा अंतर बताया गया है?	1
	(घ) गुल्ली डंडा की याद और किन बातों से जुड़ी है?	1
	(ड.) स्कूल में खेल के चुनाव के बारे में क्या कहा जा रहा है?	1
	(च) अकेले खेलने और समूह में खेलने में क्या अंतर होता है?	2
	(छ) आपके बचपन के खेल की क्या यादें है?	2
	(ज) गुल्ली डंडा और सामाजिक समानता में क्या संबंध है?	2
	(झ) गद्यांश में से अथवा अनन्य ता प्रत्यय से दो शब्द बनाइए।	1
	(ज) 'डगमगा' शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए।	1
	(ट) विलोम शब्द लिखिए - 'अंधकारमय', 'मस्त'।	1
	(ठ) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए ।	1
	खंड-ख	**25**
प्र.3	**निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए -**	**5**
	(क) आधुनिक भारत की पढ़ी लिखी नारी।	
	(ख) मनोरंजन के आधुनिक साधन।	
	(ग) विज्ञापन कला के लाभ।	
	(घ) हमारे त्योहार-हमारा गौरव	
प्र.4	**किसी दैनिक समाचार-पत्र के प्रधान संपादक को सुमन/गौरव की ओर से पत्र लिखिए, जिसमें पुस्तकों के मूल्यों में निरंतर होने वाली वृद्धि को लेकर चिंता प्रकट की गई हो।**	**5**
	अथवा	
	अपने नगर के महापौर को पत्र लिखकर नगर में नियमित एवं अपर्याप्त जल-वितरण से होने वाली असुविधाओं के प्रति उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए।	
प्र.5	**(अ) निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए -**	
	(क) उल्टा पिरामिड शैली क्या होती है?	1
	(ख) पत्रकारिता की भाषा में 'बीट' किसे कहते हैं?	1
	(ग) पत्रकारिता का मूल तत्व क्या है?	1
	(घ) फीचर लेखन और समाचार में क्या अन्तर है?	1

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(ङ) छह ककार कौन से हैं?	1
	(आ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर रिपोर्ट तैयार कीजिए	**5**
	(1) 'हमें झुग्गीवसियों के साथ एक कार्यशाला में भाग लेने एवं उनकी शोचनीय दशा देखनें का अवसर मिला'। इस पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।	
	(2) 'हर साल बच्चों की हत्या और अपहरण की घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं' अपने विद्यालय की पत्रिका के लिए शोध के उपरांत एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।	
प्र.6	**किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों का फीचर आलेख लिखिए -**	**5**
	(क) युवा पीढ़ी की इच्छाएँ ।	
	(ख) दूरदर्शन - कल और आज ।	
	खंड-ग	**55**
प्र.7	**निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -**	**8**
	मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ, मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ, है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ! मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ, सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ, जग भव-सागर तरने को नाव बनाए, मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।	
	(क) ये पंक्तियाँ किस कविता से ली गई है और इसके कवि कौन हैं?	**1**
	(ख) 'निज उर के उद्‌गार व उपहार' - से कवि का क्या तात्पर्य है?स्पष्ट कीजिए।	**2**
	(ग) कवि को संसार अच्छा क्यों नहीं लगता है?	**2½**
	(घ) संसार में कष्टों को सहकर भी खुशी का माहौल कैसे बनाया जा सकता है?	**2½**
	अथवा	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने बाहर भीतर इस घर, उस घर कविता के पंख लगा उड़ने के माने चिड़िया क्या जाने? कविता एक खिलना है फूलों के बहाने कविता का खिलना भला फूल क्या जाने! बाहर भीतर इस घर, उस घर बिना मुरझाए महकने के माने फूल क्या जाने? कविता एक खेल है बच्चों के बहाने बाहर भीतर यह घर, वह घर सब घर एक कर देने के माने बच्चा ही जाने।	
	(क) ये पंक्तियाँ किस कविता से ली गई हैं और इसके कवि कौन हैं?	**1**
	(ख) इन काव्यपंक्तियों में 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध हो सकता है?	**2**
	(ग) कवि 'कविता' और 'बच्चे' को समानांतर क्यों माना है?	**2½**
	(घ) कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' क्या होते हैं?	**2½**
प्र.8	**निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए - (2X3)**	**6**
	किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट, चाकर, चपल नट, चोर, चार चेटकी। पेटको पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि, अटत गहन-गन अहन अखेटकी।। ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी। 'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें, आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी।।	
	(क) इन काव्यपंक्तियों का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।	**2**
	(ख) पेट की आग को कैसे शाँत किया जा सकता है?	**2**
	(ग) 'पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि' - इस पंक्ति से कवि का क्या अभिप्राय है?	**2**
	अथवा हरषि राम भेंटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना।। तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई।। हृदयँ लाइ प्रभु भेंटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता।। कपि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा। जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा।। यह बृतांत दसानन सुनेऊ। अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ।। ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा। बिबिध जतन करि ताहि जगावा।। जागा निसिचर देखिअ कैसा। मानहुँ कालु देह धरि बैसा।। कुंभकरन बूझा कहु भाई। काहे तव मुख रहे सुखाई।। कथा कही सब तेहिं अभिमानी। जेहि प्रकार सीता हरि आनी।। तात कपिन्ह सब निसिचर मारे। महा महा जोधा संघारे।। दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी। भट अतिकाय अकंपन भारी।। अपर महोदर आदिक बीरा। परे समर महि सब रनधीरा।।	
	(क) काव्यांश का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। (ख) इन पंक्तियों के आधार पर हनुमान की विशेषताएँ बताइए। (ग) रावण ने अपने भाई कुंभकरण को क्यों जगाया?इससे उसके बारे में क्या पता चलता है?	
प्र.9	**निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (3+3)**	**6**
	(क) **'किशोर और युवा वर्ग समाज का मार्गदर्शक है।' - 'पतंग'** कविता के आधार पर स्पष्ट कीजए। (ख) **'कैमरे में बंद अपाहिज'** शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(ग) **'छोटा मेरा खेत'** कविता में **'कागज़ का एक पन्ना'** और **'खेत'** में किस आधार पर समानता दर्शायी गई है?	
प्र.10	**निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -**	**8**
	पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावत: ईर्ष्यालु और संपत्ति की रक्षा में सतर्क विमाता ने उनके मरणांतक रोग समाचार तब भेजा, जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था। रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ न बताया। बहुत दिन से नैहर नहीं गई, सो जाकर देख आवे, यही कहकर और पहना-उढ़ाकर सास ने उसे विदा कर दिया। इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरों में जो पंख लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए। 'हाय लछमिन अब आई' की अस्पष्ट पुनरावृत्यिाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ उसे घर तक ठेल ले गई। पर वहाँ न पिता का चिह्न शेष था, न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था। दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई वह उस घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी। सास को खरी-खोटी सुनाकर उसने विमाता पर आया हुआ क्रोध शांत किया और पति के ऊपर गहने फेंक-फेंक कर उसने पिता के चिर विछोह की मर्मव्यथा व्यक्त की।	
	(क) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है? इसके रचनाकार कौन है?	**1**
	(ख) भक्तिन को उसके पिता की बीमारी का समाचार क्यों नहीं दिया गया?	**2**
	(ग) लछमिन (भक्तिन) की सास ने उससे पिता की मृत्यु का समाचार क्यों छिपाया?	**2½**
	(घ) पिता के घर पहुँचकर भी लछमिन बिना पानी पिए उलटे पैरों क्यों लौट गई?	**2½**
	अथवा	
	मैंने मन में कहा, ठीक। बाज़ार आमंत्रित करता है कि आओ मुझे लूटो। सब भूल जाओ, मुझे देखो। मेरा रूप और किसके लिए है? मैं तुम्हारे लिए हूँ? मैं तुम्हारे लिए हूँ। नहीं कुछ चाहते हो, तो भी देखने में क्या हरज़ है। अजी आओ भी। इस आमंत्रण में यह खूबी है कि आग्रह नहीं है, आग्रह तिरस्कार जगाता है। लेकिन ऊँचे बाज़ार का आमंत्रण मूक होता है और उससे चाह जगती है। चाह मतलब अभाव। चौक बाज़ार में खड़े होकर आदमी को लगने लगता है कि उसके अपने पास काफ़ी नहीं और चाहिए, और चाहिए। मेरे यहाँ कितना परिमित है और यहाँ कितना अतुलित है ओह!	
	कोई अपने को न जाने तो बाज़ार का यह चौक उसे कामना से विकल बना छोड़े। विकल क्यों, पागल। असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल कर मनुष्य को सदा के लिए यह बेकार बना डाल सकता है।	
	(क) प्रस्तुत गद्यांश के लेखक कौन हैं? इसे किस पाठ से लिया गया है?	**1**
	(ख) गद्यांश के आरंभ में कौन, किससे और क्या कह रहा है?	**2**

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(ग) चाह का मतलब अभाव क्यों कहा गया है?	**2½**
	(घ) बाज़ार के चौक के बारे में क्या बताया गया है?	**2½**
प्र.11	**निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए - (3X4)**	**12**
	(क) 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर जल और वर्षा के अभाव में गाँव की दशा का वर्णन कीजिए।	
	(ख) 'ढोलक में तो जैसे पहलवान की जान बसी थी।' - 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर इसे सिद्ध कीजिए।	
	(ग) चार्ली चैप्लिन ने दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण-व्यवस्था को कैसे तोड़ा है?- 'चार्ली चैप्लिन यानी हम सब' पाठ के आधार पर बताइए।	
	(घ) सिख बीबी के प्रति सफिया के आकर्षण का क्या कारण था? 'नमक' पाठ के आधार पर बताइए।	
	(ङ) शिरीष तरु के अवधूत रूप के कारण लेखक को किस महात्मा की याद आती है और क्यों? 'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर बताइए।	
प्र.12	**निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए - (2X3)**	**6**
	(क) यशोधर बाबू का अपने बच्चों के साथ कैसा व्यवहार था? 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर बताइए।	
	(ख) किस घटना से पता चलता है कि लेखक की माँ उसके मन की पीड़ा समझ रही थी? 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए।	
	(ग) ऐन की डायरी से उसकी किशोरावस्था के बारे में क्या पता चलता है? 'डायरी के पन्ने' कहानी के आधार पर लिखिए।	
प्र.13	**निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (2+2)**	**4**
	(क) सिंधु-सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।	
	(ख) 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश देने का प्रयास किया है?	
	(ग) लेखक का पाठशाला में विश्वास कैसे बढ़ा? 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए।	
प्र.14	**निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए -**	**5**
	(क) 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	(ख) 'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि ऐन फ्रैंक बहुत प्रतिभाशाली तथा परिपक्व थी?	

अंक योजना प्रतिदर्श प्रश्नपत्र-2

हिंदी - केन्द्रिक

कक्षा - बारहवीं

समयः 3 घंटे **पूर्णांक - 100**

प्र.सं.		उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
		खंड-क	
प्र.1	(क)	मनमोहिनी प्रकृति की गोद में भारत देश बसा हुआ है, यहाँ भारतवासियों को स्वर्ग के समान सुख की प्राप्ति होती है।	1
	(ख)	भारत की नदियों की विशेषता है कि इनका जल अमृतमयी है। अर्थात् भाारत की नदियों में जल के रूप में सुधा की धारा बहती है।	1
	(ग)	भारत के फूल बहुत ही प्यारे है सुंगधित और सुन्दर हैं तथा ये दिन-रात हँसते रहते हैं।	1
	(घ)	जगदीश का दुलारा देश भारत सबसे पहले इस संसार में सभ्य होने के कारण तथा यशस्वी बनने के कारण संसार का शिरोमणि देश है।	1
	(ङ)	शीर्षक : मनमोहिनी प्रकृति/प्रकृति की गोद में बसा भारत देश/संसार का शिरोमणि देश।	1
प्र.2	(क)	गुल्ली-डंडा एक सरल खेल है जिसमें एक डंडा, एक गुल्ली तथा दो व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।	1
	(ख)	गुल्ली-डंडा बिना किसी लागत के खेलने वालों को अत्यधिक आनंद प्रदान करने वाला खेल है। इसलिए वह सारे खेलों का राजा है?	1
	(ग)	अंग्रेजी खेलों के सामान अत्यधिक मँहगें होते हैं परन्तु भारतीय खेलों का सामान बहुत सस्ता होता है।	1
	(घ)	गुल्ली-डंडे की याद बचपन की अन्य बातें जैसे पेड़ पर चढ़कर टहनियाँ काटना, गुल्ली-डंडे बनाना, लड़ाई-झगड़े आदि से जुड़ी हुई है।	1
	(ङ)	स्कूल में ऐसे खेलों का चुनाव इस प्रकार करना चाहिए कि उनमें सभी वर्गो के छात्र हिस्सा ले सकें ।	1
	(च)	खेलने में दूसरों को पढ़ाने का आनन्द नहीं आता ।	2
	(छ)	प्रत्येक छात्र की अलग यादें होंगी।	2
	(ज)	गुल्ली-डंडा खेलते समय समाज में प्रचलित असमानताएँ जैसे अमीरी-गरीबी, छूत-अछूत आदि का भेद मिट जाता है।	2

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	(झ) भारतीयता, विविधता ।	1
	(ञ) अत्यधिक सकरे रास्ते से गुज़रते हुए उसके कदम डगमगाने लगे।	1
	(ट) प्रकाशमान, चिन्तामय	1
	(ठ) गुल्ली-डंडा ।	1
	खंड-ख	
प्र.3	**किसी एक विषय पर निबंध अपेक्षित है -**	**5**
	(क) भूमिका और उपसंहार	2
	(ख) विषय वस्तु (कम से कम तीन प्रमुख बिन्दुओं पर विमर्श)	2
	(ग) भाषा में सफाई, सुंदरता एवं समग्र भाव	1
प्र.4	**पत्र-लेखन किसी एक विषय पर अपेक्षित है -**	**5**
	(क) प्रारंभ एवं समापन	2
	(ख) प्रभावी प्रस्तुति	2
	(ग) उपयुक्त भाषा	1
प्र.5	**(अ)**	
	(क) उल्टा पिरामिड शैली समाचारों का एक ऐसा ढाँचा है, जिसमें आधार ऊपर और शीर्ष नीचे होता है। उल्टा पिरामिड-शैली में पहले इंट्रो, मध्य में बोडी तथा अंत में समाचार होता है।	1
	(ख) पत्रकारिता की भाषा में 'बीट' का अर्थ है - लेखन व रिपोर्टिंग का विशेष क्षेत्र।	1
	(ग) लोगों की जिज्ञासा की भावना ही पत्रकारिता का मूल तत्व है। अर्थात् जिज्ञासा का पल-पल बलवती होना ही मूल तत्व है।	1
	(घ) फीचर एक सृजनात्मक, सुव्यवस्थित तथा आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को जानकारी देने के साथ मनोरंजन व शिक्षित कराना होता है। जबकि समाचार में पाठकों को तात्कालिक घटनाक्रम से अवगत कराया जाता है।	1
	(ङ) छह प्रकार हैं - क्या, कौन, कहाँ, कब, क्यों और कैसे।	1
	(आ) (क) घटना का आँखों देखा वर्णन	2
	(ख) निष्पक्ष रिपोर्ट	2
	(ग) उपसंहार	1

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
प्र.6	**फीचर-लेखन**	**5**
	(क) प्रारंभ और समापन	2
	(ख) प्रभावी प्रस्तुति	2
	(ग) उपयुक्त भाषा	1
	खंड-ग	
प्र.7	किसी एक गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर दीजिए (2X4)	**8**
	(क) आत्म परिचय - कविता हरिवंशराय बच्चन - कवि	2
	(ख) अपने हृदय के भावों, अनुभूतियों और प्रेम की सौगातों को लेकर घूम रहा हूँ ।	2
	(ग) कवि के अनुसार संसार अपूर्ण है, अधूरा है अत: वह संसार के साथ घुलमिल नहीं पाता। उसें संसार बहुत ही झूठा व बनावटी लगता है। उसके सपनों की कसौटी पर पूरा नहीं उतरता ।	2
	(घ) संसार के कष्टों को सहते हुए हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि रोकर सहें या हँसकर, कष्ट तो सहने ही है फिर क्यों न हँसते हुए जीवन बिताएँ।	2
	अथवा	
	(क) कवि-श्री कुँवर नारायण कविता-कविता के बहाने	
	(ख) कविता के संबंध में उड़ने का अर्थ है-कल्पना की उड़ान अर्थात् सोच की उड़ान, विचारों की उड़ान ही कविता है। 'खिलने' शब्द को कविता के अर्थ में विकास से जोड़ा जाएगा। कविता विचारों और भावों की परिपक्वता का नाम है। जब हमारे विचार विकास पाते है, भावनाओं का ज्वार संयत हो जाता है, तब कविता रची जाती है। यही कविता में विकास का अर्थ है।	
	(ग) जिस प्रकार बच्चे के सपने असीम हैं, बच्चों के खेल का कोई अंत नहीं है, बच्चे की प्रतिभा, बच्चे में छिपी संभावना का कोई अंत नहीं हैं; वैसे ही कविता की कल्पनाएँ असीम हैं, कविता के खेल यानि कविता में किए जाने वाले प्रयोग असीम है। कविता प्रकृति, मनुष्य, जीव, निर्जीव, काल, इतिहास, भावी जीवन अनेक विषयों पर लिखी जा सकती है अर्थात् इसके खेल भी असीम है। कविता में भावों और रचनात्मकता का गुण वैसे ही जान फूँक देता है, जैसे बच्चे में कभी न थकने वाला, सदा कुछ-न कुछ करने वाला तत्व विद्यमान होता है।	
	(घ) एक पुष्प खिलता है, महकता है, अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करता है, लेकिन एक	

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	निश्चित समय के बाद उसकी आयु समाप्त हो जाती है, वह मुरझा जाता है। कविता में जो भाव और विचार हैं, वे सदा-सर्वदा यथावत बने रहते हैं। उनके मुरझाने की कोई समय सीमा नहीं होती। जैसे 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कविता पचास वर्ष पूर्व लिखी गई थी, मगर आज भी वह उसी भाव की व्यंजना करती है।	
प्र.8	**किसी एक काव्यंश के उत्तर अपेक्षित हैं -**	**6**
	(क) इस समाज में जितने भी प्रकार के काम हैं, वह सभी पेट की आग वशीभूत होकर किए जाते हैं। 'पेट की आग' विवेक नष्ट करने वाली है। ईश्वर की कृपा के अतिरिक्त कोई इस पर नियंत्रण नहीं पा सकता।	2
	(ख) पेट की आग भगवान राम की कृपा के बिना नहीं बुझ सकती है। अर्थात् राम की कृपा ही वह जल है, जिससे इस आग का शमन हो सकता है।	2
	(ग) अर्थात् सभी पेट का गुण पढ़कर काम करते हैं, सभी पेट की भूख मिटाने के लिए काम करते हैं।	2
	अथवा	
	(क) राम भक्त हनुमान की बहादुरी व कर्मठता का वर्णन है तथा साथ ही अहंकारी रावण की हताशा व दुख का वर्णन किया है।	
	(ख) हनुमान जी की वीरता और कर्मनिष्ठा ऐसी है कि वे दुख में व्याकुल नहीं होते और हर्ष में कर्तव्य नहीं भूलते, बैठकर रोने के स्थान पर संजीवनी लाए और काम होते ही वैद्य को यथास्थान पहुँचाया। सत्य के पक्ष में जो कुछ भी होता है, वह असत्य के लिए कष्ट का कारण बनता है। राम का हर्ष ही रावण का शोक है।	
	(ग) लंबे समय से सोए हुए भाई को रावण अपने दुख और अहंकार से अवगत करवा रहा है। इससे ज्ञात होता है। कि अहंकारी को सदैव नीचा ही देखना पड़ता है।	
प्र.9	**कोई दो उत्तर अपेक्षित हैं -** **(3X2)**	**6**
	(क) किशोर और युवा अवस्था' एक ऐसी अवस्था है। जिसमें क्षमता और इच्छाशक्ति उफ़ान पर होती है। ये स्वयं अपना लक्ष्य निर्धारित करते हैं और उसको पाने की हर संभव कोशिश करते है। इनकी नन्हीं आँखों में दूर गगन की ऊँचाइयों को पाने के सपने होते हैं। डॉ०ए०पी०जे० अब्दुल कलाम का कहना है-'वे बच्चों की आँखों में महाशक्ति भारत की नींव देखते हैं'। अत: हमें बच्चों से सलाह लेनी चाहिए, उनकी इच्छा से, उनकी क्षमता से लाभ उठाना चाहिए। बच्चे हमारा भविष्य उज्ज्वल बनाते हैं। देश की बागडोर भी बच्चों के हाथों में (युवा वर्ग) आ जाए, तो अनेक समस्याएँ समाप्त हो जाएँगी।	3

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	(ख) प्रस्तुत कविता का शीर्षक अपने-आप में कविता के सारांश को समेटे हुए है। शीर्षक पढ़कर लगता है मानो किसी पशु को पिंजरे में बंद करके रखा गया है और दर्शक उसे और उसकी गतिविधियाँ देखकर मनोरंजन करते रहे हैं। ठीक उसी भाव से यहाँ एक अपाहिज की किसी भी भाव अथवा मानवीय संवेदना का ध्यान किए बिना उसे एक मनोरंजक कार्यक्रम की भाँति प्रस्तुत किया जा रहा है। अत: 'कैमरे में बंद अपाहिज' एक सार्थक शीर्षक है।	3
	(ग) 'कागज़ का एक पन्ना' और 'खेत' दोनों ही सृजन की भूमि हैं। इन दोनों के बिना कविता और कृषि-दोनों कर्म नहीं हो सकते। पन्ना कविता की सृजन भूमि और भावों-विचारों की अभिव्यक्ति का आधार है। कागज़ के बगैर शब्दों का लेखन ही संभव नहीं हो सकता। ठीक इसी प्रकार खेत के अभाव में बीज का रोपण भी संभव नहीं, अत: अंकुरण और पौधे का विकास, फल-फूल आदि भी नहीं हो सकेंगे। जैसे कृषक दिन-रात एक करके फसल तैयार करता है, उसी प्रकार कवि का कर्म भी कोई आसान काम नहीं, वह भी कृषक की भाँति दिन-रात एक करके काव्य रचना करता है।	3
प्र.10	(क) प्रस्तुत गद्यांश 'भक्तिन' पाठ से लिया गया है। इसे महादेवी वर्मा जी ने लिखा है।	
	(ख) भक्तिन के पिता उसे अगाध प्रेम करते थे। इसी कारण विमाता ईर्ष्या करती थी। उसे यह डर था कि भक्तिन आई तो कहीं उसके पिता अपनी संपत्ति उसके नाम न कर दें। इसी भय और द्वेष के कारण विमाता ने उसे पिता की बीमारी की सूचना नहीं दी।	
	(ग) लछमिन की सास ने सोचा कि पिता की लाड़ली लछमिन बहुत रोना-धोना मचाएगी, इससे घर में अपशगुन का बखेड़ा फैलेगा। इसी झंझट से बचने के लिए उसने लछमिन को पिता की मृत्यु की सूचना नहीं दी।	
	(घ) लछमिन तो उत्साह से भर कर पिता के घर आई थी। स्नेही पिता से मिलने की खुशी से उसका मन प्रफुल्लित था। लेकिन जैसे ही उसने जाना कि पिता की मृत्यु भी हो चुकी और उसे सूचित भी नहीं किया गया, अन्यथा बीमार पिता से मिल तो लेती; विमाता की सारी चाल समझते ही दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई लछमिन पानी भी बिना पिए ही लौट गई।	
	अथवा	
	(क) प्रस्तुत गद्यांश श्री जैनेंद्र ने लिखा है। इसे 'बाज़ार दर्शन' पाठ से लिया गया है।	
	(ख) गद्यांश के आरंभ में बाज़ार ग्राहक से कह रहा है कि आओ मुझे लूटो। सब भूल जाओ, मुझे देखो। मेरा रूप और किसके लिए है? मैं तुम्हारे लिए हूँ।	
	(ग) चाह का अर्थ है इच्छा, जो बाज़ार के मूक आमंत्रण से हमें अपनी ओर आकर्षित करती है और हम भीतर महसूस करके सोचते हैं कि आह! कितना अधिक है और मेरे यहाँ कितना कम है। इसलिए चाह अर्थात् अभाव।	

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	(घ) बाज़ार का चौक हमें विकल, पागल कर सकता है। असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल मनुष्य को सदा के लिए बेकार कर देता है।	
प्र.11	**कोई चार उत्तर अपेक्षित है -**	
	(क) गली-मुहल्ला, गाँव-शहर हर जगह लोग गरमी से भुन-भुन कर त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रहे थे। जेठ मास भी अपना ताप फैलाकर जा चुका था और अब तो आषाढ़ के भी पंद्रह दिन बीत चुके थे। कुएँ सूखने लगे थे, नलों में पानी नहीं आता था। खेत की माटी सूख-सूख कर पत्थर हो गई थी। पपड़ी पड़ कर अब खेतों में दरारें पड़ गई थीं। झुलसा देनेवाली लू चलती थी। ढोर-ढंगर प्यास से मर रहे थे, पर प्यास बुझाने के लिए पानी नहीं था। निरुपाय से ग्रामीण पूजा पाठ में लगे थे। अंत में इंदर सेना भी निकल पड़ी थी।	3
	(ख) लुट्टन सिंह जब जवानी के जोश में आकर चाँद सिंह नामक मँजे हुए पहलवान को ललकार बैठा, तो सारा जन समूह, राजा और पहलवानों का समूह आदि की यह धारणा थी कि यह कच्चा किशोर जिसने कुश्ती कभी सीखी नहीं है, पहले दाँव में ही ढेर हो जाएगा। लुट्टन सिंह की नसों में बिजली और मन में जीत का जज़्बा उबाल खा रहा था। उसे किसी की परवाह न थी। हाँ, ढोल की थाप में उसे एक-एक दाँव-पेंच का मार्गदर्शन जरूर मिल रहा था। उसी थाप का अनुसरण करते हुए उसने 'शेर के बच्चे' को खूब धोया, उठा-उठा कर पटका और हरा दिया। जीत के लिए सारी दुनिया विरोध में और मात्र ढोल ही उसके साथ था। अतः जीतकर वह सबसे पहले ढोल के पास दौड़ा, उसे प्रणाम किया।	3
	(ग) चार्ली की फ़िल्में बच्चे-बूढ़े, जवान, वयस्कों सभी में समान रूप से लोकप्रिय हैं। यह चैप्लिन का चमत्कार ही है कि उनकी फ़िल्मों को पागलखाने के मरीज़ों, विकल मस्तिष्क लोगों से लेकर आइंस्टाइन जैसे महान प्रतिभावाले व्यक्ति तक एक स्तर पर कहीं अधिक सूक्ष्म रसास्वाद के साथ देख सकते हैं। इसलिए ऐसा कहा जाता है कि हर वर्ग में लोकप्रिय इस कलाकार ने फ़िल्म कला को लोकतांत्रिक बनाया और दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण व्यवस्था को तोड़ा। कहीं-कहीं तो भौगोलिक सीमा, भाषा आदि के बंधनों को भी पार करने के कारण इन्हें सार्वभौमिक कलाकार कहा गया है।	3
	(घ) जब सफ़िया ने सिख बीबी को देखा, तो वह हैरान रह गई। बीबी का वही चेहरा था, जैसा सफ़िया की माँ का था। बिलकुल वही कद, वही भारी शरीर, वही छोटी-छोटी चमकदार आँखें, जिनमें नेकी, मुहब्बत और रहमदिली की रोशनी जगमगा रही थी। चेहरा खुली किताब जैसा था। बीबी ने वैसी ही सफ़ेद मलमल का दुपट्टा ओढ़ रखा था, जैसा सफ़िया की अम्मा मुहर्रम में ओढ़ा करती थीं, इसीलिए सफ़िया बीबी की तरफ बार-बार बड़े प्यार से देखने लगी उसकी माँ तो बरसों पहले मर चुकी थीं, पर यह कौन? उसकी माँ जैसी है, इतनी समानता कैसे है? यही सोचकर सफ़िया उनके प्रति आकर्षित हुई।	3
	(ङ) शिरीष के अवधूत रूप के कारण लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी को हमारे राष्ट्रपिता महात्मा	3

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	गाँधी की याद आती है। शिरीष तरु अवधूत है, क्योंकि वह बाह्य परिवर्तन-धूप, वर्षा, आँधी, लू सब में शांत बना रहता है और पुष्पित पल्लवित होता रहता है। इसी प्रकार महात्मा गाँधी भी मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर के बवंडर के बीच स्थिर रह सके थे। इस समानता के कारण लेखक की गांधी जी की याद आ जाती है, जिनके व्यक्तित्व ने समाज को सिखाया कि आत्म बल, शारीरिक बल से कहीं ऊपर की चीज़ है। आत्मा की शक्ति है। जैसे शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल, इतना कठोर हो सका है, वैसे ही महात्मा गाँधी भी कठोर-कोमल व्यक्तित्व वाले थे। यह वृक्ष और वह मनुष्य दोनों ही अवधूत हैं।	
प्र.12	**कोई दो उत्तर अपेक्षित हैं -**	
	(क) यशोधर बाबू डेमोक्रेट बाबू थे। वे हरगिज़ यह दुराग्रह नहीं करना चाहते थे कि बच्चे उनके कहे को पत्थर की लकीर मानें। अत: बच्चों को अपनी इच्छा से काम करने की पूरी आज़ादी थी। यशोधर बाबू तो यह भी मानते थे कि आज बच्चों को उनसे कहीं ज़्यादा ज्ञान है। मगर एक्सपीरिएंस का कोई सब्सटीट्यूट नहीं होता। अत: वे सिर्फ इतना भर चाहते थे कि बच्चे जो कुछ भी करें, उनसे पूछ ज़रूर लें। इस तरह हम यह कह सकते हैं कि वे स्वयं चाहे जितने पुराणपंथी थे, बच्चों को स्वतंत्र जीवन जीने देते थे।	3
	(ख) लेखक पढ़ना चाहता था और उसके पिता उसे पढ़ाने के बजाए उससे खेत का काम, पशु चराने का काम कराना चाहते थे। पिता ने अपनी इच्छा को ध्यान में रखकर ही लेखक की पढ़ाई छुड़वा दी थी। इसी बात से लेखक बहुत ही परेशान रहता था। उसका मन दिन-रात अपनी पढ़ाई जारी रखने की योजनाएँ बनाता रहता था। इसी योजना के अनुसार लेखक ने अपनी माँ से दत्ता जी राव सरकार के घर चलकर उनकी मदद से अपने पिता को राजी करने की बात कही। माँ ने लेखक का साथ देने की बात को तुरंत स्वीकार कर लिया। अपने बेटे की पढ़ाई के बारे में वह दत्ता जी राव से जाकर बात भी करती है और पति से इस बात को छिपाने का आग्रह भी करती है। इससे स्पष्ट होता है कि वह लेखक के मन् की पीड़ा को समझाती थी।	3
	(ग) ऐन की डायरी किशोर मन की ईमानदार अभिव्यक्ति है। इससे पता लगता है कि किशोरों को अपनी चिट्ठियों और उपहारों से अधिक लगाव होता है। वे जो कुछ भी करना चाहते हैं उसे बड़े लोग नकारते रहते हैं, जैसे ऐन का केश-विन्यास जो फिल्मी सितारों की नकल करके करके बनाया जाता था। इस अवस्था में बड़ों द्वारा बात-बात पर कमी निकाली जाती है या किशोरों को टोका जाता है। यह बात किशोरों को बहुत ही नागवार गुज़रती है। किशोर बड़ों की अपेक्षा अधिक ईमानदारी से जीते हैं। इन्हें जीने के लिए सुंदर, स्वस्थ वातावरण चाहिए। किशोरावस्था में ऐन की भांति हम सभी अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।	

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
प्र.13	**कोई दो उत्तर अपेक्षित हैं -**	
	(क) सिंधु-सभ्यता के शहर मोहनजोदड़ों की व्यवस्था, साधन और नियोजन के विषय में खूब चर्चा हुई है। इस बात से सभी प्रभावित हैं कि वहाँ की अन्न भंडारण व्यवस्था, जल निकासी की व्यवस्था अत्यंत विकसित और परिपक्व थी। हर निर्माण बड़ी बुद्धिमानी के साथ किया गया था; यह सोचकर कि यदि सिंधु का जल बस्ती तक फैल भी जाए तो कम-से-कम नुकसान हो। इन सारी व्यवस्थाओं के बीच इस सभ्यता की संपन्नता की बात बहुत ही कम हुई है। वस्तुत: इनमें भव्यता का आडंबर है ही नहीं। व्यापारिक व्यवस्थाओं की जानकारी मिलती है, मगर सब कुछ आवश्यकताओं से ही जुड़ा हुआ है, भव्यता का प्रदर्शन कहीं नहीं मिलता। संभवत: वहाँ की लिपि पढ़ ली जाने के बाद इस विषय में अधिक जानकारी मिले।	2
	(ख) इस कहानी में 'पीढ़ी का अंतराल' सबसे प्रमुख है। यही मूल संवेदना है क्योंकि कहानी में प्रत्येक कठिनाई इसलिए आ रही है कि यशोधर बाबू अपने पुराने संस्कारों, नियमों व कायदों से बंधे रहना चाहते हैं और उनका परिवार, उनके बच्चे वर्तमान में जी रहे हैं जो ऐसा कुछ गलत भी नहीं है। यदि यशोधर बाबू थोड़े-से लचीले स्वभाव के हो जाते, तो उन्हें बहुत सुख मिलता और जीवन भी खुशी से व्यतीत करते।	2
	(ग) जब लेखक को वसंत पाटिल के साथ दूसरे लड़कों के सवाल जाँचने का काम मिला, तब उसकी वसंत से दोस्ती हो गई। अब ये दोनों एक-दूसरे की सहायता से कक्षा के अनेक काम निपटाने लगे। सभी अध्यापक लेखक को 'आनंदा' कहकर बुलाने लगे। यह संबोधन भी उसके लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण था। मानों पाठशाला में आने के कारण ही उसे स्वयं का नाम सुनने को मिला। 'आनंदा' की कोई पहचान बनी। एक तो वसंत की दोस्ती, दूसरा अध्यापकों का व्यवहार - इस कारण लेखक का अपनी पाठशाला में विश्वास बढ़ने लगा।	
प्र.14	**कोई एक उत्तर अपेक्षित है -**	**5**
	(क) 'अतीत में दबे पाँव' लेखक के वे अनुभव हैं, जो उन्हें सिंधु घाटी की सभ्यता के अवशेषों को देखते समय हुए थे। इस पाठ में अतीत अर्थात् भूतकाल में बसे सुंदर सुनियोजित नगर में प्रवेशकर लेखक वहाँ की एक-एक चीज़ से अपना परिचय बढ़ाता है, उस सभ्यता के अतीत में झाँककर वहाँ के निवासियों और क्रियाकलापों को अनुभव करता है। वहाँ की एक-एक स्थूल चीज़ से मुखातिब होता हुआ लेखक चकित रह जाता है। वे लोग कैसे रहते थे? यह अनुमान आश्चर्यजनक था। वहाँ की सड़कें, नालियाँ, स्तूप, सभागार, अन्न भंडार, विशाल स्नानागार, कुएँ, कुंड और अनुष्ठान गृह आदि के अतिरिक्त मकानों की सुव्यवस्था देखकर लेखक महसूस करता है कि जैसे अब भी वे लोग वहाँ हैं। उसे सड़क पर जाती हुई बैलगाड़ी से रुनझुन की ध्वनि सुनाई देती है। किसी खंडहर में प्रवेश करते हुए उसे अतीत	

प्र.सं.	उत्तर-संकेत / मूल्य-बिंदु	अंक
	के निवासियों की उपस्थिति महसूस होती है। रसोई घर की खिड़की से झाँकने पर उसे वहाँ पक रहे भोजन की गंध भी आती है। यदि इन लोगों की सभ्यता नष्ट न हुई होती तो ये पाँव प्रगति के पथ पर निरंतर बढ़ रहे होते और आज भारतीय उपमहाद्वीप महाशक्ति बन चुका होता। मगर दुर्भाग्य से ये प्रगति की ओर बढ़ रहे सुनियोजित पाँव अतीत में ही दबकर रह गए। इसलिए 'अतीत में दबे पाँव' शीर्षक पूर्णतः सार्थक और सटीक है। (ख) 'ऐन फ्रैंक की प्रतिभा और धैर्य का परिचय हमें उसकी डायरी से मिलता है। उसमें किशोरावस्था का उखड़ापन कम और सहज शालीनता अधिक थी। उसकी अवस्था में अन्य कोई भी होता तो विचलित एवं बेचैनी का आभास देता। ऐन ने अपने स्वभाव और अवस्था पर नियंत्रण पा लिया था। वह एक सकारात्मक, परिपक्व और सुलझी हुई सोच के साथ आगे बढ़ रही थी। उसमें कमाल की सहन शक्ति थी। अनेक बातें जो उसे बुरी लगती थीं, उन्हें वह शालीन चुप्पी के साथ बड़ों का सम्मान करने के लिए सहन कर जाती थी। पीटर के प्रति अपने अंतरंग भावों को भी वह सहेज कर केवल डायरी में व्यक्त करती थी। अपनी इन भावनाओं को वह किशोरावस्था में भी जिस मानसिक स्तर से सोचती थी वह वास्तव में सराहनीय है। परिपक्व सोच का ही परिणाम था कि वह अपने मन के भाव, उद्‌गार, विचार आदि डायरी में ही व्यक्त करती थी। यदि ऐन में ऐसी सधी हुई परिपक्वता न होती तो हमें युद्‌ध काल की ऐसी दर्द भरी दास्तान पढ़ने को नहीं मिल सकती थी।	

हिंदी (ऐच्छिक) कोड सं. 002

पाठ्यक्रम कक्षा- बारहवीं

2010

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
(क)	**अपठित बोध** (गद्यांश और काव्यांश बोध) (15+5)	20
(ख)	**रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन**	25
(ग)	**अंतरा** (भाग-2) : काव्य-भाग	20
	गद्य-भाग	20
	अंतराल (भाग-2)	15
	अधिकतम अंक	**100**
	(क) **अपठित बोध : (गद्यांश और काव्यांश बोध)**	**20**
1.	**गद्यांश बोध :** गद्यांश पर आधारित बोध, प्रयोग, रचनांतरण, शीर्षक, आदि पर लघूत्तरात्मक प्रश्न	15
2.	**काव्यांश बोध :** काव्यांश पर आधारित पाँच लघूत्तरात्मक प्रश्न	5
	(ख) **रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन : सृजनात्मक लेखन से संबंधित दो प्रश्न**	**25**
3.	निबंध / विकल्प	10
4.	कार्यालयी-पत्र / विकल्प	05
5.	**''अभिव्यक्ति और माध्यम'' के आधार पर व्यावहारिक लेखन पर दो प्रश्न** (5+5)	10
	पाठ्य पुस्तक (20+20)	**40**
	काव्य-भाग :	**20**
6.	सप्रसंग व्याख्या (दो में से एक)	8
7.	कविता के कथ्य पर दो प्रश्न / विकल्प (3+3)	6
8.	कविताओं के काव्य-सौंदर्य पर दो प्रश्न (3+3) / विकल्प	6

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	गद्य-भाग :	**20**
9.	सप्रसंग व्याख्या (दो में से एक)	8
10.	पाठों की विषय-वस्तु पर तीन में से दो प्रश्न (3+3)	6
11.	किसी एक कवि/लेखक का साहित्यिक परिचय	6
	पूरक पुस्तक :	**15**
12.	विषयवस्तु पर आधारित (चार में से तीन लघुत्तरात्मक प्रश्न)	9
13.	विषयवस्तु पर आधारित एक निबंधात्मक प्रश्न	6
	निर्धारित पुस्तकें	
	अतरा, अंतराल (भाग-दो) दो : अभिव्यक्ति और माध्यम - एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित।	
	पाठ्यक्रम-2009 में विशिष्ट परिवर्तन के.मा. शिक्षा बोर्ड/शैक्षणिक/परिपत्र/2008 दिनांक 22.05.2008, परिपत्र संख्या-21/08	
	टिप्पणी :	
	खंड-ख	
	व्यावहारिक लेखन पर दो प्रश्नों के प्रकार निम्नलिखित हैं :	
	• एक निबंधात्मक प्रश्न विकल्प सहित	5
	• पाँच लघुत्तरात्मक प्रश्न	5
	खड-ग (गद्य भाग)	
	• सप्रसंग व्याख्या दों में से एक	6
	• कवि परिचय एवं लेखक परिचय में विकल्प दिया जाएगा।	6
	• गद्यपाठों पर आधारित तीन में से दो विचारात्मक प्रश्न	8

प्रश्न पत्र प्रारूप-1

हिंदी ऐच्छिक

कक्षा- बारहवीं

समय - 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्रश्नों के प्रकार	अपठित बोध	लेखन	साहित्य	विशेष टिप्पणी
अति लघुत्तरात्मक प्रश्न	गद्यांश बोध 1(1) काव्यांश बोध 5(5)	अभिव्यक्ति और माध्यम 5(5)		पठन, अवबोध व लेखन कौशल
लघुत्तरात्मक प्रश्न	गद्यांश बोध 14(7)		कविताओं के अर्धबोध पर प्रश्न 6(2) काव्यांशों का काव्य सौंदर्य 6(2) पूरक पुस्तक के पाठों की विषय वस्तु पर प्रश्न 9(3)	अवबोध व लेखन कौशल पठन, लेखन, व अवबोधन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल
निबंधात्मक प्रश्न		पत्र लेखन 5(1) निबंध लेखन 10(1) अभिव्यक्ति और माध्यम 5(1)	काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या 8(1) गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या 6(1) गद्यांश पाठों की विषय वस्तु पर प्रश्न 8(2) कवि लेखन जीवन परिचय 6(1) पूरक पुस्तक के पाठों की विषयवस्तु प्रश्न 6(1)	अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल

नोट : प्रश्न संख्या कोष्ठक के भीतर और अंक कोष्ठक के बाहर है।

हिंदी ऐच्छिक

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र-1

कक्षा- बारहवीं

समय - 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खण्ड 'क'	20
1.	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**	15
	जो समाज को जीवन दे, उसे निर्जीव कैसे माना जा सकता है? तालाबों में, जलस्रोत में जीवन माना गया और समाज ने उनके चारों ओर अपने जीवन को रचा। जिसके साथ जितना निकट का संबंध, जितना स्नेह, मन उसके उतने ही नाम रख लेता है। देश के अलग-अलग राज्यों में, भाषाओं में, बोलियों में तालाब के कई नाम हैं। बोलियों के कोश में, अनेक व्याकरण के ग्रंथों में, पर्यायवाची शब्दों की सूची में तालाब के नामों का एक भरा-पूरा परिवार देखने को मिलता है। डिंगल भाषा के व्याकरण का एक ग्रंथ 'हमीर नाम-माला' तालाबों के पर्यायवाची नाम तो गिनता ही है, साथ ही उनके स्वभाव का भी वर्णन करते हुए, तालाबों को धरम सुभाव कहता है। सबको तालाब से जोड़कर देखने के लिए भी समाज में कुछ मान्यताएँ रही हैं। अमावस और पूनो, इन दो दिनों को कारज यानी अच्छे और वह भी सार्वजनिक कामों का दिन माना गया है। इन दोनों दिनों में निजी काम से हटने और सार्वजनिक कामों से जुड़ने का विधान रहा है। किसान अमावस और पूनो को अपने खेत में काम नहीं करते थे। उस समय का उपयोग वे अपने क्षेत्र के तालाब आदि की देखरेख व मरम्मत में लगाते थे। समाज में श्रम भी पूँजी है और उस पूँजी को निजी हित के साथ सार्वजनिक हित में भी लगाते थे। श्रम के साथ-साथ पूँजी का अलग से प्रबंध किया जाता रहा है। इस पूँजी की जरूरत प्राय: ठंड के बाद, तालाब में पानी उतर जाने पर पड़ती है। जब गरमी का मौसम सामने खड़ा होता है और यही सबसे अच्छा समय है, तालाब की किसी बड़ी टूट-फूट पर ध्यान देने का। वर्ष की बारह पूर्णिमाओं में से ग्यारह पूर्णिमाओं को श्रमदान के लिए रखा जाता रहा है पर पूस मास की पूनो पर तालाब के लिए धान या पैसा एकत्र किए जाने की परंपरा रही है। सार्वजनिक तालाबों में तो सबका श्रम और पूँजी लगती ही थी, निहायत निजी किस्म के तालाबों में भी सार्वजनिक स्पर्श आवश्यक माना जाता रहा है। तालाब बनने के बाद उस इलाके के सभी सार्वजनिक स्थलों से थोड़ी-थोड़ी मिट्टी लाकर तालाब में डालने का चलन आज भी मिलता है। तालाबों में प्राण है। प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव बड़ी धूमधाम से होता था। कहीं-कहीं तालाबों का पूरी विधि के साथ विवाह भी होता था। छत्तीसगढ़ में यह प्रथा आज भी जारी है। विवाह से पहले तालाब	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	का उपयोग नहीं हो सकता। न तो उससे पानी निकालेंगे और न उसे पार करेंगे। विवाह में क्षेत्र के सभी लोग, सारा गाँव पाल पर उमड़ आता है। आसपास के मंदिरों से मिट्टी लाई जाती है, गंगा जल आता है और इसी के साथ अन्य पाँच या सात कुँओं या तालाबों का जल मिलाकर विवाह पूरा होता है। इन तालाबों के दीर्घ जीवन का एक ही रहस्य था - ममत्व। यह मेरा है, हमारा है। ऐसी मान्यता के बाद रखरखाव जैसे शब्द छोटे लगने लगेंगे। घरमेल यानी सब घरों के मेल से तालाब का काम होता था। सबका मेल तीर्थ है। जो तीर्थ न जा सके, वे अपने यहाँ तालाब बना कर ही पुण्य ले सकते हैं। तालाब बनाने वाला पुण्यात्मा है, महात्मा है। जो तालाब बचाए, उसकी भी उतनी ही मान्यता मानी गई है। इस तरह तालाब एक तीर्थ है। यहाँ मेले लगते हैं। और इन मेलों में जुटने वाला समाज तालाब को अपनी आँखों में, मन में बसा लेता है। तालाब समाज के मन में रहा है और कहीं-कहीं तो उसके तन में भी। बहुत से वनवासी समाज गुदने में तालाब, बावड़ी भी गुदवाते हैं। गुदनों के चिह्नों में पशु, पक्षी, फल आदि के साथ-साथ सहरिया समाज में सीता बावड़ी और साधारण बावड़ी के चिह्न भी प्रचलित हैं। सहरिया शबरी को अपना पूर्वज मानते हैं। सीताजी से विशेष संबंध है। इसलिए सहरिया अपनी पिडलियों पर सीता बावड़ी बहुत चाव से गुदवाते हैं। जिसके मन में, तन में तालाब रहा हो, वह तालाब को केवल पानी के एक गड्ढे की तरह नहीं देख सकेगा। उसके लिए तालाब एक जीवंत परंपरा है, परिवार है और उसके कई संबंध, संबंधी हैं। तालाब का लबालब भर जाना भी एक बड़ा उत्सव बन जाता है। समाज के लिए इससे बड़ा और कौनसा प्रंसग होगा कि तालाब की अपरा चल निकलती है। भुज (कच्छ) के सबसे बड़े तालाब हमीरसर के घाट में बनी हाथी की एक मूर्ति अपरा चलने की सूचक है। जब जल इस मूर्ति को छू लेता तो पूरे शहर में खबर फैल जाती थी। शहर तालाब के घाटों पर आ जाता। कम पानी का इलाका इस घटना को एक त्यौहार में बदल देता। भुज के राजा घाट पर आते और पूरे शहर की उपस्थिति में तालाब की पूजा करते और पूरे भरे तालाब का आशीर्वाद लेकर लौटते। तालाब का पूरा भर जाना, सिर्फ एक घटना नहीं, आनंद है, मंगल सूचक है, उत्सव है, महोत्सव है। वह प्रजा और राजा को घाट तक ले आता था। कोई भी तालाब अकेला नहीं है। वह भरे-पूरे जल परिवार का एक सदस्य है। उसमें सबका पानी है और उसका पानी सबमें है - ऐसी मान्यता रखने वालों ने एक तालाब सचमुच ऐसा ही बना दिया था। जगन्नाथपुरी के मंदिर के पास बिंदुसागर में देश भर के हर जल स्रोत का नदियों और समुद्रों तक का पानी मिला है। दूर-दूर से, अलग-अलग दिशाओं से पुरी आने वाले भक्त अपने साथ अपने क्षेत्र का थोड़ा सा पानी ले आते हैं और उसे बिंदुसागर में अर्पित कर देते हैं। देश की एकता की परीक्षा की इस घड़ी में बिंदुसागर राष्ट्रीय एकता का सागर कहला सकता है। बिंदुसागर जुड़े भारत का प्रतीक है।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
क)	उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।	1
ख)	अमावस्या और पूर्णिमा के संबंध में लोगों की क्या मान्यता है?किसान इन दिनों में क्या करते हैं?	2
ग)	तालाब को तीर्थ क्यों माना गया है?	2
घ)	तन-मन के साथ तालाब से जुड़े व्यक्ति के लिए तालाब पानी का गड्ढा मात्र क्यों नहीं है?	2
ङ)	''तालाब का पूरा भर जाना सिर्फ एक घटना नहीं, महोत्सव है।'' कैसे?	2
च)	''कोई भी तालाब अकेला नहीं है'' - इस कथन पर टिप्पणी कीजिए।	2
घ)	लेखक ने बिंदुसागर को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक क्यों माना है?	2
ज)	तालाब के विवाह की विधि किस प्रकार पूरी की जाती है?इस विवाह का क्या महत्त्व है?	2
2.	**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-** चंचल पग दीपशिखा के धर गृह, मग, वन में आया वसंत! सुलगा फाल्गुन का सूनापन सौंदर्य शिखाओं में अनंत! सौरभ की शीतल ज्वाला से फैला उर-उर में मधुर दाह आया वसंत, भर पृथ्वी पर स्वर्गिक सुंदरता का प्रवाह! पल्लव-पल्लव में नवल रुधिर पत्रों में मांसल रंग खिला, आया नीली-पीली लौ से पुष्पों के चित्रित दीप जला! अधरों की लाली से चुपके कोमल गुलाब के गाल लजा आया, पंखुड़ियों को काले पीले धब्बों से सहज सजा!	**5**

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	कलि के पलकों में मिलन स्वप्न अलि के अंतर में प्रणय गान लेकर आया, प्रेमी वसंत आकुल जड़ चेतन स्नेह-प्राण! काली कोकिल! सुलगा उर से स्वरमयी वेदना का अंगार, आया वसंत, घोषित दिगंत करती, भर पावक की पुकार!	
क)	इस कविता में किस ऋतु का वर्णन है?यह कहाँ-कहाँ दिखाई दे रहा है?	1
ख)	'सुलगा फागुन का सूनापन' - आशय स्पष्ट कीजिए।	1
ग)	इस ऋतु ने फूल-पत्तों के स्वरूप में क्या-क्या परिवर्तन ला दिया है?	1
घ)	प्रेमी के रूप में वसंत क्या कर रहा है?	1
ङ)	इस कविता में प्रकृति-चित्रण की कौन-सी विशेषता आपको आकर्षित करती है?	1
	अथवा	
	हे ग्राम-देवता! नमस्कार सोने-चाँदी से नहीं किन्तु तुमने मिट्टी से किया प्यार! हे ग्राम-देवता! नमस्कार! जन कोलाहल से दूर कहीं एकाकी सिमटा-सा निवास, रवि-शशि का उतना नहीं कि जितना प्राणों का होता प्रकाश, श्रम वैभव के बल पर करते हो जड़ में चेतन का विकास। दानों-दानों से फूट रहे	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	सौ-सौ दानों के हरे हास, यह है न पसीने की धारा, यह गंगा की है धवल धार, हे ग्राम-देवता, नमस्कार। अधखुले अंग जिनमें केवल, हैं कसे हुए कुछ अस्थि-खंड जिनमें दधीचि की हड्डी है यह वज्र इंद्र का है प्रचंड! जो है गतिशील सभी ऋतु में गर्मी-वर्षा हो या कि ठंड जग को देते हो पुरस्कार देकर अपने को कठिन दंड! झोंपड़ी झुकाकर तुम अपनी ऊँचे करते हो राज-द्वार! हे ग्राम-देवता! नमस्कार! तुम जन-मन के अधिनायक हो तुम हँसो कि फूले-फले देश आओ, सिंहासन पर बैठो यह राज्य तुम्हारा है अशेष! उर्वरा भूमि के नये खेत के नये धान्य से सजे वेश, तुम भू पर रहकर भूमि-भार धारण करते हो मनुज-शेष अपनी कविता से आज तुम्हारी विमल आरती लूँ उतार! हे ग्राम देवता! नमस्कार!	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
क)	कवि किसको नमस्कार करता है और क्यों?	1
ख)	यह ग्राम देवता क्या-क्या करता है?	1
ग)	''यह गंगा की है धवल धार,'' कवि किसे गंगा की धवल धार कहता है और क्यों?	1
घ)	कवि ग्राम देवता को किस रूप में, कहाँ बिठाना चाहता है?	1
ङ)	यह ग्राम देवता कौन है? कवि उसके प्रति मन में क्या भाव रखता है?	1
	खण्ड ख	**25**
3.	**निम्नलिखित विषयो में से किसी एक पर लगभग 400 शब्दों में निबंध लिखिए**	**10**
	क) कक्षा का एक अविस्मरणीय दिन	
	ख) प्रगति है देश की तभी, जब साक्षर होंगे हम सभी	
	ग) दिल्ली मैट्रो : मेरी मैट्रो	
4.	**कल्पना कीजिए कि आपने कंप्यूटर इंजीनियर का अध्ययन पूरा कर लिया है और विप्रो कंपनी के निदेशक को कंप्यूटर-इंजीनियर के पद के लिए आवेदन भेजना चाहते हैं। अपना स्ववृत्त तैयार करते हुए आवेदन पत्र लिखिए।**	**5**
	अथवा	
	दूरदर्शन के प्रसारित कार्यक्रमों की समीक्षा करते हुए दूरदर्शन के निदेशक को पत्र लिखिए और अपने सुझाव भी लिखिए।	
5.	**टेलीविजन जन संचार का सबसे लोकप्रिय और सशक्त साधन है। टेलीविजन पर कोई भी सूचना कितने सोपानों को पार कर दर्शकों तक पहुँचती है? स्पष्ट कीजिए।**	**5**
	अथवा	
	विशेष लेखन किस शैली में लिखा जाता है? इस लेखन में किन-किन बातों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है?	
6.	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए -**	**5**
	क) भारत में नियमित अपडेटेड साइटों के नाम बताइए।	
	ख) विशेष रिपोर्ट के कोई दो प्रकार बताइए।	
	ग) भारत में समाचार-पत्रकारिता का प्रारंभ कब एवं किससे हुआ?	
	घ) भारत में प्रथम छापाखाना कब और कहाँ खुला था?	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	ङ) किन्हीं दो समाचार-पत्रों के नाम बताइए जिनके वेब संस्करण इंटरनेट पर प्राप्त हैं?	
	खण्ड ग	**55**
7.	**निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :**	**8**
	तोड़ो तोड़ो तोड़ो ये पत्थर, ये चट्टानें ये झूठे बंधन टूटें तो धरती को हम जानें सुनते हैं मिट्टी में रस है जिससे उगती दूब है अपने मन के मैदानों पर व्यापी कैसी ऊब है आधे आधे गाने तोड़ो तोड़ो तोड़ो ये ऊसर बंजर तोड़ो ये चरती परती तोड़ो सब खेत बनाकर छोड़ो मिट्टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को हम इसको क्या कर डालें इस अपने मन की खीज को? गोड़ो गोड़ो गोड़ो	
	अथवा	
	राघौ! एक बार फिरि आवौ। ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरो बनहिं सिधावौ।। जे पय प्याइ पोखि कर-पंकज वार वार चुचुकारे। क्यों जीवहिं, मेरे राम लाडिले! ते अब निपट बिसारे।। भरत सौगुनी सार करत हैं अति प्रिय जानि तिहारे। तदपि दिनहिं दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिम मारे।। सुनहु पथिक! जो राम मिलहिं बन कहियो मातु संदेसो।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	तुलसी मोहिं और सबहिन तें इन्हको बड़ो अंदेसो।।	
8.	**निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए: (3+3)**	6
	क) 'दीप अकेला' के प्रतीकार्थ को स्पष्ट करते हुए यह बताइए कि उसे कवि ने स्नेहभरा, गर्वभरा और मदमाता क्यों कहा है?	
	ख) सत्य की पहचान हम कैसे करें? 'सत्य' कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।	
	ग) 'वसंत आया' कविता में कवि की चिंता क्या है? इस कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।	
9.	**निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए (3+3)**	6
	क) पिय सौं कहेहु सँदेसरा, ऐ भँवरा ऐ काग। सो धनि बिरहें जरि गई, तेहिक धुआँ हम लाग।	
	ख) हेम कुंभ ले उषा सवेरे भरती ढुलकाती सुख मेरे। मदिर ऊँघते रहते जब जगकर रजनी भर तारा।	
	ग) भर गया है जहर से संसार जैसे हार खाकर देखते हैं लोग लोगों को सही परिचय न पाकर, बुझ गई है लौ पृथा की जल उठो फिर सींचने को।	
10.	**निम्नलिखित गद्यांश की सप्रंसग व्याख्या कीजिए -**	6
	कुछ दिनों के बाद मैंने सुना कि शेर अहिंसा और सह-अस्तित्ववाद का बड़ा जबरदस्त समर्थक है इसलिए जंगली जानवरों का शिकार नहीं करता। मैं सोचने लगा, शायद शेर के पेट में वे सारी चीजें हैं जिनके लिए लोग वहाँ जाते हैं और मैं भी एक दिन शेर के पास गया। शेर आँखें बंद किए पड़ा था और उसका स्टाफ आफिस का काम निपटा रहा था। मैंने वहाँ पूछा, ''क्या यह सच है कि शेर साहब के पेट के अंदर-रोजगार का दफ्तर है?''	
	अथवा	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	यदि साहित्य समाज का दर्पण होता तो संसार को बदलने की बात न उठती। कवि का काम यथार्थ जीवन को प्रतिबिंबित करना ही होता तो वह प्रजापति का दर्जा न पाता। वास्तव में प्रजापति ने जो समाज बनाया है, उससे असंतुष्ट होकर नया समाज बनाना कवि का जन्मसिद्ध अधिकार है। यूनानी विद्वानों के बारे में कहा जाता है कि वे कला को जीवन की नकल समझते थे और अफलातून ने असार संसार को असल की नकल बताकर कला को नकल की नकल कहा था। लेकिन अरस्तू ने ट्रेजेडी के लिए जब कहा था कि उसमें मनुष्य जैसे हैं उससे बढ़कर दिखाए जाते हैं, तब नकल-नवीस कला का खंडन हो गया था।	
11.	**निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए (4+4)**	8
	क) 'कच्चा चिट्ठा खोलना' मुहावरे का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि 'कच्चा चिट्ठा' पाठ में लेखक ने अपने जीवन का कच्चा चिट्ठा कैसे खोला है?	
	ख) औद्योगीकरण ने पर्यावरण का संकट पैदा कर दिया है, क्यों और कैसे? 'जहाँ कोई वापसी नहीं' - पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।	
	ग) 'कुटज' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि 'सुख और दुख तो मन के विकल्प हैं।'	
12.	**केदारनाथ सिंह अथवा तुलसीदास के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी किन्हीं दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।**	6
	अथवा	
	रामंचद्र शुक्ल अथवा पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा शैली की दो प्रमुख विशेषताएँ बताइए।	
13.	**निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 'अन्तराल भाग-2' के आधार पर दीजिए- (3+3+3)**	9
	क) ''चूल्हा ठंडा किया होता, तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता?'' इस कथन के आधार पर सूरदास की मन:स्थिति का वर्णन कीजिए।	
	ख) रूप सिंह पहाड़ पर चढ़ना सीखने के बावजूद भी भूप सिंह के सामने बौना कैसे पड़ गया था? 'आरोहण' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।	
	ग) 'फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी देते हैं,' कैसे? 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।	
	घ) 'अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसे गिरा करता था।' उसके क्या कारण हैं? 'अपना मालवा-खाऊ-उजाडू सभ्यता में' - पाठ के आधार पर बताइए।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
14.	**'अपना मालवा - खाऊ - उजाड़ू सभ्यता में' - पाठ के लेखक को क्यों लगता है कि 'हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है? आप क्या मानते हैं? अपने विचार लिखिए।**	**6**
	अथवा	
	''सच्चे खिलाड़ी कभी रोते नहीं, बाजी पर बाजी हारते हैं, चोट पर चोट खाते हैं, धक्के पर धक्के सहते हें पर मैदान में डटे रहते हैं।'' 'सूरदास की झोपड़ी' पाठ का यह कथन पाठकों को क्या संदेश देता है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।	**6**

हिंदी ऐच्छिक प्रतिदर्श प्रश्न पत्र-1

(अंक योजना)

कक्षा- बारहवीं

समय - 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्र.सं.	संभावित उत्तर संकेत/ मूल्य बिन्दु	अंक
	खण्ड 'क'	
1.	**अपठित गद्यांश बोध**	
क)	शीर्षक - 'सार्वजनिक जीवन : तालाब' **अथवा** 'तालाब और हमारा जीवन' (अन्य समानार्थी शीर्षक भी स्वीकार्य हो सकता है)	1
ख)	अमावस्या और पूर्णिमा को सार्वजनिक कामों का दिन माना गया है। इन दोनों दिनों में व्यक्ति अपने निजी कामों से हटकर सार्वजनिक कामों से स्वयं को जोड़ता है। इस दिन किसान अपने खेतों में काम नहीं करते थे वे उस समय का उपयोग अपने क्षेत्र के तालाबों की देखरेख और मरम्मत में करते थे।	2
ग)	तालाब को तीर्थ इसलिए माना गया क्योंकि तालाब सब घरों के मिले-जुले प्रयासों से बनता था, उसकी देखभाल भी सभी करते थे। सबका मेल ही तीर्थ है। जो तीर्थ जाने में असमर्थ हो वह तालाब को बनाने का कार्य और देखभाल का कार्य करता था।	2
घ)	तालाब समाज के तन-मन में बसा रहा है। लोग उसे तीर्थ के समान महत्त्व देकर उसकी देखभाल करते रहे हैं और बनवासी समाज तो शरीर पर तालाब और बावड़ी गुदवाते रहे हैं। इस तरह तालाब तन-मन में बसा हुआ है। इसलिए वह एक पानी का गड्ढा मात्र नहीं, एक जीवंत परंपरा है, एक परिवार है।	2
ङ)	तालाब का पूरा भर जाना महोत्सव की अनुभूति देता है। जल जीवन का पर्याय है। इसलिए भारत में भरे-पूरे तालाब की पूजा की जाती है। प्रजा से राजा तक घाट पर आकर पूजा करते हैं और पूरे भरे तालाब का आशीर्वाद लेकर घर जाते हैं।	2
च)	कोई भी तालाब अकेला नहीं होता - अर्थात् उस तालाब के जल में अनेक जल स्रोतों का जल मिला होता है। इस तरह वह भरे-पूरे जल-परिवार का सदस्य होता है। सब लोगों का मिला-जुला प्रयास उसकी देखभाल करता है। इस तरह पूरे समाज का संबंध तालाब से होता है। सबका जल उसमें समाया होता है और समाज के सब लोगों का संबंध उस तालाब से होता है।	2

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
छ)	'बिंदुसागर' राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। वह भारत के सभी जल स्रोतों, नदियों, समुद्रों का मिला हुआ रूप है। दूर-दूर से और सभी दिशाओं से आने वाले भक्त अपने साथ अपने क्षेत्र का थोड़ा-सा जल लाते हैं और बिंदुसागर को अर्पित करते हैं। इस प्रकार बिंदुसागर भारत की एकता और अखण्डता का प्रतीक माना गया है।	2
ज)	तालाब के विवाह की विधि को पूरा करने के लिए पहले धूमधाम से प्राण प्रतिष्ठा की जाती है, आसपास के मंदिरों की मिट्टी लाई जाती है, गंगा जल आता है और पाँच-सात कुओं या तालाबों का जल मिलाकर विवाह पूरा होता है। सभी सार्वजनिक स्थलों की मिट्टी और जल को तालाब में डालकर इसका संबंध सबके साथ जोड़ा जाता है।	2
2.	**किसी एक काव्यांश के उत्तर अपेक्षित हैं -**	
क)	इस कविता में वंसत ऋतु का वर्णन है। वंसत का प्रभाव घर, मार्ग और वन में सर्वत्र दिखाई दे रहा है।	1
ख)	फागुन माह में वंसत के आने से हृदय में कोमल भावनाएँ सुलग उठती हैं, दिल में शीतल-सी ज्वाला (विरोधाभास) जलती है जिसकी जलन अच्छी लगती है।	1
ग)	वसंत ऋतु ने फूल-पत्तों में अनेक परिवर्तन ला दिए हैं। पत्तों में नई लालिमा दिखाई देती है, फूलों में पीली-नीली लौ की दीप्ति दिखाई देती है, गुलाब की लाली होठों की लाली सी दिखाई देती है, फूलों की पंखुड़ियाँ तरह-तरह की दिखाई देती है।	1
घ)	वंसत प्रेमी के रूप में कलियों की आँखों में मिलन के स्वप्न (आकांक्षा) जगाता है। उनके हृदयों में प्रेमी-गीत की गुनगुनाहट उत्पन्न करता है।	1
ङ)	इसमें प्रकृति का उद्दीपन रूप बहुत मनोहारी है। वसंत ऋतु में प्रकृति हमारे मन की कोमल भावनाओं को जागृत करती है तथा प्रेममय वातावरण का निर्माण करती जान पड़ती है।	1
	अथवा	
क)	कवि ग्राम देवता को नमस्कार कर रहा है क्योंकि वह धन दौलत के स्थान पर इस धरती की मिट्टी को प्यार करता है। वह शोर-शराबे से दूर एकांत वातावरण में रहता है।	1
ख)	वह ग्राम देवता अपने प्राणों से संसार में प्रकाश करता है, वह जड़ में चेतनता का संचार करता है, वह एक-एक दाने से सौ-सौ दाने उगाता है, वह खेतों में परिश्रम कर अपना पसीना बहाता है?	1
ग)	किसान के पसीने की धारा को गंगा की धवल धार कहा गया है क्योंकि किसान मेहनत करके खेतों में फसलें उगाते हैं, जड़ में चेतनता का संचार करते हैं। इनके द्वारा उत्पन्न अन्न से सबका पोषण होता है।	1

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
घ)	कवि ग्राम देवता को जन-मन का अधिनायक मानता है, वह उसे देश के सिंहासन पर बिठाता है। वही इस देश का असली शासक हैं क्योंकि उन्हीं के परिश्रम से उगाए अन्न से प्रजा का पालन-पोषण होता है। ये उपजाऊ खेत उसी के साम्राज्य का हिस्सा हैं।	1
ङ)	यह ग्राम देवता किसान है। कवि उसके प्रति आदर-सम्मान का भाव रखता है। कवि उसकी आरती उतारना चाहता है और उसे नमस्कार करता है।	1
	खण्ड ख	
3.	**किसी एक विषय पर 400 शब्दों में निबंध अपेक्षित है।**	**10**
	भूमिका	1
	विषय वस्तु का सुसम्बद्ध प्रतिपादन	5
	उपसंहार	1
	भाषा शुद्धता और अभिव्यक्ति शैली	3
क)	**कक्षा का एक अविस्मरणीय दिन** विद्यालय - विद्या का मंदिर, अनेक विद्यालयों में सबसे प्रतिष्ठित विद्यालय, विद्यालयी शिक्षा का व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्व मेरी कक्षा - कक्षा की बनावट, उपलब्ध सुविधाओं का वर्णन, विद्यालय निरीक्षण का दिन, उसकी विशेष तैयारियाँ, शिक्षा निदेशक और शिक्षा अधिकारी का कक्षा में प्रवेश, उनके द्वारा कक्षा की गतिविधियों का ब्यौरा लेना, उत्तर पुस्तिकाओं और अभ्यास पुस्तिकाओं की जाँच आदि करना, बातचीत के दौरान मुझे कक्षा का विशिष्ट विद्यार्थी घोषित करना ... इस प्रकार अनेक बिंदुओं पर निबंध का विस्तार होगा, यह विस्तार/वर्णन प्रत्येक विद्यार्थी का भिन्न होगा। प्रत्येक विद्यार्थी की मौलिक अभिव्यक्ति को स्वीकार किया जाए।	
ख)	**प्रगति है देश की तभी, जब साक्षर होंगे हम सभी** (i) भूमिका - ''चारों ओर फैला, निरक्षरता का अंधकार है। सब छोड़कर करना अब, साक्षरता का प्रचार है।।'' (ii) राष्ट्र के नागरिकों का कर्त्तव्य ... (iii) शिक्षा सबका अधिकार .... (iv) साक्षरता एक वरदान....	

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	(v) निरक्षरता एक अभिशाप	
	(vi) साक्षरता अभियान .... सर्व शिक्षा अभियान	
	(vii) उपसंहार	
	''साक्षरता के अभियान को, गली-गली पहुँचाना है। अपने देश का नाम विश्व में, सर्वोच्च स्तर पर लिखवाना है।''	
ग)	**दिल्ली मैट्रो : मेरी मैट्रो**	
	(i) भूमिका ... उन्नति के नए साधन	
	(ii) मैट्रो योजना का आरंभ - 1995 में केन्द्र सरकार और दिल्ली-सरकार ने संयुक्त रूप से डी. एम.आर.सी. का पंजीकरण कराया। 1996 में 62.5 कि.मी. की लंबाई वाली योजना को स्वीकृति। 24 दिसंबर 2002 को पहली मैट्रो का उद्घाटन।	
	(iii) विभिन्न चरण...	
	(iv) प्रमुख विशेषताएँ	
	(v) सुरक्षा के प्रबंध	
	(vi) आवश्यक निर्देश - नागरिकों को सुविधा	
	(vii) उपसंहार	
4.	**पत्र-लेखन**	
	पत्र का प्रारूप - औपचारिकताएँ	2
	विषय वस्तु का प्रतिपादन	2
	भाषा की शुद्धता	1
	दिनांक सेवा में निर्देशक	
	विप्रो प्रा. लिमिटेड न्यू लिंक रोड़ अंधेरी, मुंबई-400053	
	विषय - कंप्यूटर इंजीनियर पद के लिए आवेदन	

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	महोदय, आज 25 मार्च 2008 को नवभारत टाइम्स, दिल्ली के प्रातः संस्करण में प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ है कि आपकी कंपनी को कंप्यूटर इंजीनियर की आवश्यकता है। मैं इस पद के लिए अपना आवेदन प्रस्तुत करता हूँ। मेरा स्ववृत्त इस आवेदन के साथ संलग्न है। इसका अवलोकन करने पर आप पाएँगे कि मैं इस पद के लिए पूरी तरह उपयुक्त उम्मीदवार हूँ। मैं विज्ञापन में आपके द्वारा वर्णित सभी योग्यताओं और अर्हताओं को पूरा करता हूँ। संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है – क) मैं विज्ञान का छात्र रहा हूँ ... ख) .... ग) .... घ) ..... अनुरोध है कि उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मेरे आवेदन पर सकारात्मक रूप से विचार करेंगे और मुझे कंप्यूटर इंजीनियर के पद पर नियुक्त करेंगे। सधन्यवाद भवदीय नरेन्द्र (नरेन्द्र कुमार) स्ववृत्त नाम : नरेन्द्र कुमार पिता का नाम : ..... माता का नाम : ..... जन्म तिथि : ..... वर्तमान पता :	

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	स्थायी पता : .... टेलीफोन न. : .... मोबाइल न. : .... ई मेल : .... शैक्षिक योग्यताएँ : .... क्र.स. परीक्षा/डिग्री वर्ष बोर्ड/वि.विद्यालय विषय श्रेणी प्रतिशत 1 _____ 2 _____ 3 _____ अन्य सबंधित योग्यताएँ 1 _____ 2 _____ 3 _____ उपलब्धियाँ 1 _____ 2 _____ 3 _____ कार्येतर गतिविधियाँ और अभिरुचियाँ 1. _____ 2 _____ ऐसे सम्मानित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व और उपलब्धियों से परिचित हों 1 _____ 2 _____ हस्ताक्षर _____ तिथि _____	

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	स्थान _____ अथवा दिनांक _____ सेवा में _____ निदेशक दूरदर्शन केन्द्र कॉपरनिकस मार्ग नई दिल्ली विषय: **दूरदर्शन के कार्यक्रमों की समीक्षा के संबंध में** महोदय आजकल प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों ..... (अपने विशेष सुझाव) ..... सधन्यवाद भवदीय नरेन्द्र (नरेन्द्र कुमार) (पत्र में विद्यार्थी अपने-अपने विचारों और सुझावों को लिखेंगे। सबके स्वतंत्र और मौलिक विचारों को स्वीकार किया जाए।) सभी प्रारूप-औचारिकताओं और विषय संबंधी आवश्यक विचारों के प्रतिपादन पर विद्यार्थी को पूरे अंक दिए जाएँ।	
5.	**टेलीविजन जनसंचार का सबसे लोकप्रिय और सशक्त माध्यम है। इसमें शब्द ध्वनि के साथ-साथ जब दृश्य का भी समावेश हो जाता है तो सूचना और भी विश्वसनीय हो जाती है। दूरदर्शन दृश्य-श्रव्य माध्यम है। दूरदर्शन पर सूचना निम्नलिखित सोपानों को पार करके दर्शकों तक पहुँचती है** - (i) फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज (ii) ड्राई एंकर (iii) फोन-इन	5

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	(iv) एंकर विजुअल (v) एंकर बाइट (vi) लाइव (vii) एंकर पैकेज (उपर्युक्त सोपानों को (प्रत्येक को) 2.3 वाक्यों में स्पष्ट किया जाना अपेक्षित है) उत्तर में प्रमुख पांच बिंदुओं के स्पष्टीकरण पर पूरे पाँच अंक दिए जाएँ। अथवा विशेष लेखन की शैली निश्चित नहीं होती। बीट से सबंधित समाचार में 'उलटा पिरामिड शैली' का प्रयोग होता है। समाचार फीचर में कथात्मक शैली को अपनाया जाता है। लेख या टिप्पणी का आरंभ फीचर की तरह होने से कथात्मक शैली का ही प्रयोग होता है, क्योंकि उसका आरंभ किसी घटना से करके पुराने संदर्भों को नवीन संदर्भों से जोड़ दिया जाता है। घटनाक्रम के अनुसार शैली को अपनाना उपयुक्त है। महत्ता इस बात की है कि किसी विशेष विषय पर लिखा लेख सबसे अलग हो। वह इतना अधिक प्रभावशाली होना चाहिए कि पाठक उसे पढ़े बिना न रह सके उसकी छाप पाठक के मन मस्तिष्क पर बनी रहनी चाहिए। उस क्षेत्र विशेष की विशेष शब्दावली का ज्ञान भी पत्रकार को होना चाहिए।	
6.	क. **भारत में नियमित अपडेट साइटें हैं** - एन डी टी वी टाइम्स ऑफ इंडिया (और भी साइटें है।)	1
	ख. **विशेष रिपोर्ट के प्रकार** (i) खोजी रिपोर्ट (ii) इनडेप्थ रिपोर्ट (iii) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट (iv) विवरणात्मक रिपोर्ट (कोई दो प्रकार बताना अपेक्षित है)	1
	ग. भारत में समाचार पत्रकारिता का आरंभ सन् 1780 में जेम्स ऑगस्ट हिकी के 'बंगाल गज़ट' से हुआ।	1
	घ. भारत में प्रथम छापाखाना सन् 1556 में गोवा में खुला था।	1
	ङ 'दैनिक जागरण' और 'अमर उजाला' समाचार-पत्रों के वेब संस्करण इंटरनेट पर प्राप्त हैं।	1

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	खण्ड ग	
7.	**काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या**	**8**
	संदर्भ – कविता और कवि का नाम	1
	कविता का प्रसंग	1
	व्याख्या – व्याख्येय बिंदुओं का स्पष्टीकरण	4
	विशेष – काव्य पंक्तियों की शिल्पगत विशेषताओं का उल्लेख	1
	भाषा शुद्धता और अभिव्यक्ति शैली	1
	तोड़ो तोड़ो .... गोड़ो गोड़ो गोड़ो। प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियाँ रघुवीर सहाय द्वारा रचित कविता 'तोड़ो' से ली गई है। कवि नव निर्माण तथा विकास के लिए पत्थरों चट्टानों तथा झूठे बंधनों और रूढ़ियों को तोड़ने के लिए प्रेरणा देता है। सृजन में बाधक तत्वों को नष्ट कर भाव सृजन करने के लिए प्रेरणा दे रहा है। व्याख्या बिंदु नव-निर्माण और विकास के लिए पत्थर, चट्टानों, झूठे बंधनों और रूढ़ियों को तोड़कर धरती को समतल बनाने मन रूपी धरती के रस को पहचानने का आह्वान किया गया है। मन रूपी मैदानों की ऊब-खोज को मिटाकर नव-निर्माण रूपी नव फसलों को पैदा करना होगा। उसी प्रकार सृजनात्मक साहित्य की रचना के लिए भी मन को परंपरागत रूढ़ियों के बंधनों से मुक्त करना होगा। अनुपजाऊ बंजर-परती धरती को खोद कर खेती योग्य बनाना होगा। मन की खोज और ऊब को नष्ट करके मन की रस-ऊर्जा को सृजनात्मक कार्यों की ओर उन्मुख करना होगा। (उपयुक्त व्याख्या – बिदुंओं का स्पष्टीकरण अपेक्षित है) विशेष – 1. परंपरागत रूढ़ियों को नष्ट कर नव निर्माण का आह्वान 2. पुनरुक्ति प्रकाश, रूपक और अनुप्रास अलंकार 3. उद्‌बोधनात्मक शैली, मुक्त छंद की रचना 4. भाषा सहज, सरल और भावों के अनुरूप अथवा राघौ एक बार फिरि ..... इन्हको बड़ो अंदेसो।। प्रसंग – प्रस्तुत पद राम भक्त कवि तुलसीदास द्वारा रचित 'गीतावली' के अयोध्याकाण्ड से अवतरित	

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	है। इस पद में 'राम वन गमन' से संतप्त राम के रथ के घोड़ों की दशा की वर्णन करते हुए माता कौशल्या राम को अयोध्या आने के लिए कहती हैं। व्याख्या - बिन्दु - हे राघव! तुम एक बार वन से अवश्य लौट आओ और अपने श्रेष्ठ घोड़ों को देखकर फिर से वन चले जाना। जिन्हें तुमने दूध पिलाकर अपने कर-कमलों से बार-बार पुचकारा-दुलारा था। इन घोड़ों को तुम एकदम भुला दोगे तो ये जीवित कैसे रहेंगे? इन्हें तुम्हारे बहुत प्रिय घोड़े जानकर, भरत इनकी सौ गुनी देखभाल करते हैं फिर भी ये तुम्हारे वियोग में दिन-प्रतिदिन इस प्रकार दुर्बल होते जा रहे हैं जैसे कमल को पाले ने मार दिया हो। किसी पथिक को संबोधित करते हुए माता कौशल्या कहती है कि हे पथिक! सुनो यदि तुम्हें राम वन में कहीं मिलें तो उन्हें कहना कि माता कौशल्या को सबसे अधिक उनकी चिंता लगी हुई है। (उपर्युक्त व्याख्या - बिन्दुओं का स्पष्टीकरण अपेक्षित है) विशेष 1. राम के वियोग में नर-नारी और पशु पक्षी सब व्यक्ति हैं। 2. पुनरुक्ति प्रकाश, अनुप्रास, रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकार 3. वियोग शृंगार रस 4. ब्रज भाषा 5. पद छंद 6. स्वरमैत्री के कारण गेयता का गुण	
8.	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित है -** **(3+3)** (प्रत्येक उत्तर में तीन बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित है)	**6**
क)	कवि ने 'दीप अकेला' को उस अस्मिता का प्रतीक माना है जिसमें लघुता में भी ऊपर उठने की गर्वभरी व्याकुलता है। उसमें प्रेम रूपी तेल भरा है। यह अकेला होते हुए भी एक आलोक स्तंभ के समान है जो समाज का कल्याण करेगा और अपने मदमाते गर्व के कारण सबसे अलग दिखाई देगा।	
ख)	सत्य की पहचान के लिए कवि ने यह संकेत दिया है कि सत्य कोई बाहरी वस्तु नहीं है, यह तो अंतर्मन की एक शक्ति है। इसे पहचानने के लिए हमें युधिष्ठिर जैसा संकल्प लेना होगा तभी हम सत्य को पहचान सकते हैं। सत्य हमारी आत्मा में कभी-कभी दमकता हुआ अनुभव होता है जिसका प्रकाश हमारे अंतर्मन में समाकर एक सात्विक अनुभूति देता है।	
ग)	आज मनुष्य का नाता प्रकृति से टूट रहा है, यही कवि की मुख्य चिंता है। उसे ऋतु परिवर्तन का ज्ञान प्राकृतिक परिवर्तनों को देखकर महसूस करके नहीं अपितु कैलेंडर को देखकर होता है। उसे वंसत-वसंत पंचमी का आगमन प्रकृति के सान्निध्य में रहकर पत्तों का झड़ना, नई कोपलों का फूटना,	

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	सुंगधित मंद समीर का बहना, ढाक के जंगलों का दहकनां, कोयलों का कुहुकना आदि को देखकर नहीं होता, वह कैलेंडर देखकर जानता है कि आज वसंत पंचमी है।	
9.	**काव्य सौंदर्य** 3+3	6
	(किन्हीं दो काव्यांशों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करना अपेक्षित है)	
	भाव-सौंदर्य - स्पष्टीकरण	1½
	शिल्प सौंदर्य - स्पष्टीकरण	1½
	कुल अंक 3	
क)	**पिय सौ कहेहु ..... धुआँ हम लाग॥**	
	भाव सौंदर्य	
	मलिक मुहम्मत जायसी द्वारा रचित 'पदमावत' के 'बारह मासा' प्रसंग की इन पंक्तियों की इन पंक्तियों में राजा रत्नसेन के वियोग में संतप्त रानी नागमती भ्रमर और काग को संबोधित करते हुए कहती है कि हे भ्रमर। और हे काग! तुम मेरे प्रियतम के समीप पहुँचकर उन्हें यह संदेशा देना कि आपकी प्रियतमा वियोगाग्नि में जल-जल कर मर गई और उसका धुआँ लगने के कारण ही हमारे शरीर काले पड़ गए हैं।	
	शिल्प सौंदर्य	
	1. नागमती की विरहावस्था का मार्मिक और सजीव चित्रण	
	2. विरह का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन	
	3. शृंगार रस के वियोग पक्ष का हृदयस्पर्शी वर्णन	
	4. अवधी भाषा का सहज प्रयोग	
	5. स्वरमैत्री के कारण लयात्मकता का गुण	
	6. कविता में माधुर्य गुण	
	7. दोहा छंद	
	8. दृश्य बिम्ब	
ख.	**हेम कुंभ ले ..... रजनी भर तारे।**	
	भाव सौंदर्य	
	छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'कार्नेलिया का गीत' की इन पंक्तियों में प्रातः कालीन वातावरण के सौंदर्य का चित्ताकर्षक वर्णन किया गया है। उषा रूपी सुंदरी स्वर्णिम कलश से	

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	सुबह-सुबह मेरे लिए समस्त सुख उड़ेल देती है। जब सारी रात जागने के कारण तारे मस्ती में ऊँघने लगते हैं। शिल्प सौंदर्य - 1. भारत में प्रातः कालीन सौंदर्य की अनुपम छटा दिखाई देती है। 2. प्रस्तुत पंक्तियों में उषा और तारों का मानवीकरण किया गया है। 3. रूपक और अनुप्रास अलंकार ..... 4. भाषा तत्सम शब्दावली युक्त खड़ी बोली है। 5. भाषा में लाक्षणिकता और प्रतीकात्मकता का गुण है। 6. प्रातःकालीन सौंदर्य का सुंदर बिम्ब प्रस्तुत किया गया है। 7. कविता में माधुर्य और प्रसाद गुण है।	
ग)	**भर गया है जहर .....फिर सींचने को।** भाव सौंदर्य 'गीत गाने दो मुझे' नामक कविता की प्रस्तुत पंक्तियों में कविवर सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने संसार में व्याप्त लूट-खसोट से निराश लोगों को अपनी व्यथा को भुलाकर पुनः व्यवस्था स्थापित करने का आह्वान किया है। सर्वत्र फैली विषमता और निराशा को त्यागकर मानवीय संवेदनाओं की अपनी ज्योति से इस धरती को पुनः सींचना होगा। शिल्प-सौंदर्य 1. प्रस्तुत पंक्तियों में मानवता के कल्याण की सद्भावना से युक्त गीतों को रचने की कामना अभिव्यक्त हुई है। 2. कवि का मानवतावादी दृष्टिकोण स्पष्ट होता है। 3. अनुप्रास, उत्प्रेक्षा और विरोधाभास अलंकार का प्रयोग 4. भाषा में लाक्षणिकता का गुण है। 5. सहज-स्वाभाविक खड़ी बोली का प्रयोग है। 6. छंद मुक्त कविता है। 7. कविता में प्रसाद गुण है।	
10.	**गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या**	**6**
	संदर्भ - पाठ और लेखक का नाम	1

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	पूर्वापर संबंध	1
	व्याख्या –प्रमुख व्याख्येय बिंदुओं का स्पष्टीकरण	3
	विशेष –विशेष टिप्पणी और भाषा शैली गत विशेषताओं का उल्लेख	1
	कुछ दिनों बाद ..... रोजगार का दफ्तर है? प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण असगर वजाहत द्वारा लिखित 'शेर' नामक लघुकथा से अवतरित है। इसमें लेखक ने शेर को व्यवस्था का प्रतीक माना है और उसकी कार्य प्रणाली पर व्यंग्य किया है। व्याख्या – कुछ दिनों से सुना जा रहा है कि शेर अहिंसा और सह अस्तित्व का बहुत अच्छा समर्थक हो गया है इसलिए वह जंगली जानवरों का शिकार नहीं करता। शेर के मुँह में सभी जानवर बिना किसी आपत्ति के घुसे चले जा रहे हैं तो शेर को शिकार करने की क्या आवश्यकता है? व्यवस्था रूपी शेर के पास सब भ्रमवश चले तो जाते हैं किन्तु उन्हें कुछ भी नहीं मिलता केवल निराशा ही हाथ लगती है। आज देश की व्यवस्था अहिंसा वादी और सह-अस्तित्ववादी होने का दंभ भर रही है लेकिन वास्तविकता एकदम भिन्न है। विशेष – 1. वर्तमान समाज की भ्रष्टव्यवस्था पर तीखा व्यंग्य है। 2. प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक भाषा शैली का प्रयोग हुआ है। 3. तत्सम, तद्भव, उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का सहज प्रयोग है। अथवा यदि साहित्य समाज ..... कला का खंडन हो गया **प्रसंग :** प्रस्तुत गद्यांश राम विलास शर्मा द्वारा रचित 'यथास्मै रोचते विश्वम्' नामक पाठ से लिया गया है इसमें लेखक ने साहित्य, समाज और कला के महत्त्व का प्रतिपादन किया है। **व्याख्या** – यदि साहित्य समाज का दर्पण होता तो संसार को बदल डालने की बात न होती। यदि एक कवि का कार्य यथार्थ जीवन को प्रतिबिंबित करना ही होता तो वह एक प्रजापति का स्थान ग्रहण न करता। वास्तव में प्रजापति ने जो समाज बनाया है उससे असंतुष्ट होकर एक नए समाज का निर्माण करना कवि का जन्म सिद्ध अधिकार है। यूनानी विद्वानों ने कला को जीवन की नकल कहा है और अफलातून ने इस सारहीन संसार को असल की नकल माना और कला को नकल की नकल कहा था लेकिन अरस्तू ने ट्रेजेडी के लिए माना है कि संसार में जैसे मनुष्य हैं वे उससे बढ़चढ़ कर चित्रित किए जाते हैं इस प्रकार अरस्तू का मत नकल-नवीस कला का खंडन करता है। विशेष – 1. लेखक ने कला के विषय में विद्वानों द्वारा प्रस्तुत विचारों का उल्लेख किया है।	

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	2. भाषा सरल, सहज एवं साहित्यिक खड़ी बोली है। 3. तत्सम्, तद्भव और विदेशज शब्दों का प्रयोग है।	
11.	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित है -** **(4+4)** (प्रत्येक उत्तर में प्रमुख चार बिंदुओं का उल्लेख किया जाए तो विद्यार्थी को पूरे अंक प्रदान किए जाएँ)	**8**
क.	'कच्चा चिट्ठा खोलना' का अर्थ है जीवन की सच्चाईयों का वर्णन करना अर्थात् बिल्कुल साफ-साफ कहना। प्रस्तुत पाठ लेखक की आत्मकथा 'मेरा कच्चा चिट्ठा' का एक अंश है। इसमें लेखक ने अपने जीवन की सभी अच्छी-बुरी बातों से पाठकों का साक्षात्कार करवाया है। लेखक को अपने जीवन में प्रयाग संग्रहालय निर्माण के लिए जो-जो कार्य करने पड़े उनका सत्य रूप में चित्रण किया है। देश के कोने-कोने से वस्तुओं का संग्रह किया। एक बुढ़िया से दो रुपये में बोधिसत्व की आठ फुट लम्बी मूर्ति को खरीदकर संग्रहालय में स्थापित किया जो संसार की सबसे पुरानी मूर्ति है। इस प्रकार 'कच्चा चिट्ठा' के माध्यम से अपने जीवन की अनमोल यादों का यथार्थ प्रस्तुत किया है।	
ख.	औद्योगीकरण ने पर्यावरण का संकट इसलिए पैदा कर दिया है क्योंकि पर्यावरण असंतुलन बढ़ता ही जा रहा है। औद्योगिक विकास के कारण कृषि योग्य भूमि को उजाड़ रहे हैं। खनिज संपदा नष्ट हो रही है। बसे -बसाए लोगों को उजाड़कर विस्थापित किया जा रहा है। हरे-भरे वन-वनस्पति काटे जा रहे हैं।	
ग)	मानव जीवन में सुख और दुख धूप-छाया के समान आते-जाते रहते हैं। दुख के बाद सुख तथा सुख के बाद दुख की अनुभूति होना अनिवार्य है। मानव जीवन में सुखी वही है जिसका मन वश में है जिसका मन परवश है वह हमेशा दुखी रहता है। परवश होने का अर्थ है - खुशामद करना, दाँत निपोरना, चापलूसी और जी-हजूरी करना। जिसका मन अपने वश में नहीं रहता वह दूसरे के मन के पर्दे खोलता रहता है और झूठे आडंबर रचता है और दूसरों को फँसाने के लिए जाल बिछाता है।	
12.	**किसी एक लेखक अथवा कवि का जीवन परिचय अपेक्षित है-**	**6**
	(i) संक्षिप्त जीवन-परिचय	2
	(ii) रचनाओं के नामों का उल्लेख, साहित्यिक योगदान	2
	(iii) दो काव्यगत अथवा भाषा शैलीगत विशेषताओं का स्पष्टीकरण	2
	केदारनाथ सिंह का जन्म 7 जुलाई 1934 ई. में बलिया जिले के चकिया गाँव में हुआ। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. करने के बाद आधुनिक हिन्दी कविता में 'बिम्ब-विधान' विषय पर पी0एच0डी0 की उपाधि प्राप्त की। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में भारतीय भाषा केन्द्र में हिन्दी के प्रोफेसर के पद से अवकाश प्राप्त किया सम्प्रति दिल्ली में रहकर स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं। **प्रमुख रचनाएँ** - काव्य संग्रह - अभी बिलकुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, अकाल में सारस।	

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	आलोचनात्मक पुस्तक - कल्पना और छायावाद **निबंध संग्रह** - मेरे समय के शब्द और कब्रिस्तान में पंचायत **काव्यगत विशेषताएँ** - (कविता के संदर्भ में विस्तार अपेक्षित है) (i) सौंदर्य और प्रेम से युक्त काव्य (ii) आस्था और विश्वास का स्वर - उदाहरण ''किसी अलक्षित सूर्य को ..... अपनी एक टाँग पर खड़ा है यह शहर'' (iii) सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति उदाहरण - ''यह धीरे-धीरे होना कि हिलता नहीं है कुछ भी।'' (iv) संघर्षशीलता का स्वर (किन्हीं दो काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख अपेक्षित है। अपेक्षित बिंदुओं को - जीवन परिचय, रचनाएँ और दो काव्यगत विशेषताएँ, लिखने पर पूरे अंक दिए जाए।) अथवा **तुलसीदास** - भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा के राम भक्त कवि तुलसीदास का जन्म सन् 1532 ई. में बाँदा जिले में राजा पुर गाँव में हुआ था। उन्होंने 'रामचरित मानस' के द्वारा राम काव्य तो समृद्ध किया ही, साथ ही तत्कालीन समाज का मार्ग दर्शन भी किया। **रचनाएँ** - रामचरित मानस, गीतावली, कवितावली, विनय पत्रिका और कृष्ण गीतावली। **काव्यगत विशेषताएँ** - (कविता के संदर्भ में विस्तार अपेक्षित है) (i) राम की भक्ति और सगुण - निर्गुण भक्ति में समन्वय की भावना (ii) जीवन के विविध रूपों का यथार्थ चित्रण (iii) लोक मंगल और समन्वय की भावना (iv) विविध रसों, भावों का चित्रण (v) ब्रज और अवधी भाषा में रचना अथवा	

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	आचार्य रामचंद्र शुक्ल आचार्य शुक्ल हिन्दी के महान आलोचक, इतिहासकार और साहित्यकार थे। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के अगोना नामक गाँव में सन् 1844 ई. में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा मिर्जापुर के जुबली स्कूल में हुई थी। 1901 ई. में उन्होंने मिशन हाई स्कूल से फाइनल की परीक्षा पास की। 1905 ई. में काशी नागरी प्रचारिणी सभा में 'हिन्दी शब्द सागर' के सहायक संपादक के पद पर नियुक्त हुए। कुछ समय हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक रहे। **प्रमुख रचनाएँ** - हिन्दी साहित्य का इतिहास, गोस्वामी तुलसीदास, चिंतामणि (चार खंड), रस मीमांसा, जायसी ग्रंथावली, भ्रमरगीत सार आदि। **भाषा शैलीगत विशेषताएँ** - (पाठ के संदर्भ में विस्तार अपेक्षित है।) (i) गंभीर विवेचनात्मक शैली (ii) कथन का चमत्कार पूर्ण प्रयोग (iii) हास्य-व्यंग्य प्रधान शैली (iv) समास और व्यास शैली आदि अथवा **पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी** **जीवन परिचय** - हिन्दी के प्रमुख रचनाकार पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म 1883 ई. को पुरानी बस्ती जयपुर में हुआ था। वे अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे, उनकी रुचि विज्ञान में थी, प्राचीन इतिहास और पुरातत्त्व उनका प्रिय विषय था। 1904 से 1922 तक अनेक महत्त्वपूर्ण संस्थानों में प्राध्यापक के पद पर कार्य किया। **प्रमुख रचनाएँ** - गुलेरी जी की सृजनशीलता के चार प्रमुख पड़ाव है - 'समालोचक (1903-06 ई.) मर्यादा (1911-12 ई.), प्रतिभा (1918-20) और नागरी प्रचारिणी पत्रिका (1920-22) इन पत्रिकाओं में गुलेरी जी का रचनाकर व्यक्तित्व बहुविध उभर कर सामने आया। उन्होंने उत्कृष्ट निबंधों के अतिरिक्त तीन कहानियाँ - सुखमय जीवन, बुद्धू का काँटा और उसने कहा था - हिन्दी जगत को दी। 'इतिहास दिवाकर' की उपाधि से उन्हें सम्मनित किया गया। **साहित्यिक विशेषताएँ** - (पाठ के संदर्भ में विस्तार अपेक्षित है) (i) समाज का यथार्थ चित्रण (ii) वर्णनात्मक, चित्रात्मक, विवरणात्मक शैलियों का प्रयोग (iii) आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग, सजीव दृश्य चित्रण शैली का प्रयोग	

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
13.	**किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं** **(3+3+3)** (प्रत्येक उत्तर में तीन बिंदुओं का उल्लेख होने तथा भाषा की सहज व शुद्ध अभिव्यक्ति पर पूरे तीन अंक दिए जाएँ।)	9
क)	जब सूरदास की झोंपड़ी को लोगों ने जलते हुए देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि इसमें आग किस कारण फैली। जगधर ने जब सूरदास से पूछा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि चूल्हे की किसी चिनगारी के कारण आग लग गई हो। इसी सच्चाई को जानने के लिए सूरदास से कहा कि क्या इसने चूल्हे की आग को शांत किया था। प्रत्युत्तर में नायक राम ने इसका प्रतीकार्थक अर्थ स्पष्ट किया और कहा कि सूरदास को सहज रूप से जीवन-यापन करते हुए देखकर कुछ लोग ईर्ष्या की अग्नि में जलने लगे थे। इसी कारण उन्होंने अपने मन की ईर्ष्या की आग को शांत करने के लिए यह कार्य किया।	
ख)	रूप सिंह लोगों को पहाड़ पर चढ़ाने का प्रशिक्षण देता है। इस प्रशिक्षण में कई आधुनिक उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। रूप सिंह ने कई साहसिक अभियानों में भाग लिया था लेकिन जब उसे ऊपर भूपसिंह के घर के लिए चढ़ने में कठिनाई हुई क्योंकि उसके शरीर का संतुलन बिगड़ गया तब उसे भूपसिंह ने अपने मफलर की सहायता से ऊपर चढ़ाया। भूपसिंह बिना किसी आधुनिक उपकरणों के बहुत सरलता से ऊपर चढ़ गया तथा रूप सिंह को भी चढ़ाने में सहायता की। भूपसिंह की कुशलता और हिम्मत के समक्ष रूप सिंह बौना पड़ गया।	
ग)	गाँव में अनेक फूल पाए जाते हैं - कमल, कोइयाँ, हरसिंगार, कदंब, तोरी, लौकी, अमरूद ....आदि। इसके साथ गाँव में ऐसे फूल भी होते हैं जो रोगों को दूर करते हैं - भरभंडा के फूल का दूध आँख आने पर लगाने से रोग दूर हो जाता है। नीम के फूल और पत्ते चेचक के रोगी के पास रखे जाते हैं। बेर का फेल सूँघने से ततैया का डंक झड़ जाता है। इस प्रकर कहा जा सकता है कि फूल केवल गंध ही नहीं देते, दवा भी देते हैं।	
घ)	अब धरती का वातावरण गरम हो गया है क्योंकि कार्बन डाइऑक्साइड गैसों ने धरती के तापमान को कई डिग्री सेल्सियस बढ़ा दिया है जिससे मौसम का संतुलन बिगड़ गया है। यही कारण है कि कभी-कभी अधिक बरसात होने लगती है तो कभी-कभी सूखा पड़ जाता है। आज औद्योगिक विकास के नाम पर प्रकृति की अमूल्य संपदा नष्ट हो रही है इसे अब रोकना होगा।	
14.	**एक उत्तर अपेक्षित है** आज प्रकृति से मानव अपना रिश्ता तोड़ रहा है। औद्योगिक विकास के नाम पर हो रहा है प्रकृति का विनाश, हरियाली का अंत, जल का अभाव और दूषित वातावरण। आज भौतिक विकास के नाम पर मानव तथा अन्य प्राणियों के जीवन के लिए आवश्यक प्राकृतिक साधनों का विनाश हो रहा है। यदि स्थिति यही रहती है तो एक दिन इस पृथ्वी पर मानव व अन्य जीवों का अस्तित्व निश्चित ही समाप्त हो जाएगा। इसलिए लेखक ने कहा है कि हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह वास्तव में उजाड़ की अपसभ्यता है। अतः धरती पर हमें जीना है तो जागरूक होना होगा कि औद्योगिकता के साथ-साथ वातावरण दम घोंटू न हो जाए।	

प्र.सं.	संभावित उत्तर-बिन्दु	अंक
	अथवा घीसू का यह वाक्य 'मिठुआ खेल में रोते हो', सूरदास को अंदर तक झकझोर गया। वह चिंता, शोक ग्लानि से मुक्त हो उठ खड़ा हुआ। उसे लगा सच्चे खिलाड़ी कभी नहीं रोते, बाजी पर बाजी हारते हैं, चोट पर चोट खाते हैं, धक्के सहते हैं, पर मैदान में डटे रहते हैं। किसी से न जलते हैं, न चिढ़ते हैं। हिम्मत व धैर्य से काम लेते हैं। जिन्दगी खेल है हँसने के लिए, दिल बहलाने के लिए, रोने के लिए नहीं। हमें भी जीवन को खेल समझकर खेलना है, इसमें निराशा कुंठा का कोई स्थान नहीं। हमें भी सूरदास की तरह सच्चा खिलाड़ी बनकर निराशा में आशा का दामन नहीं छोड़ना है। किसी से ईर्ष्या व जलन नहीं करनी अपितु साहस से विपत्ति और विषम परिस्थितियों का सामना करना चाहिए ईश्वर उसकी सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करता है। कर्म द्वारा जीवन-संग्राम को जीतना चाहिए। सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर जीवन को सफल बनाना चाहिए। (प्रमुख छह बिन्दुओं का उल्लेख होने पर पूरे छह अंक दिए जाएँ।)	6

प्रश्न पत्र प्रारूप-2

हिंदी ऐच्छिक

कक्षा- बारहवीं

समय - 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्रश्नों के प्रकार	अपठित बोध	लेखन	साहित्य	विशेष टिप्पणी
अति लघुत्तरात्मक प्रश्न	गद्यांश बोध 1(1) काव्यांश बोध 5(5)	अभिव्यक्ति और माध्यम 5(5)		पठन, अवबोध व लेखन कौशल
लघुत्तरात्मक प्रश्न	गद्यांश बोध 14(7)		कविताओं के अर्धबोध पर प्रश्न 6(2) काव्यांशों का काव्य सौंदर्य 6(2) पूरक पुस्तक के पाठों की विषय वस्तु पर प्रश्न 9(3)	अवबोध व लेखन कौशल पठन, लेखन, व अवबोधन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल
निबंधात्मक प्रश्न		पत्र लेखन 5(1) निबंध लेखन 10(1) अभिव्यक्ति और माध्यम 5(1)	काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या 8(1) गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या 6(1) गदय् पाठों की विषय वस्तु पर प्रश्न 8(2) कवि लेखन जीवन परिचय 6(1) पूरक पुस्तक के पाठों की विषयवस्तु प्रश्न 6(1)	अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल अवबोधन व लेखन कौशल

नोट : प्रश्न संख्या कोष्ठक के भीतर और अंक कोष्ठक के बाहर है।

हिंदी (ऐच्छिक) कोड सं.-002

पाठ्यक्रम कक्षा-12

प्रश्नपत्र-2

समय - 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खण्ड 'क'	20
1	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए -** परियोजना शिक्षा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। इसे तैयार करने में किसी खेल की तरह का ही आनंद भी मिलता जाता है। इस तरह परियोजना तैयार करने का अर्थ है-खेल-खेल में बहुत कुछ सीख जाना। यदि आपको कहा जाए कि इस पर निबंध लिखिए, तो आपको शायद उतना आनंद नहीं आएगा। लेकिन यदि आपसे कहा जाए कि अखबारों में छपे अलग-अलग शहरों के दशहरे के चित्र काट कर अपनी कॉपी में चिपकाइए और लिखिए कि कौन-सा चित्र, किस शहर के दशहरे का है, तो शायद आपको बहुत आनंद आएगा। तो इस तरह से चित्र इकट्ठे करके चिपकाना भी एक शैक्षिक परियोजना है। यह एक प्रकार की फोटो-फीचर परियोजना कहलाएगी। इस तरह से न केवल आपने चित्र काटे और चिपकाए-बल्कि कई शहरों में मनाए जाने वाले दशहरे के तरीकों को भी जाना। परियोजना पाठ्य-पुस्तक से प्राप्त जानकारियों के अलावा भी आपको देश-दुनिया की बहुत सारी जानकारियाँ प्रदान करती है। यह आपको तथ्यों को जुटाने तथा उन पर विचार करने का अवसर प्रदान करती है। इससे आप में नए-नए तथ्यों के कौशल का विकास होता है। इससे आप में एकाग्रता का विकास होता है। लेखन संबंधी नई-नई शैलियों का विकास होता है। आप में चिंतन करने तथा किसी पूर्व घटना से वर्तमान घटना को जोड़कर देखने की शक्ति का विकास होता है। परियोजना कई प्रकार से तैयार की जा सकती है। हर व्यक्ति इसे अलग ढंग से, अपने तरीके से तैयार कर सकता है। ठीक उसी प्रकार जैसे हर व्यक्ति का बातचीत करने का, रहने का, खाने-पीने का अपना अलग तरीका होता है। ऐसा निबंध, कहानी, कविता लिखते या चित्र बनाते समय भी होता है। लेकिन ऊपर कही गई बातों के आधार पर यहाँ हम परियोजना को मोटे तौर पर दो भागों में बाँट सकते हैं - एक तो वे परियोजनाएँ जो समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाती है और दूसरी वे जो किसी विषय की समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार की जाती हैं। समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाने वाली परियोजनाओं में संबंधित समस्या से जुड़े सभी तथ्यों पर प्रकाश डाला जाता है और उस समस्या के समाधान के लिए सुझाव भी दिए जाते हैं। इस तरह की परियोजनाएँ प्रायः सरकारी अथवा संगठनों द्वारा किसी समस्या पर कार्य योजना तैयार करते समय बनाई जाती हैं। इससे उस समस्या के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने में आसनी हो जाती है।	15

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	किन्तु दूसरे प्रकार की परियोजना को आप आसानी से तैयार कर सकते हैं। इसे शैक्षिक परियोजना भी कहा जाता है। इस तरह की परियोजनाएँ तैयार करते समय आप संबंधित विषय पर तथ्यों को जुटाते हुए, बहुत सारी नई-नई बातों से अपने आप परिचित भी होते हैं।	
1.	गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।	1
2.	परियोजना क्या है? इससे क्या मिलता है?	2
3.	शैक्षिक परियोजना क्या है?	2
4.	परियोजना हमें क्या प्रदान करती है?	2
5.	परियोजना किस प्रकार तैयार की जा सकती है?	2
6.	समस्या का निदान करने वाली परियोजना कैसी होनी चाहिए?	2
7.	हर व्यक्ति की परियोजना दूसरे से अलग क्यों होती है?	1
8.	'शिक्षा' और 'संबंध' शब्दों के विशेषण बनाइए।	1
9.	'फोटो-फीचर' परियोजना से आप क्या समझते हैं?	1
10.	'देश', 'दुनिया' - शब्दों का एक-एक पर्यायवाची शब्द लिखिए।	1
2	**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**	**5**
	कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार? भिन्न-भिन्न यदि देश हमारे तो किसका संसार? धरती को हम काँटे-छाँटें, तो उस अंबर को भी बाँटें, एक अनल है, एक सलिल है, एक अनिल संचार, कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार? एक भूमि है, एक व्योम है, एक सूर्य है, एक सोम है, एक प्रकृति है, एक पुरुष, अगणित रूपाकार, कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार?	
क.	भिन्न देशों में धरती का विभाजन करने वाले के लिए किसका विभाजन असंभव है?	1
ख.	देशों की भिन्नता को महत्व न देने के लिए क्या तर्क दिए गए हैं?	1

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
ग.	'अनल' और 'अनिल' शब्दों के अर्थ में क्या अंतर है?	1
घ.	कवि के मन में जन्मभूमि का विस्तार कितना है?	1
ङ	एक प्रकृति है, एक पुरुष है, अगणित रूपाकार - कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।	1
	अथवा	
	जलता है यह जीवन-पतंग जीवन कितना?अति लघु क्षण, ये शलभ पुंज से कण-कण, तृष्णा वह अनलशिखा, बन- जलने की क्यों न उसे उमंग? है ऊँचा आज मगध-शिर पदतल में विजित पड़ा गिर, दूरागत क्रंदन-ध्वनि फिर क्यों गूँज रही है अस्थिर- कब विजयी का अभिमान भंग? यह सुख कैसा शासन का? शासन रे मानव मन का! गिरि-भार बना-सा तिनका, यह घटाटोप दो दिन का- फिर रवि-शशि किरणों का प्रसंग! यह महादंभ का दानव, पीकर उमंग का आसव, कर चुका महाभीषण रव, सुख दे प्राणी को मानव तज विजय-पराजय का कुरंग!	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	क. जीवन की तुलना पतंगे से क्यों की गई है?	1
	ख. 'विजय' और 'विजित' शब्दों का प्रयोग किसके लिए किया गया है?	1
	ग. वास्तविक शासन कौन-सा है?	1
	घ. 'महादंभ का दानव' किसे कहा है?	1
	ङ 'रवि', 'शशि' शब्दों के एक-एक पर्यायवाची शब्द लिखिए।	1
	खण्ड 'ख'	**25**
3.	**निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर लगभग 400 शब्दों में एक निबंध लिखिए :**	**10**
	क. कर्म ही पूजा है।	
	ख. एक कामकाजी औरत की शाम।	
	ग. मानव अस्तित्व के लिए वृक्षारोपण।	
4.	**दिनोंदिन बिगड़ती कानून व्यवस्था की समस्या के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए पुलिस कमिश्नर को पत्र लिखिए।**	**5**
	अथवा	
	बिजली का मीटर खराब होने की सूचना देते हुए दिल्ली विद्युत बोर्ड के मुख्य अधिकारी को पत्र लिखिए।	
5.	**भारत में इंटरनेट पत्रकारिता के विकास पर एक टिप्पणी लिखिए।**	**5**
	अथवा	
	पत्रकारिता के प्रकार बताते हुए पत्रकारिता में साक्षात्कार का महत्त्व समझाइए।	
6.	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में लिखिए -**	**5**
	क. विज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही भारत की किन्हीं दो संस्थाओं के नाम लिखिए।	
	ख. रेडियो समाचार की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।	
	ग. भारत में प्रथम छापाखाना कब और कहाँ खुला?	
	घ. फीचर के किन्हीं दो प्रकारों के नाम लिखिए।	
	ङ पत्रकारों के किन्हीं दो प्रकारों के नाम लिखिए।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खण्ड 'ग'	**55**
7	**निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -**	**8**
	1947 के बाद से इतने लोगों को इतने तरीकों से आत्मनिर्भर मालामाल और गतिशील होते देखा है कि अब जब आगे कोई हाथ फैलाता है पच्चीस पैसे एक चाय या दो रोटी के लिए तो जान लेता हूँ। मेरे सामने एक ईमानदार आदमी, औरत या बच्चा खड़ा है मानता हुआ कि हाँ मैं लाचार हूँ, कंगाल या कोढ़ी या मैं भला चंगा हूँ और कामचोर और एक मामूली धोखेबाज। लेकिन पूरी तरह तुम्हारे संकोच, लज्जा, परेशानी या गुस्से पर आश्रित तुम्हारे सामने बिल्कुल नंगा, निर्लज्ज और निराकांक्षी। मैंने अपने को हटा लिया है हर मोड़ से मैं तुम्हारा विरोधी, प्रतिद्वंद्वी या हिस्सेदार नहीं मुझे कुछ देकर या न देकर भी तुम कम-से-कम एक आदमी से तो निश्चिंत रह सकते हो। अथवा सिंधु तरयो उनको बनरा तुम पै धनु रेख गई न तरी। बाँधोई बाँधत सो न बन्यो उन वारिधि बाँधिके बाट करी। श्री रघुनाथ-प्रताप की बात तुम्हें दसकंठ न जानि परी। तेलनि तूलनि पूँछि जरी न जरी जरी लंक जराइ जरी।।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
8	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए-** (3+3) क. सत्य की पहचान हम कैसे करें? 'सत्य' कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। ख. 'रहि चकि चित्रलिखी-सी' - पंक्ति का मर्म तुलसीदास के 'पद' कविता शीर्षक के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। ग. 'सरोज-स्मृति' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।	6
9	**निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-** (3+3) क. सब जाति फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी। निघटी रुचि मीचु घटी हूँ घटी जगजीव जतीन की छूटी चटी। ख. जननी निरखति बान धनुहियाँ। बार-बार उर नैननि लावति प्रभुजू की ललित पनहियाँ। कबहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगावति कहि प्रिय वचन सवारे। ग. यह प्रकृत, स्वयंभू, ब्रह्म, अयुतः इसको भी शक्ति दे दो यह दीप, अकेला, स्नेह भरा है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति दे दो।	6
10	**निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -** धर्म के रहस्य जानने की इच्छा प्रत्येक मनुष्य न करे, जो कहा जाए वही कान ढलकाकर, सुन ले, इस सत्ययुगी मत के समर्थन में घड़ी का दृष्टांत बहुत तालियां पिटवाकर दिया जाता है। घड़ी समय बतलाती है। किसी घड़ी देखना जानने वाले से समय पूछ लो और काम चला लो। यदि अधिक करो तो घड़ी देखना स्वयं सीख लो किंतु तुम चाहते हो कि घड़ी का पीछा खोल कर देखें, पुरजे गिन, उन्हें खोलकर फिर जमा दें, साफ करके फिर लगा लें - यह तुमसे नहीं होगा। तुम उसके अधिकारी नहीं हो। अथवा यदि समाज में मानव संबंध वही होते, जो कवि चाहता है, तो शायद उसे प्रजापति बनने की जरूरत न पड़ती। उसके असंतोष की जड़ ये मानव संबंध ही हैं। मानव-संबंधों से परे साहित्य नहीं है। कवि जब विधाता पर साहित्य रचता है, तब उसे भी मानव संबंधों की परिधि में खींच लाता है। इन मानव-संबंधों की दीवाल से ही हेमलेट की कवि सुलभ सहानुभूति टकराती है और शेक्सपियर एक	6

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	महान ट्रेजडी की सृष्टि करता है। ऐसे समय जब समाज के बहुसंख्यक लोगों का जीवन इन मानव संबंधों के पिंजड़े में पंख फड़फड़ाने लगे, सींकचे तोड़कर बाहर उड़ने के लिए आतुर हो उठे, उस समय कवि का प्रजापति रूप और भी स्पष्ट हो उठता है। वह समाज के दृष्टा और नियामक के मानव-विहग से क्षुब्ध और रुद्ध स्वर को वाणी देता है। वह मुक्त गगन में गीत गाकर उस विहग के पैरों में नई शक्ति भर देता है।	
11	**निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए** - (4+4)	8
	क. 'प्रेमधन की छाया-स्मृति' पाठ के आधार पर शुक्लजी ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व की किन-किन विशेषताओं का वर्णन किया है?	
	ख. 'लघुकथाएँ' पाठ के आधार पर शेर के मुँह और रोजगार के दफ्तर के मध्य क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए।	
	ग. 'जहाँ कोई वापसी नहीं' पाठ में लेखक 'निर्मल वर्मा' ने गाँव के खेतों में क्या दृश्य देखा?	
12	**सूर्यकांत त्रिपाठी निराला** अथवा **जयशंकर प्रसाद** का जीवन-परिचय, रचनाएँ तथा काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।	6
	अथवा	
	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी अथवा **रामविलास शर्मा** का जीवन-परिचय, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ तथा भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।	
13	**किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए** - (3+3+3)	9
	क. 'सूरदास की झोंपड़ी' उपन्यास के प्रमुख पात्र 'सूरदास' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।	
	ख. 'पर्यावरण संरक्षण' के लिए हमारा क्या दायित्व है?	
	ग. 'आरोहण' कहानी की मूल संवेदना लिखिए।	
	घ. 'बिस्कोहर की माटी' पाठ किस रचना का अंश है?ग्रामीणों की किन-किन विषमताओं का वर्णन किया है?	
14	**'आरोहण' पाठ के आधार पर 'पर्वतारोहण' की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।**	6
	अथवा	
	'अपना मालवा' - पाठ के आधार पर-विकास की औद्योगिक समस्या उजाड़ की अपसभ्यता है, खाऊ-उजाड़ सभ्यता के संदर्भ में हो रहे पर्यावरण के विनाश पर प्रकाश डालिए।	

हिन्दी ऐच्छिक प्रतिदर्श प्रश्न पत्र-2

(अंक योजना)

कक्षा- बारहवीं

समय - 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खंड 'क'	
1.	**शीर्षक :** परियोजना का स्वरूप।	1
2.	परियोजना शिक्षा का बहुत महत्त्वपूर्ण अंग है। यह एक पूर्ण विचार योजना होती है। इसे तैयार करने में आनंद मिलता है।	2
3.	शैक्षिक परियोजना में संबंधित विषय पर तथ्यों को जुटाते हुए, चित्र इकट्ठे करके एक स्थान पर चिपकाए जाते हैं। इन नई-नई बातों की जानकारी दी जाती है।	2
4.	परियोजना हमें हमारी समस्याओं का निदान प्रदान करना है। इसे तैयार करने में हमें खेल जैसा आनंद मिलता है।	2
5.	परियोजना कई प्रकार से तैयार की जाती है। हर व्यक्ति इसे अपने ढंग से तैयार कर सकता है। परियोजनाएँ दो प्रकार की होती है : (क) समस्या का निदान करने वाले (ख) विषय की समुचित जानकारी देने वाली परियोजना।	2
6.	समस्या का समाधान करने वाली परियोजना में संबंधित समस्या से जुड़े सभी तथ्यों पर प्रकाश डाला जाता है और समस्या समाधान के सुझाव भी दिए जाते हैं।	2
7.	हर व्यक्ति का काम करने का एक अलग तरीका होता है। उसकी अन्य आदतों की तरह उसका परियोजना कार्य भी दूसरों से अलग होता है।	1
8.	**विशेषण**	
	(i) शिक्षा - शैक्षिक	1
	(ii) संबंध - संबंधित	
9.	किसी विषय विशेष से संबंधित चित्रों को विषयानुरूप चिपकाना फोटो फीचर परियोजना कहलाता है।	1
10.	**पर्यायवाची शब्द**	1
	(i) देश - मुल्क, वतन	
	(ii) दुनिया - जग, जगत	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
2.	**अपठित काव्यांशों पर आधारित प्रश्नोत्तर**	
क.	भिन्न देशों की धरती का विभाजन करने वाले के लिए आकाश, हवा, पानी व आग का विभाजन करना असंभव है।	1
ख.	देशों की भिन्नता को महत्व न देने के लिए कहा गया है। इस धरती पर आकाश, आग, पानी, हवा, सूर्य, चन्द्रमा तथा प्रकृति आदि एक हैं।	1
ग.	'अनल' का अर्थ है - आग तथा अनिल का अर्थ है - हवा तथा आग मनुष्य की संघर्ष शक्ति की परिचायक है।	1
घ.	कवि के विचार में, जन्मभूमि का विस्तार सारी धरती पर है। यह दूर-दूर तक फैला हुआ है।	1
ङ.	इस कथन का आशय है कि धरती पर एक ही प्रकृति है, पुरुष भी एक है, परन्तु उसके रूप भिन्न-भिन्न हैं।	1
	अथवा	
क.	जिस प्रकार पतंगा ज्योति में जलकर अपने प्राण दे देता है, उसी प्रकार मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अपना जीवन नष्ट कर देता है।	1
ख.	**'विजयी'** शब्द का प्रयोग मगध व **'विजित'** शब्द का प्रयोग कलिंग के लिए किया गया है।	1
ग.	वास्तविक शासन सत्ता का नहीं, मन का है।	1
घ.	'महादंभ का दानव' 'अहंकार' को कहा गया है। जिसके कारण मनुष्य दूसरों को अपने अधीन रखना चाहता है।	1
ङ	**पर्यायवाची शब्द :** रवि - सूर्य शशि - चाँद	1
	खंड 'ख'	
3.	**किसी एक विषय पर 400 शब्दों में निबंध अपेक्षित है।**	**10**
	भूमिका	1
	विषय वस्तु का सुसम्बद्ध प्रतिपादन	6
	उपसंहार	1
	भाषा की उपयुक्तता और अभिव्यक्ति शैली	2

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
क.	**कर्म ही पूजा है** व्यक्ति की सफलता के लिए कर्मठ होना आवश्यक है। उसे कर्म में ही विश्वास करना चाहिए। जिस व्यक्ति में आत्म-विश्वास है, वह व्यक्ति जीवन में कभी असफल नहीं हो सकता है, हाँ जो व्यक्ति हर बात के लिए दूसरों का मुँह ताकता है, उसे अनेक बार निराशा का सामना करना पड़ता है। अकर्मण्य व्यक्ति ही भाग्य के भरोसे बैठता है। कर्मवीर तो बाधाओं की उपेक्षा करते हुए अपने भुजबल पर विश्वास रखते हैं। उसके बारे में कविवर हरिऔध जी का कहना है - ''देखकर बाधा विविधि बहु विघ्न घबराते नहीं रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नहीं।'' केवल आलसी व्यक्ति ही सदैव दैव-दैव पुकारा करते हैं। आलसी लोगों का गुरूमंत्र है - ''अजगर करै न चाकरी, पंछी करे न काम दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।'' जीवन की सफलता केवल पुरुषार्थ में ही निहित है। स्वावलंबी व्यक्ति सदैव अपने भरोसे रहता है। वह तो असंभव को भी संभव बना देते हैं- ''पर्वतों को काटकर सड़के बना देते हैं वे सैकड़ों मरुभूमि में नदियां बहा देते हैं वे।'' विश्व का इतिहास ऐसे कर्मयोगियों से भरा पड़ा है, जिन्होंने कर्म में रत रहकर सफलता की उच्च सीमा को छू लिया। जो पुरुष उद्यमी एवं स्वावलंबी होते हैं, वे निश्चय ही सफल होते हैं। ''कायर मन कह एक अधारा, दैव-दैव आलसी पुकारा।'' कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी 'पुजारी, भजन, पूजन और साधन' कविता में बताया है कि देवालय में बैठना ईश्वर की सच्ची उपासना नहीं है। कवि की मान्यता है कि देवालय के किसी कोने में बैठकर पूजा करना व्यर्थ है। देवता देवालय में निवास नहीं करता है। जब पुजारी श्रमिकों के साथ पसीना बहाएगा तभी वह ईश्वर की सच्ची पूजा कर पाएगा। कर्म करके ही ईश्वर की उपासना हो सकती है, अत: किसान को मजदूरों के पसीने के साथ पसीना बहाना चाहिए। इसी से प्रभु प्रसन्न होते हैं।	
ख.	**एक कामकाजी औरत की शाम** भारत एक कृषि प्रधान एवं गांवों का देश है। यहाँ के अधिकांश लोग कृषि पर निर्भर रहते हैं, परन्तु शहर में जीवन यापन करने वाले लोग भी कम संख्या में नहीं हैं। जिस पर स्त्री-पुरुष दोनों मिलकर	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	खेतों में काम करते हैं उसी प्रकार शहर के स्त्री-पुरुष दोनों ही अपने-अपने कार्यालयों में काम करते हैं, तभी शहरी जिंदगी सुचारू रूपे चल पाती है। भीड़-भीड़ वाले व्यस्त महानगर में प्रातः एवं सायं भागमभाग मची रहती है। शहर की महिलाएँ जैसे-तैसे भीड़ के चक्रव्यूह को तोड़कर कार्यालय पहुँचती है। दिन भर काम करके थकी हारी जब घर की ओर मुख करती हैं तब उन्हें रात के भय के कारण शीघ्रता करनी पड़ती है। भीड़ भरे चौराहे, ठसाठस भरी बसें, रेल गाड़ियाँ तथा ऑटो रिक्शे, क्या करें? कैसे चढ़े इनमें? आइए देखिए एक कामकाजी औरत की बेचैनी एवं तनाव भरी शाम का दृश्य। बस स्टैंड पर चारों ओर भीड़, बस का इंतजार और अनेक चिंताएँ। लो आ गई बस, ठसाठस भरी। महिला इसमें सवार होने के लिए तैयार है। एक काँधे पर लटका पर्स तथा दूसरे हाथ में एक भरा थैला लटकाए जिसमें शाम की सब्जी, छोटे बच्चों के लिए बिस्कुट, टॉफी, पानी की खाली बोतल तथा खाली टिफिन कैरियर आदि दूसरे हाथ से बार-बार गाड़ी में चढ़ने का प्रयास करती है कभी गाड़ी आगे तो कभी स्वयं आगे निकल जाती है। कभी गाड़ी छूट जाती हे, तो कभी गाड़ी से हाथ छूट जाता है। जैसे-तैसे भागीरथ प्रयास करके गाड़ी में सवार हो जाती है। भीड़ में सभी ओर से दबी हुई अपने को बचाती हुई घर की व्यवस्था, रोटी, कपड़ा और मकान का चिंतन करती हुई धीरे-धीरे गाड़ी के अगले गेट तक आती है। इस बीच कभी उसकी चेन और कभी उसका पर्स उसका चोरी कर लिया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक कामकाजी औरत नित्यप्रति इसी भागमभाग के साथ कार्यालय से अपने घर की ओर दौड़ती है जहाँ उसके बच्चे चिड़ियों के बच्चों की तरह चीं-चीं कर रहे होते हैं। फिर जुट जाती है उसी दैनिक प्रक्रिया में जो रोटी, कपड़ा और मकान से जुड़ी होती है धन्य है। ऐसी औरत जो वीरांगना की तरह एक युद्ध नित्य प्रति जीतती है।	
ग.	**मानव अस्तित्व के लिए वृक्षारोपण आवश्यक** प्रकृति मानव की सच्ची सहचरी है, इसने मनुष्य के जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाया है। प्रकृति के आँगन का सबसे सुंदर अंग वृक्ष है। वृक्षों की महिमा को जानकर ही उसे परोपकार के उपमान के रूप में स्वीकार किया गया है। चिकित्सा के क्षेत्र में वृक्षों का अभूतपूर्व महत्व है। छोटे से तुलसी के पौध में अनेक रोगों का उपचार करने की अद्भुत क्षमता निहित है। सृष्टि के निर्माण में वृक्षों की हरियाली की महिमा अवर्णनीय है। आज हमारे देश के सम्मुख कई समस्याएँ हैं, जैसे - प्रदूषण, जनसंख्या, आतंकवाद आदि। वायु प्रदूषण एक महत्वपूर्ण समस्या है। जंगलों का सफाया ही इस प्रदूषण का मुख्य कारण है। वृक्षों का मानव के अस्तित्व को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान है। वृक्ष ही अशुद्ध वायु अपने में लेकर शुद्ध वायु का विसर्जन करते हैं, ताकि मानव की श्वास-क्रिया बनी रहे। वायु-प्रदूषण को तभी रोका जा सकता हे, जब हम अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें। अधिक वृक्षों को लगाकर ही हम बाढ़ अथवा सूखे जैसी समस्याओं को रोक सकते हैं।। वन संरक्षण की नीति का पालन करते हुए कृषि अर्थव्यवस्था की रक्षा की जा सकती है। वनों के अविवेकपूर्ण व्यापारिक दोहन के फलस्वरूप जन-धन की महान क्षति हुई है। यदि हमें प्राकृतिक संतुलन और स्थायित्व को पुनः प्राप्त करना है तो वनों का विकास होना	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	चाहिए न कि विनाश। इस संदर्भ में यह नारा बुलंद हुआ है – ''पेड़ लगाएँ स्वर्ग बनाएँ, धरती हिन्दुस्तान की हरी भरी हो यह वसुंधरा, मेरे देश महान की''।। पर्यावरण की रक्षा संबंधी यह चेतना परिसंवादों में होने वाले बुद्धि विलास की निष्पत्ति मात्र नहीं है, बल्कि देश के कई भागों में हो रहे 'चिपको', 'मुंबई बचाओ' और 'मूक घाटी बचाओ' जैसे पारिस्थितिकीय जन-आंदोलन की फलश्रुति है। इन आंदोलन ने पर्यावरण के लिए पैदा खतरों को उजागर कर जनता को गलत नीतियों के खिलाफ उठ खड़ा होने के लिए प्रेरित किया और प्रतिरोध के शांतिमय आंदोलनों का रूप लिया। 'चिपको आंदोलन' पेड़ों से चिपके रहने की तथा उन्हें न काटने की अद्भुत मिसाल है। इस आंदोलन ने एक बुनियादी प्रश्न उठाया है कि, क्या जंगल की मुख्य पैदावार मिट्टी, पानी और प्राणवायु है या आज की प्रचलित सरकारी वन प्रबंध की कथित वैज्ञानिक नीति के अनुसार औद्योगिक कच्चा माल और लकड़ी है? क्या हम विदेशी पूँजी कमाने के लिए वन-संपदा का निर्यात कर विनाश की नियति तो नहीं गढ़ रहे हैं?यह देशद्रोह है। इसी प्रकार मुंबई के नागरिकों ने सड़कों और मकानों के विस्तार के लिए पेड़ों को काटने पर चुनौती दी और उन्होंने सांताक्रूज में लिकिंग रोड पर पेड़ों की रक्षा की। यह चुनौती ही धीरे-धीरे अन्य राज्यों में फैल गयी तथा आम नागरिकों को अपनी वृक्ष-संपदा को बचाए रखने के लिए प्रेरित किया। यदि हम स्वाश्रयी और स्थायी विकास की नीतियों को अपनाने का दावा करते हैं और प्रकृति के साथ सामंजस्य की उपेक्षा करते हैं, तो एक दिन ऐसा जरूर आएगा, जब प्रकृति के धैर्य की सीमा टूट जाएगी। वह अपना प्रतिशोध बाढ़ और सूखे जैसी विनाशकारी, समस्याओं से लेगी। अतः हमें प्रकृति और मानव के क्रियाकलापों में एक सामंजस्य रखना होगा तथा कहना होगा – आओ हम सत्कार करें। पेड़ लगाकर धरती माँ का, हम अनुपम श्रृंगार करें। वृक्ष केवल हमारी जरूरत ही नहीं, बल्कि यह अपनी सुदंरता से पूरे वातावरण को स्वच्छ व मनोरम बनाए रखते हैं। इन्हीं से हमें दृढ़ इच्छाशक्ति की प्रेरणा मिलती है। वर्षा, आंधी के प्रकोप से भी पेड़ डरते नहीं और डट कर उनका सामना करते हैं। वृक्षों की हरियाली मनुष्य को सकारात्मक सोच तो देती ही है, साथ-साथ प्रसन्नता भी देती है। सरकार के साथ हमें भी मिलकर अधिक संख्या में वृक्षारोपण करना चाहिए। प्रकृति की इस अमूल्य देन को संभाल कर रखने से ही मानव जाति का अस्तित्व बना रहेगा। किसी ने ठीक ही कहा है – आओ मिलकर वृक्ष लगाएँ जीवन में खुशहाली लाएँ	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	संकटों को हम दूर भगाएँ प्रकृति से हम प्रेम बढ़ाएँ।	
4.	**पत्र लेखन**	**5**
	पत्र का प्रारूप – औपचारिकताएँ	2
	विषय वस्तु का प्रतिपादन	2
	भाषा की शुद्धता	1
	सेवा में, श्रीमान् पुलिस-आयुक्त महोदय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली विषय- **दिन-प्रतिदिन बिगड़ती कानून व्यवस्था की समस्या के समाधान हेतु।** मान्यवर, विनम्रता पूर्वक निवेदन यह है कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में कानून एवं सामाजिक नियमों एवं आदर्शों की स्थिति दिनों-दिन बिगड़ती जा रही है। असामाजिक तत्व खुले आम हथियार लेकर लूट-पाट, हत्या, अपहरण तथा बलात्कार जैसी घिनौनी हरकतों में लिप्त हो रहे हैं। कानून का खौफ किए बगैर वे अपनी धृष्टता का परिचय देते हुए दर्दनाक घटनाओं को अंजाम देते रहते हैं। कानून हर समय उनकी मुट्ठी में रहता है। सामाजिक नियमों की परवाह होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। ऐसे में समाज के सभ्य, शिष्ट एवं भोले-भाले लोगों विशेषकर महिलाओं का जीवन कष्टपूर्ण एवं भयपूर्ण हो गया है। पहले तो इनकी शिकायत करने पर हत्या होने या अंजाम भुगतने का डर बना रहता है, दूसरे यदि कोई साहस करके इनकी शिकायत करने क्षेत्रीय पुलिस कार्यालय जाता है तो वहाँ शिकायत ही नहीं लिखी जाती। ऐसे में हम सभी लोग असहाय होकर लौट आते हैं। 'परित्राणाय साधूनाम' तथा 'हम हैं आपके साथ सदैव' वाली सुंदर उक्तियाँ भ्रामक एवं दिखावा-सी प्रतीत होने लगी है। अतः आपसे निवेदन है कि अपने अधीनस्थ अधिकारियों को सख्त आदेश देकर दिल्ली जैसे सुंदर एवं विश्व विख्यात शहर को इन असामाजिक तत्वों से मुक्त कराने की कृपा करें। सधन्यवाद! भवदीय मनीष शर्मा अध्यक्ष, क्षेत्र सुधार समिति क.ख.ग. पुरम्, दिल्ली दिनांक	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	अथवा	
4.	सेवा में कार्यपालक अभियंता विद्युत बोर्ड, पीतमपुरा, नई दिल्ली–110088 विषय: **बिजली के खराब मीटर की शिकायत हेतु।** महोदय, इस पत्र के द्वारा मैं आपका ध्यान अपने बिजली के मीटर की ओर दिलाना चाहता हूँ। मैं पीतमपुरा का निवासी हूँ। विगत तीन महीने से मेरे मकान में लगा बिजली का मीटर बंद पड़ा है। इसके विषय में मैंने मीटर रीडर से अनेक बार रिपोर्ट की है, लेकिन उन्होंने अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की। अनुमान के आधार पर ही विद्युत बोर्ड की ओर से बिल दिया जाता है जिसे मैं जमा करवा देता हूँ, लेकिन वास्तव में मेरे घर में बिजली की खपत कितनी होती है, इसका आकलन सही नहीं हो पा रहा है। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप इस मीटर को ठीक करवाने की व्यवस्था करवाएँ क्योंकि मैं अनुमानित अतिरिक्त व्यय वहन करने में असमर्थ हूँ। मेरे पत्र के साथ गत तीन महीनों के बिलों की प्रतियाँ संलग्न हैं। धन्यवाद! भवदीय (हस्ताक्षर .....) मधुर दत्ता क.ख.ग. नगर, दिल्ली दिनांक :.....	
5.	मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे समष्टि रूप में समाज, देश, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त भावों, विचारों, सूचनाओं का आदान–प्रदान करने के लिए कुछ माध्यमों की आवश्यकता पड़ती है। जिन माध्यमों द्वारा सूचनाओं व विचारों को जनता तक पहुँचाया जाता है, उन्हें जनसंचार माध्यम की संज्ञा दी जाती है। जनसंचार के माध्यमों में इंटरनेट एक सशक्त माध्यम है। इंटरनेट संसार का सबसे नवीन, लोकप्रिय माध्यम है। यह एक ऐसा माध्यम है, जिसमें प्रिंट माध्यम, रेडियो, टेलीविजन, पुस्तक, सिनेमा, पुस्तकालय सभी के गुण समाहित हैं। इंटरनेट ने संचार की नवीन संभावनाएँ व अनुसंधान के नए मार्ग प्रशस्त किए हैं।	**5**

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	इंटरनेट पर समाचार-पत्र का प्रकाशन ही इंटरनेट पत्रकारिता कहलाता है। यह दो रूपों में होती है। इंटरनेट के स्वरूप व विकास के आधार पर इसका समय (काल) विभाजन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है - (i) प्रथम चरण का समय सन् 1982 से 1992 तक (ii) द्वितीय चरण का समय सन् 1993 से 2001 तक (iii) तृतीय चरण का समय सन् 2002 से अब तक भारत में इंटरनेट दूसरे चरण पर है। भारत में इसका पहला चरण 1993 से तथा दूसरा चरण 2003 से शुरू माना जा सकता है। वर्तमान समय में पत्रकारिता की दृष्टि से 'हिंदुस्तान टाइम्स', 'टाइम्स ऑफ इंडिया','इंडियन एक्सप्रेस', 'हिंदू', ट्रिब्यून, स्टेट्समैन, पॉयनियर, एनडीटीवी, जी न्यूज तथा आज तक की साइटें श्रेष्ठ व उपलब्ध हैं। भारत में अपने पूर्ण सामर्थ्य के साथ तीन साइटों ने वेब पत्रकारिता के रूप में अपने कदम जमाए हैं - रीडिफ डॉटकॉम, इंडियाइंफोलाइन व सीफी। रीडिफ भारत की प्राइम साइट है, जो विशुद्ध पत्रकारिता करने का श्रेय प्राप्त कर चुकी है। हिन्दी में नेट पत्रकारिता का प्रारंभ वेब दुनिया के साथ हुआ। प्रभासाक्षी समाचार-पत्र प्रिंट रूप में उपलब्ध नहीं है। यह केवल इंटरनेट पर ही उपलब्ध है। आज पत्रकारिता की दृष्टि से हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ साइट बीबीसी है। हिन्दी वेब संसार में 'अनुभूति' 'अभिव्यक्ति', हिन्दी नेस्ट तथा सराय जैसी पत्रिकाएँ उच्च कोटि का कार्य कर रही हैं। हिन्दी वेब पत्रकारिता में सबसे बड़ी बाधा हिन्दी के फौंट की है। आज तक कोई एक मानक 'की-बोर्ड' निर्मित नहीं हो पाया हैं डायनमिक फौंट के अभाव में अधिकतर हिन्दी की साइटें खोलने में हम सक्षम नहीं हो पाते। जब तक की-बोर्ड का मानकीकरण नहीं होगा, तब तक हमें ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। अथवा पत्रकारिता के विकास में जिज्ञासा का भाव प्रबल होता है। इसका संबंध समसामयिक और वास्तविक घटनाओं व समस्याओं से है। इसका मुख्य उद्देश्य पाठकों को समाज, देश तथा विदेश में हो रही गतिविधियों का परिचय देकर जागरूक बनाना है। इसके प्रमुख सिद्धान्त हैं - तथ्यों की शुद्धता, वस्तुपरकता, निष्पक्षता, संतुलन एवं स्रोत। पत्रकारिता के प्रमुख प्रकार हैं - खोजपरक पत्रकारिता, विशेषीकृत - पत्रकारिता, वाचडॉग पत्रकारिता, एडवोकेसी पत्रकारिता तथा वैकल्पिक पत्रकारिता। पत्रकारिता में साक्षात्कार लेने हेतु पत्रकार यह सुनिश्चित करता है कि किस व्यक्ति विशेष से क्या-क्या बातें करनी हैं और वह उनके उत्तर क्या देता है। इससे जनता में उसके प्रति बनी भावना या दुर्भावना	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	का स्पष्टीकरण हो जाता है। इस साक्षात्कार शैली से व्यक्ति विशेष के मनोभावों को प्रश्नोत्तर शैली में जन-जन तक पहुँचाकर उनकी जिज्ञासा को शांत किया जाता है। पत्रकारिता पारदर्शक होती है और होनी भी चाहिए। इसके वाहक यथार्थ को जन-सामान्य तक पहुँचाते है। ऐसी पारदर्शक तथा यथार्थ के धंरातल पर खड़ी पत्रकारिता की अपनी एक साख बन जाती है, जो साक्षात्कार में विश्वास प्राप्त कर लेती है। पत्रकारिता की इस साख को बनाए रखने के लिए पाठक या श्रोताओं को सत्य घटना से साक्षात्कार कराना चाहिए। इसमें मनगढंत चुटीली खबरों से बच जाते हैं, दूसरे अपने ग्राहकों के ज्ञान विज्ञान के साथ-साथ मनोरंजन से संबंधित उनकी जरूरतों का ध्यान रखा जा सकता है। इसकी भाषा-सहज, सरल, रोचक व प्रभावशाली होती है।	
6	(i) विज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही भारत की दो संस्थाओं के नाम निम्नलिखित हैं -	1
	(क) डिफेंस रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट ऑर्गनाइजेशन।	
	(ख) सेंट्रल स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन	
	(ii) रेडियो समाचर की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -	1
	(क) रेडियो समाचार मूलतः एक रेखीय (लीनियर) माध्यम है।	
	(ख) रेडियो समाचार लेखन की संरचना उलटा पिरामिड शैली पर आधारित है।	
	(iii) भारत में प्रथम छापाखाना सन् 1556 में, गोवा राज्य में खुला था।	1
	(iv) फीचर के दो प्रकार निम्नलिखित हैं -	1
	(क) खोजपरक फीचर	
	(ख) व्यक्ति चित्र फीचर	
	(v) पत्रकारों के दो प्रकारों के नाम निम्नलिखित हैं -	1
	(क) पूर्णकालिक पत्रकार	
	(ख) अंशकालिक एवं स्वतंत्र पत्रकार	
7	1947 ..... रह सकते हो।	**8**
	काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या	
	संदर्भ - कविता और कवि का नाम	1
	कविता का प्रसंग	1
	व्याख्या - व्याख्येय बिंदुओं का स्पष्टीकरण	4
	विशेष - काव्य पंक्तियों की शिल्पगत विशेषताओं का उल्लेख	1
	भाषा शुद्धता और अभिव्यक्ति शैली	1

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'अंतरा भाग-2' में संकलित विष्णु खरे की कविता 'एक कम' से अवतरित हैं। इस कविता के माध्यम से कवि ने स्वाधीनता के बाद भारतीय समाज में प्रचलित हो रही जीवन शैली को रेखांकित किया है। इससे पूरे देश का या कहें कि आस्थावान, ईमानदार और संवेदनशील जनता का मोहभंग हुआ है। आपसी विश्वास, भाईचारे का स्थान धोखाधड़ी और आपसी खीचतान ने ले लिया हैं ऐसे माहौल में कवि स्वयं को असमर्थ पाते हुए भी ईमानदारों के प्रति अपनी सहानुभूति स्पष्ट रूप से रखता है। वह किसी के जीवन-संघर्ष में बाधक नहीं बनना चाहता। इस प्रकार वह कम से कम एक व्यवधान तो कम कर सकता है। व्याख्या – कवि कहता है कि मैंने 1947 के बाद (स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद) बहुत से लोगों को अपने-अपने तरीकों से आत्म-निर्भर होते देखा है। वे लोग गलत हथकंडे अपनाकर मालामाल हो गए हैं। मैंने उन्हें उन्नति के पथ पर आगे बढ़ते देखा है। लोगों ने आर्थिक संपन्नता के लिए झूठ, छल-कपट, बेईमानी, धोखाधड़ी आदि का रास्ता अपना लिया। चारों ओर स्वार्थपरता का वातावरण बनता चला गया। इस माहौल में ईमानदार लोग दूसरों के आगे हाथ फैलाने को विवश हो गए हैं। जब कोई पच्चीस पैसे, एक चाय या दो रोटी के लिए हाथ फैलाता है, तब कवि जान लेता है कि उसके आगे हाथ फैलाने वाला व्यक्ति ईमानदार आदमी, औरत या बच्चा खड़ा है। उसके हाथ फैलाने में यह स्वीकार करने का भाव है कि मैं विवश हूँ, एक कंगाल या कोढ़ी हूँ। अथवा यह भाव होता है कि मैं अच्छा भला स्वस्थ हूँ कामचोर और एक साधारण धोखेबाज हूँ। तात्पर्य यह है कि भीख माँगने वाला या तो वास्तव में अत्यंत लाचार होता है अथवा स्वस्थ होते हुए भी कामचोर या छोटा-मोटा धोखेबाज हो सकता है। पर वह अपना असली रूप बिना किसी धोखे के प्रकट कर देता है। कवि कहता है कि उस याचक के मन में यह स्वीकृति का भाव भी होता है कि मैं पूर्ण रूप से तुम्हारे संकोचपूर्वक या लज्जा के साथ अथवा परेशान होकर या क्रोधित होकर दिए गए दान के सहारे ही जीवित हूँ अथवा उसका जीवन दूसरों के दान पर ही निर्भर है, चाहे दान देते समय मनुष्य के मन में कैसी भी भावना रही हो। इस तरह हाथ फैलाते हुए वह यह भाव प्रकट कर देता है कि मैंने तुम्हारे सामने, आत्मसम्मान को खो दिया है, मैंने लज्जा का भी त्याग कर दिया है और मैंने सारी आकांक्षाओं को भी छोड़ दिया है। इस प्रकार मैंने हर प्रतिस्पर्धा से स्वयं को हटा लिया है। मैं तुम्हारा विरोधी, प्रतिद्वंद्वी या हिस्सेदार नहीं हूँ अर्थात् धन कमाने की लालसा, उन्नति के रास्ते से स्वयं को हटा लिया है। मैं तुम्हारी राह का बाध क नहीं हूँ। तुम चाहे कुछ दो या न दो परन्तु कम से कम एक आदमी से तो चिंतामुक्त रह सकते हो अर्थात् तुम्हें मुझसे कोई खतरा नहीं है। विशेष – • आजादी के बाद की स्थिति से मोहभंग हुआ है। • व्यंजना शक्ति का प्रयोग हुआ है। • पच्चीस पैसे, कंगाल या कोढ़ी, नंगा निर्लज्ज, हर होड़ में अनुप्रास अलंकार है।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	• शब्द-चयन अत्यंत सटीक है। • कविता मुक्त छंद में है। अथवा प्रसंग - प्रस्तुत सवैया हमारी पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग-2 के 'अंगद' नामक शीर्षक से उद्धृत है। इसके रचयिता केशवदास जी है। इस सवैया में भगवान राम के प्रताप से अनभिज्ञ रावण को उसकी पत्नी मंदोदरी अनेक उदाहरण देकर समझा रही है कि राम महाप्रतापी राजा है उनसे शत्रुता मत करो। व्याख्या - रावण की पत्नी मंदोदरी रावण को समझाती तथाश्रीराम के प्रताप का वर्णन करती हुई कहती है कि श्री राम के सेवक हनुमान ने इस बड़े समुद्र को लाँघ लिया था परन्तु तुम से लक्ष्मण द्वारा खींची गई एक रेखा तक नहीं लाँघी गई। तुम बंदर (हनुमान) को बाँधना चाहते थे, परन्तु तुम से वह भी नहीं बाँधा जा सका, जबकि श्री राम के बंदरों ने सागर को बाँध कर,पुल बनाकर रास्ता बना लिया था। मंदोदरी कहती है कि हे दसकंठ रावण! इतना सब कुछ होने पर भी तुम्हें श्रीराम के प्रताप की बात मालूम नहीं पड़ सकी है। तुम तेल और कपड़ों से उस बानर की पूँछ में आग लगाना चाहते थे, वह भी नहीं हो सका उलटे वह पूँछ लंका को ही जला गई। भाव-सौंदर्य - श्री रघुनाथ जी का प्रताप और उनके गुणों को मंदोदरी समझ चुकी थी। वह रावण से शत्रुता त्याग कर समझौता कर लेने में ही भलाई समझने लगी थी। इस सवैया में उसने रावण को यही समझाया है। शिल्प-सौंदर्य 1. अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है। 2. जरी-जतरी में यमक अलंकार है। 3. सवैया छंद है। 4. लक्षणा शब्द शक्ति है। 5. ब्रजभाषा है।	
8	दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित (3+3)	6
क.	सत्य की पहचान के लिए उसे हम अपनी आत्मा में खोजें। सत्य के प्रति संशय का विस्तार होने के बावजूद वह हमारी आत्मा की आंतरिक शक्ति है। हमें निरंतर परिवर्तनों को दृष्टि में रखते हुए सत्य की पहचान करने का प्रयास करना चाहिए। वैसे सत्य का कोई स्थिर रूप या पहचान नहीं है। हमारी अन्तरात्मा ही सत्य की पहचान कराती है।	
ख.	इस पंक्ति का मर्म यह है कि राम का स्मरण करके माता कौशल्या चित्रवत् मन: स्थिति में आ जाती	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	है। वह इधर-उधर हिलती-डुलती तक नहीं। वह चकित-सी रह जाती है। जिस प्रकार चित्र में कोई आकृति स्थिर रहती है, वही दशा कौशल्या की हो गई। जो कौशल्या अभी तक रामकी वस्तुओं को देखकर और राम के बचपन का स्मरण करके मुग्धावस्था में थी, वही राम के वन-गमन को याद करके स्थिर चित्र-सी हो जाती है।	
ग.	'सरोज-स्मृति' कविता एक शोक - गीत है। इसमें कवि अपनी दिवंगत पुत्री सरोज की आकस्मिक मृत्यु पर शोक प्रकट करने के साथ-साथ अपनी विवशता को प्रकट करता है। वह स्वयं को एक पिता के रूप में अकर्मण्य पाता है। वह पुत्री के प्रति कुछ भी न कर पाने को कोसता है। इस कविता के माध्यम से कवि का अपना जीवन-संघर्ष भी प्रकट हुआ है। पिता के रूप में कवि के विलाप में उसे कभी शकुंतला की याद आती है तो कभी अपनी स्वर्गीया पत्नी की। उसे पुत्री के रंग-रूप में अपनी पत्नी के रंग-रूप की झलक मिलती है। कवि पुत्री का पालन-पोषण स्वयं नहीं कर पाया। इसके लिए उसे अपनी ससुराल (सरोज की नानी, मामा-मामी) की शरण में जाना पड़ा। यह भी कवि के मानसिक दु:ख का कारण है। कवि का समस्त जीवन दु:ख की कथा बनकर रह गया और वह उसे कहने में असमर्थता का अनुभव करता है।	
9	**किन्हीं दो का काव्य सौंदर्य अपेक्षित** (3+3)	**6**
	भाव-सौंदर्य शिल्प-सौंदर्य	
क.	यहाँ लक्ष्मण द्वारा पंचवटी के महात्म्य का सुंदर वर्णन किया गया है। लक्ष्मण पंचवटी की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि इस पंचवटी के समीप आते ही दु:ख की चादर फट जाती है अर्थात् सारे दु:ख दूर हो जाते हैं। यहाँ पर कपटी व्यक्ति घड़ी भर नहीं ठहर सकता क्योंकि इसकी अपार शोभा के कारण उसके भाव भी सात्विक हो जाते हैं। यहाँ आकर जगत के प्राणियों की मृत्यु के प्रति रुचि घट जाती है अर्थात् यहाँ आकर कोई भी मरना नहीं चाहता, क्योंकि पंचवटी का सौंदर्य देखकर मनुष्य को अपार आनंद मिलता है। यहाँ तो योगियों की योगावस्था छूट जाती है। इसका कारण यह है कि योग-साधना में जिस प्रकार का आनंद प्राप्त होता है, उससे भी अधिक आनंद पंचवटी के सौंदर्य को निहारने में मिल जाता है। विशेष: 1. पंचवटी की शोभा का मनोहारी चित्रण किया गया है। 2. अलंकार : अनुप्रास, उपमा, रूपक 3. भाषा : ब्रज 4. रस : शांत 5. गुण : प्रसाद ख. जननी ..... सवारे। भाव-सौंदर्य : माता कौशल्या राम के बचपन की चीजों को देखकर और स्मरण करके अत्यंत व्याकुल	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	हो जाती हैं। ये चीजें उनकी वेदना को बढ़ाने में उद्दीपन का काम करती हैं। वे श्रीराम के बचपन के छोटे-छोटे धनुष बाण को देखती हैं। श्रीराम की शैशवकालीन जूतियों को देखकर उन्हें बार-बार अपने हृदय और नेत्रों से लगाती हैं। वे यह भूल जाती हैं कि अब उनके पुत्र श्रीराम यह नहीं हैं और वे पहले की तरह प्रिय वचन बोलती हुई राम के शयन कक्ष में जाती हैं और उन्हें जगाते हुए कहती हैं - हे पुत्र, उठो। तुलसीदास जी का कहना है कि माता कौशल्या की इस स्थिति का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। उनकी दशा तो उस मोरनी के समान है जो प्रसन्न होकर नाचती रहती हैं पर जब अंत में वह अपने पैरों की ओर देखती है तो रो पड़ती हैं। यही दशा कौशल्या की है। विशेष: 1. माता कौशल्या की अर्धविक्षिप्तावस्था का मार्मिक चित्रण हुआ है। 2. वात्सल्य रस का प्रभावी चित्रण है। 3. बार-बार में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार हैं। 4. ब्रज भाषा का प्रयोग है। ग. काव्य-सौंदर्य भाव-सौंदर्य : इन पंक्तियों में कवि ने व्यक्ति के प्रतीक के रूप में दीपक को लिया है। यह बताया गया है कि यह दीपक प्रकृति के अनुरूप है, स्वाभाविक रूप से स्वयं उत्पन्न हुआ है। यह ब्रह्म अर्थात् सच्चिदानंद स्वरूप जगत का मूल है। यह 'अयुत' अर्थात् सबसे पृथक (अलग) अस्तित्व वाला है। दीपक के प्रतीक के द्वारा बताया गया है कि व्यक्ति अपने आप में परिपूर्ण एवं सर्वगुण संपन्न है, पर पंक्ति या समाज में विलय होने पर इसकी सार्थकता एवं उपयोगिता बढ़ जाएगी। यह उसकी सत्ता का सार्वभौमीकरण है - व्यष्टि का समष्टि में विलय है, आत्मबोध का विश्व बोध में रूपांतरण है। शिल्प-सौंदर्य - इन पंक्तियों में दीप की उपमा अनेक वस्तुओं से दी गई है। प्रतीकात्मकता का समावेश है। दीपक व्यक्ति का तथा 'पंक्ति' समाज का प्रतीक है। लाक्षणिकता का प्रयोग दर्शनीय है। 'स्नेह' शब्द में श्लेष अलंकार है। तत्सम शब्दों का प्रयोग है।	
10	गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या	**6**
	संदर्भ -पाठ और लेखक का नाम	1
	पूर्वापर संदर्भ	1

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	व्याख्या –प्रमुख व्याख्येय बिंदुओं का स्पष्टीकरण	3
	विशेष –विशेष टिप्पणी और भाषा शैली गत विशेषताओं का उल्लेख	1
	धर्म के रहस्य ..... नहीं है। प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा रचित लघु निबंध 'सुमिरिनी के मनके' शीर्षक के अंतर्गत संकलित किया गया है। इसमें लेखक ने धर्म के रहस्य को जानने पर धर्म उपदेशकों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों को घड़ी के दृष्टांत द्वारा बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। व्याख्या – धर्माचार्यों का कथन होता है कि प्रत्येक मनुष्य को धर्म के रहस्य के जानने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। यह रहस्य अत्यंत गूढ़ है अत: इसे उन्हीं तक (धर्माचार्यों तक) ही सीमित रहना ठीक है। (क्योंकि वे स्वयं को धर्म का ठेकेदार मानते हैं।) सामान्य लोगों के लिए तो इतना ही काफी है कि उन्हें धर्म के बारे में जितना बताया जाए उसी को कान में ढालकर सुन लें, ज्यादा की इच्छा न करें अर्थात् धर्माचार्य जितना बताना चाहें, वही उनके लिए पर्याप्त हैं। लोग उनकी बातों पर तालियाँ पीट दें, यह काफी है। लेखक यहाँ घड़ी की दृष्टांत (उदाहरण) देता है। घड़ी समय बताती है, धर्माचार्य भी धर्म के बारे में बताते हैं। यदि आपको घड़ी देखना न आता हो तो किसी अन्य घड़ी देखना जानने वाले से समय पूछ सकते हैं, धर्माचार्य भी धर्म के बारे में बताते हैं। घड़ी ठीक करने का काम घड़ीसाज ही कर सकता है। यही उदाहरण वेद-शास्त्र के ज्ञाता धर्माचार्य अपने पक्ष को सही सिद्ध करने के लिए देते हैं। आम आदमी को तो धर्म की जानकारी धर्माचार्यों से ही लेनी चाहिए। उन्हें जिस प्रकार घड़ी के पुर्जों से मतलब नहीं उसी प्रकार धर्म के रहस्यों से भी मतलब नहीं होना चाहिए। विशेष : 1. लेखक ने घड़ी का दृष्टांत देकर धर्माचार्यों पर करारा व्यंग्य किया है। 2. लेखक ने रोचक एवं सुबोध शैली का अनुसरण किया है। अथवा यदि ..... भर देता है। प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ 'रामविलास शर्मा' द्वारा रचित ''यथास्मै रोचते विश्वम्'' से अवतरित हैं। इसमें लेखक ने कवि की निर्माणकारी भूमिका पर प्रकाश डाला है। व्याख्या : लेखक बताता है कि कवि तो प्रजापति के समान समाज का नव-निर्माण करता है। समाज में मानव-संबंध वैसे नहीं है जैसे कवि चाहता है। इन संबंधों को सुधारने के लिए प्रजापति के दायित्व का निर्वाह करना पड़ता है। समाज की वर्तमान स्थिति के प्रति उसके मन में असंतोष रहता हैं साहित्य की रचना के मूल में ये मानव-संबंध ही होते हैं। कवि तो विधाता तक को नहीं बख्शता। साहित्य-सृजन करते समय वह विधाता को भी मानव-संबंधों के दायरे में खींच लाता है। ऐसी दशा में कवि का प्रजापति रूप मुखरित हो उठता है। तब कवि समाज के भविष्य को देखने वाला बनकर तथा नियामक के रूप में जनसाधारण के मन में शासक वर्ग के प्रति उत्तेजक आक्रोश को वाणी देता	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	है। जो लोग शासन के भयवश अपनी बात नहीं कह पाते, वह (कवि) उन्हें प्रेरणा देकर उत्साहित करता है। वह स्वतंत्रता के गीत गाकर प्रेरणा देता है तथा मानव रूपी पक्षी के पैरों में नया उत्साह भर देता है। इस प्रकार उसका प्रजापति रूप उभर आता है। **विशेष :** 1. लेखक ने कवि की प्रजापति वाली भूमिका की आवश्यकता एवं महत्त्व पर प्रकाश डाला है। 2. तत्सम शब्द प्रधान भाषा का प्रयोग किया गया है। 3. शैली में काव्यात्मकता का गुण है।	
11	**दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित** (3+3)	**6**
क.	शुक्ल जी ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व को बहुमुखी प्रतिभा का धनी बताया हैं वे एक रईस परिवार के थे और उनकी हर अदा से बड़प्पन झलकता था। कंधों पर उनके बाल उनके व्यक्तित्व में चार चाँद लगा रहे थे। उनकी वाणी में विलक्षण बाँकपन था। कवि वामनाचार्य गिरि जी ने चौधरी साहब के बालों से प्रेरणा लेकर कविता पूरी कर दी थी। चौधरी साहब विनोदी स्वभाव के भी थे। उन्हें बाल रखने का बड़ा शौक था। वे बातचीत की कला में बहुत कुशल थे। वे अपने घर में देशज भाषा में बतियाते थे। उनका पूरा नाम चौधरी प्रेमधन था, जो हिन्दी जगत में अपनी साहित्य और व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़ गए।	
ख.	शेर के मुँह के अंदर जो भी जंगली जानवर एक बार जाता है, उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। वह वहाँ से पुनः लौटकर कभी नहीं आता। आधुनिक रोजगार कार्यालय (दफ्तर) में लोग नौकरी (रोजगार) की आशा में वहाँ चक्कर काटते रहते हैं, परन्तु उन्हें वहाँ से कभी नौकरी नहीं मिलती। पर इतना अंतर अवश्य है कि रोजगार दफ्तर उन्हें शेर के मुँह की भाँति निगलकर उनका अस्तित्व समाप्त नहीं कर देता है।	
ग.	वहाँ जो पानी भरा हुआ था बाढ़ नहीं, पानी में डूबे धान के खेत थे। वे थोड़ी सी हिम्मत बटोरकर गाँव के भीतर चले, तब वे औरतें दिखाई दी जो एक पाँत में झुकी हुई धान के पौधे छप-छप पानी में रोप रही थी। सुंदर, सुडौल, धूप में चमचमाती काली टाँगें और सिरों पर चटाई के किश्तीनुमा हैट, जो फोटो या फिल्मों में देखे हुए वियतनामी या चीनी औरतों की याद दिलाते थे। जरा-सी आहट पाते ही वे एक साथ सिर उठाकर चौंकी हुई निगाहों से उन्हें देखा - बिल्कुल उन युवा हिरणियों की तरह, जिन्हें लेखक ने एक बार कान्हा के वन्यस्थल में देखा था।	
12	**किसी एक लेखक अथवा कवि का जीवन परिचय अपेक्षित है-**	**6**
	(i) संक्षिप्त जीवन-परिचय	2
	(ii) रचनाओं के नामों का उल्लेख, साहित्यिक योगदान	2
	(iii) दो काव्यगत अथवा भाषा शैलीगत विशेषताओं का स्पष्टीकरण	2

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला' **जीवन परिचय** - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1899 ई. में बंगाल में मेदिनीपुर जिले के महिषादल राज्य में हुआ था। इनके पिता पंडित रामसहाय त्रिपाठी महिषादल राज्य में सामान्य कर्मचारी थे। चौदह वर्ष की आयु में 'निराला' का विवाह मनोहरा देवी से हुआ, किन्तु उनका पारिवारिक जीवन सुखमय नहीं रहा। इन्होंने दुख को अत्यंत निकट से देखा। सन् 1918 में पत्नी की मृत्यु हो गई और उसके बाद पिता, चाचा और चचेरे भाई एक-एक कर चल बसे। अंत में प्रिय पुत्री सरोज की मृत्यु ने तो उनके हृदय के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। इस प्रकार 'निराला' जीवन भर क्रूर परिस्थितियों से संघर्ष करते रहे। सन् 1961 में उनका देहांत हो गया। **काव्यगत विशेषताएँ** - सन् 1916 में निराला जी की प्रसिद्ध कविता 'जुही की कली' लिखी गई। निराला जी मुक्त छंद के प्रवर्तक माने जाते हैं। निराला का प्रारंभिक रूप छायावादी है। बाद में वे प्रगतिवादी कविताएँ लिखने लगे। उनमें भारतीय इतिहास, दर्शन और परंपरा का व्यापक बोध है। उन्होंने जीवन के यथार्थ के विभिन्न पक्षों का चित्रण अत्यंत कुशलता पूर्वक किया है। भारतीय किसान जीवन से उनका विशेष लगाव रहा है। **भाषा-शैली** - निराला की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है। उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ है जिसमें संधि -समास युक्त विविध जाति तथा ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। उनमें संगीत का स्वर भाषा के प्रवाह को और अधिक गति प्रदान करता है तथा सजग शब्द-चयन भाषा में चित्रात्मकता उत्पन्न करता है। वाक्यों में कसाव, शब्दों में मितव्ययिता और अर्थ-सघनता उनकी काव्य-भाषा की विशेषताएँ हैं। शिल्प के क्षेत्र में भी उनका विद्रोही रूप व्यक्त हुआ है। विषयवस्तु के साथ-साथ शिल्प के स्तर पर भी उन्होंने विद्रोह का स्वर बुलंद किया है। उन्होंने परंपरागत छंदों के बंधनों को तोड़कर मुक्त छंद की घोषणा की। एक ओर उन्होंने साहित्य में बंधनों का विरोध किया तो दूसरी ओर जीवन में सामंती रूढ़ियों और साम्राज्यवादी वृत्तियों का डटकर सामना किया। इस प्रकार निराला ने वीरत्व-व्यंजक स्वच्छंदतावादी भाव-बोध को व्यक्त किया है। शब्दों की मितव्ययता उनके काव्य में मिलती है। **रचनाएँ** - अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, नए पत्ते, बेला, अर्चना, अराधना तथा गीतगुंज उनकी काव्य-कृतियाँ है। काव्य के अतिरिक्त उन्होंने गद्य-साहित्य में भी अपना योगदान दिया है। अथवा **<u>जयशंकर प्रसाद</u>** **जीवन-परिचय :** जयशंकर प्रसाद का जन्म उत्तर प्रदेश के काशी (वाराणसी) नामक स्थान पर सन् 1888 ई. में हुआ था। इन्होंने संस्कृत, अंग्रेजी, पाली तथा उर्दू भाषा तथा साहित्य का स्वाध्याय द्वारा गहन अध्ययन किया। इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र एवं पुरातत्व आदि विषयों के ये प्रकांड पंडित रहे थे। प्रसाद जी दूसरों की निंदा तथा अपनी प्रशंसा से सदैव दूर रहते थे। इनका स्वभाव शांत एवं गंभीर था।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	ये अत्यधिक प्रतिभाशाली थे। मूल रूप से कवि होने के साथ-साथ इन्होंने नाटक, उपन्यास, निबंध एवं कहानियों जैसी गद्य की अन्य विधाओं में भी साहित्य को योगदान दिया। सन् 1937 ई. में इनकी मृत्यु हो गई। **काव्य रचनाएँ :** (क) महाकाव्य: कामायनी (ख) खण्डकाव्य: आँसू, प्रेमपथिक और महाराणा का महत्व (ग) काव्यरूपक : करूणालय (घ) चम्पू-काव्य : उर्वशी (ङ) गीति-काव्य: कानन-कुसुम, चित्राधार, झरना और लहर। **नाटक :** सज्जन, कल्याणी, स्कंदगुप्त, चन्द्रगुप्त, अजातशत्रु आदि **उपन्यास :** कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण) **कहानी-संग्रह :** छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी, इन्द्रजाल **निबंध - संग्रह :** काव्य और कला तथा अन्य निबंध **काव्य-शिल्प :** प्रसाद जी के काव्य का शिल्प-विधान अत्यंत सक्षम है। उनका शब्द-चयन तथा वाक्य-विन्यास मनोहर है। लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता तथा चित्रात्मकता उनकी काव्य-भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। प्रसाद जी की कविताओं से कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं। अनलशिखा, रक्तिम, क्रंदन-ध्वनि, निर्दयता, महादंभ का दानव तुरंग आदि। **अलंकार-विधान :** प्रसाद जी ने छायावादी काव्य-शैली के अनुरूप मानवीकरण का अधिक प्रयोग किया है। वैसे संकलित कविताओं में रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि अलंकार भी पर्याप्त रूप में प्रयुक्त हुए हैं। उदाहरणार्थ - **मानवीकरण** - 'मिले चूमते जब सरिता के हरित कूल युग मधुर अधर थे।' रूपक - 'मानस-सागर के तट पर।' अनुप्रास - 'करूणा कलित हृदय में।' विरोधाभास - 'शीतल-ज्वाला जलती है।' **शैली :** प्रसाद जी ने प्रबन्ध शैली एवं मुक्तक शैली - दोनों का अनुसरण किया है। कामायनी (महाकाव्य) प्रबंध शैली का उदाहरण है तो 'आँसू' व 'अशोक की चिंता' मुक्तक शैली में रचे गए हैं। 'आँसू' में क्रमबद्धता अवश्य है।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	प्रसाद जी के काव्य में बिम्ब विधान, अप्रस्तुत विधान, संगीतात्मकता, चित्रात्मकता आदि गुण भी पाए जाते हैं। प्रकृति चित्रण में वे सिद्धहस्त हैं। अथवा **<u>हजारी प्रसाद द्विवेदी</u>** **जीवन-परिचय :** आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में आरत दुबे का छपरा में 1907 ई. में हुआ। संस्कृत महाविद्यालय काशी से शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने 1930 ई. ज्योतिष विषय में ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त की। भारत सरकार की हिन्दी विषयक अनेक योजनाओं से संबद्ध रहे। लखनऊ विश्वविद्यालय ने उन्हें डी लिट् की उपाधि से और भारत सरकार ने पद्मभूषण अलंकार से सम्मानित किया। उनका निधन 19 मई 1979 को दिल्ली में हुआ। **साहित्यिक विशेषताएँ :** द्विवेदी जी का अध्ययन - क्षेत्र बहुत व्यापक था। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश बँगला आदि भाषाओं एवं इतिहास, दर्शन, संस्कृति, धर्म आदि विषयों में उनकी विशेष गति थी। वे परंपरा के साथ आधुनिक प्रगतिशील मूल्यों के समन्वय में विश्वास करते थे। **भाषा-शैली :** द्विवेदी जी की भाषा सरल होते हुए भी प्रांजल एवं प्रवाहयुक्त है तथ भाव व्यंजक भी। भाषा की दृष्टि से उन्होंने हिन्दी की गद्य शैली को जो रूप दिया, वह हिन्दी साहित्य के लिए वरदान है। **रचनाएँ :** हिन्दी निबंधकारों में आचार्य रामंचद्र शुक्ल के बाद द्विवेदी जी का प्रमुख स्थान है। वे उच्चकोटि के निबंधकार, आलोचक और उपन्यासकार थे। उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं - **निबंध संग्रह** - अशोक के फूल, विचार और वितर्क, कल्पलता, कुटज, आलोक पर्व। **आलोचनात्मक रचनाएँ** - सूर-साहित्य, कबीर, हिन्दी साहित्य की भूमिका, कालिदास की लालित्य-योजना। **उपन्यास** - चारुचंद्रलेख, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा और अनामदास का पोथा। द्विवेदी जी की सभी रचनाएँ हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली के ग्यारह भागों में संकलित हैं। **<u>रामविलास शर्मा</u>** **जीवन-परिचय :** डॉ. रामविलास शर्मा का जन्म 10 अक्तूबर 1912 ई. को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के ऊँच गाँव में हुआ। आपने लखनऊ विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. करने के बाद पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की और वहीं अंग्रेजी विभाग में प्राध्यापक नियुक्त हो गए। बाद में आप बलवंत राजपूत कॉलेज, आगरा में अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष नियुक्त हुए। सन् 1971 के बाद कुछ समय तक ये के.एम.मुंशी विद्यापीठ आगरा के निदेशक रहे। अंतिम वर्षों में इन्होंने दिल्ली में रहकर हिन्दी साहित्य, समाज और इतिहास से जुड़े विषयों में लेखन एवं चिंतन किया। सन् 2000 में दिल्ली में इनका निधन हो गया।	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	रचनाएँ : रामविलास शर्मा जी मुख्यत: समीक्षक के रूप में विख्यात हैं। उन्होंने समीक्षात्मक निबंध ही अधिक लिखे हैं। उनकी स्वतंत्र आलोचनात्मक कृतियों में (प्रेमचंद और उनका युग, निराला की साहित्य-साधना (तीन भाग),भारतेंदु हरिश्चंद्र, भारतेंदु युग, और हिन्दी भाषा की विकास परंपरा, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, भाषा और समाज, भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी (तीन भाग) आदि उल्लेखनीय हैं। भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद (दो खंड) उनके इतिहास-बोध को प्रमाणित करती है। आत्मकथा शैली में 'घर की बात' उनकी एक अन्य महत्वपूर्ण रचना है जिसमें न केवल उनके परिवार और परिजनों का लगभग सौ वर्ष का इतिहास है, बल्कि इसे किसी सीमा तक उस अवधि का सामाजिक इतिहास भी कह सकते हैं। **साहित्यिक परिचय :** रामविलास शर्मा को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 'निराला की साहित्य-साधना' पुस्तक पर उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्राप्त हुआ। अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कारों में 'सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार' उत्तर प्रदेश सरकार का 'भारत भारती पुरस्कार' और हिन्दी अकादमी, दिल्ली का 'शलाका सम्मान' उल्लेखनीय है। **भाषा-शैली :** शर्मा जी की निंबध-शैली कहीं तो विचारोत्तेजक और कहीं व्यंग्य प्रधान है। स्पष्ट कथन के कारण उनकी शैली में कहीं कबीर जैसी ओजस्विता आ जाती है। अपने कथ्य को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने उसी के अनुकूल भाषा प्रयुक्त की है। उनको परहेज नहीं है। उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ, सहज, सरस एवं विषयानुकूल है।	
13	**किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित** (3+3+3)	**9**
(क)	'सूरदास की झोपड़ी' पाठ प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास रंगभूमि का एक अंश है। इस उपन्यास का नायक सूरदास है। वह उपन्यास की ऐसी केन्द्रीय धुरी है, जिसके इर्द-गिर्द समस्त कथाचक्र घूमता है। सूरदास दृष्टिहीन एवं गरीब है। वह सारी जिंदगी भीख माँगकर अपना जीवन-यापन करता है। उसने लगभग 500 रुपये की पूँजी भी एकत्रित कर ली, जिसे वह पोटली में बाँधकर रखता था। सूरदास सहृदय व्यक्ति है। वह एक अनाथ बालक मिठुआ का पालन-पोषण करता है। जब भैंरो अपनी पत्नी सुभागी को मारता-पीटता है तब सूरदास उसे अपनी झोपड़ी में आश्रय देता है। उसकी इसी सहृदयता का गलत अर्थ लगाया जाता है और उसकी झोपड़ी को आग लगा दी जाती है। सूरदास आत्मविश्वासी है। वह मिठुआ से कहता भी है - ''हम दूसरा घर बनाएँगे... सौ लाख बार बनाएँगे।'' सूरदास सहनशील व्यक्ति है। झोपड़ी में आग लग जाने से उसका सब कुछ नष्ट हो जाता है, पर वह सारा नुकसान धैर्यपूर्वक सह जाता है। सूरदास भविष्य के प्रति आशावान बना रहता है। वह सब कुछ पुन: ठीक हो जाने की आशा बनाए रखता है।	
(ख)	सरकार कारखानों व उद्योगों को शहर से दूर खुली जगहों पर लगाए। गंगा, यमुना, गोमती आदि नदियों	

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	के जल को शुद्ध बनाए रखने के लिए कटिबद्ध रहे। किसी प्रकार का प्रदूषित जल व कचरा इन नदियों में नहीं जाना चाहिए। विभिन्न-स्थानों पर बड़े-बड़े यंत्र लगाकर जल को पीने योग्य बनाया जाना चाहिए। प्लास्टिक की थैलियों के प्रयोग पर कड़ाई से प्रतिबंध लगाना चाहिए। धरती के बढ़ते तापक्रम पर सरकार को सदैव सतर्क रहना होगा। सरकार को अधिकाधिक वृक्ष लगाने चाहिए तभी वातावरण को शुद्ध रखा जा सकता है।	
(ग)	'आरोहण' कहानी की मूल संवेदना पर्वतीय प्रदेश के लोगों की संघर्षमयी जटिल, दुखद ज़िंदगी को व्यक्त करना है यद्यपि भौतिक उन्नति अधिक हुई है लेकिन मैदानी इलाकों की तुलना में उन्हें दैनिक सुविधाएँ भी प्राप्त नहीं हैं। अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, महँगाई, आवागमन के साधनों का अभाव - इन समस्याओं के कारण उनका जीवन कष्टपूर्ण बीतता है। रोजगार का अभाव, भुखमरी, कृषि योग्य जमीन का न होना - ये स्थितियाँ बाल मजदूर पैदा करती हैं। 1986 में बालश्रम निषेध एवं नियमन कानून को सरकार द्वारा लागू किया गया था लेकिन फिर भी बाल मजदूरों की संख्या देश में बढ़ती ही जा रही है।	
(घ)	'बिस्कोहर की माटी' रचना विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा लिखित आत्मकथा 'नंगातलाई का एक गाँव' का अंश है। लेखक ने इसमें ग्रामवासियों की विषमताओं का वर्णन किया है। गाँव के लोगों के पास वे सुख-सुविधाएँ नहीं है जो शहर के लोगों के पास हैं, उन्हें अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है, जैसे - यातायात के साधनों की कमी, बिजली का पर्याप्त मात्रा में न मिलना, सिंचाई के साधनों का अभाव, अशिक्षा, रोजगार की कमी, भुखमरी, चिकित्सा, साधनों का समय पर न मिलना आदि। बाढ़, अकाल आदि विपत्तियों के समय उन्हें प्राकृतिक संपदा पर ही निर्भर रहना पड़ता है। गाँव में साँप, बिच्छू तथा अन्य हानिकारक जीव हरियाली के कारण पाए जाते हैं। कई लोगों की मृत्यु साँप के काटने के कारण हो जाती है लेकिन वे फिर भी गाँव में रहने व खेतों में काम के कारण इन खतरों का सामना करने के लिए विवश हैं। रोग की स्थिति में उन्हें गाँव में प्राप्त जड़ी-बूटियों से ही उपचार करना पड़ता है क्योंकि चिकित्सा संबंधी सुविधाएँ प्राप्त नहीं हैं। वर्षा के दिनों में पानी की निकासी का प्रबंध न होने से पानी एक ही जगह एकत्र हो जाता है जिससे बीमारियाँ फैल जाने का भय बना रहता है। शिक्षा के अभाव में ग्रामीण अंधविश्वासी हो जाते हैं। वे किसी भी प्राकृतिक विपदा, महामारी का संबंध भूत-प्रेतों से जोड़कर तांत्रिकों के चंगुल में फँस जाते हैं।	
14	**किसी एक प्रश्न का उत्तर अपेक्षित है।**	
	पर्वतारोहण - पर्वतारोहण आज भी प्रासंगिक है, पर पर्वतों पर चढ़ने के लिए केवल निर्भीकता, परिश्रम और कष्ट झलने की क्षमता की ही आवश्यकता नहीं होती। वास्तव में पर्वतारोहण एक कला है। पुराने जमाने में लोग विशेष तैयारी या साज-सामान के बिना, केवल भक्तिभाव से देवी-देवताओं के पुण्यधाम, इन दुर्गम-चोटियों के दर्शन के लिए जाते रहे किंतु इस युग में अनेक संस्थाओं में पर्वतारोहणों की शिक्षा दी जाती है। वहाँ शिक्षार्थियों को बर्फीले पहाड़ों की परिस्थितियों और कठिनाइयों की	6

प्र.सं.	प्रश्न	अंक
	जानकारी कराई जाती है। उन्हें नवीन उपकरणों की प्रयोग-विधि बताई जाती है। दार्जिलिंग का 'हिमालय पर्वतारोहण संस्थान' एक ऐसा ही आदर्श शिक्षा केन्द्र है। पर्वतारोहण में सबसे उपयोगी उपकरण बर्फ काटने की कुल्हाड़ी अथवा हिम कुठार होता है। इसे आरोही की तीसरी टाँग ही समझना चाहिए। इसी के सहारे आरोही अपने को अचानक फिसल जाने से बचाता है। सपाट चढ़ाई पर इसे बर्फ में घुसाकर अपना संतुलन कायम रखता है। इसी से रास्ते की बर्फ काट-काट कर सीढ़ियाँ बनाई जाती हैं। **अथवा** विकास की औद्योगिक सभ्यता उजाड़ की अपसभ्यता है। खाऊ-उजाडू सभ्यता ने पर्यावरण का विनाश किया है। प्रकृति ने हमारे लिए स्वस्थ एवं सुखद आवरण का निर्माण किया था, परन्तु मनुष्य ने भौतिक सुखों की होड़ में उसे दूषित कर दिया है। वर्तमान समय में शहरी सभ्यता प्रदूषण की समस्या से घिरी हुई है। जैसे-जैसे वैज्ञानिक उपकरण बढ़ते जा रहे हैं, वैसे-वैसे प्रदूषण का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। प्रदूषण के कारणों की खोज करने पर प्रतीत होता है कि अंधाधुंध वृक्षों की कटाई, जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि, उद्योगों का अनियमित फैलाव, चिमनियों से आबादी के मध्य धुआँ उगलना एवं यातायात के साधनों की अभूतपूर्व वृद्धि आदि ही इसके लिए जिम्मेदार हैं। कारखानों का रासायनिक जल नदियों में डाल दिया जाता है। शहरों का गंदा पानी बिना साफ किए नदियों में मिला दिया जाता है। वाहन धुआँ छोड़ते हैं और वायुमण्डल को प्रदूषित करते हैं। इस प्रदूषण से अनेक बीमारियाँ पनपती हैं। प्रदूषण कई प्रकार का होता है - (1) जल-प्रदूषण (2) वायु-प्रदूषण (3) भूमि-प्रदूषण (4) ध्वनि प्रदूषण। जल मनुष्य की बुनियादी आवश्यकता है। स्वच्छ जल निरापद पीने का पानी न मिलने के कारण अधिकांश लोग गंभीर रोगों का शिकार हो रहे हैं। जल-प्रदूषण के लिए अधिकतर कारखाने जिम्मेदार हैं। जल में अनेक विषाक्त तत्व मिलकर उसे अनुपयोगी बनाते हैं। शहरों के गंदे नाले भी नदियों में जाकर गिरते हैं। इससे उनका जल दूषित होता है। जल-प्रदूषण के कारण पेट के रोग बढ़ रहे हैं। वायु में भी प्रदूषण फैल रहा है। वाहनों द्वारा छोड़ गया धुआँ तथा कारखानों की चिमनियों से निकला धुआँ वातावरण को दूषित करता है। वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। वृक्ष ऑक्सीजन छोड़ते हैं और कार्बन डाइऑक्साइड लेते हैं, अतः यह चक्र ठीक बना रहता है। वनों के संरक्षण एवं संवर्धन द्वारा वायु-प्रदूषण को रोका जा सकता है। वायु-प्रदूषण के कारण साँस के रोग बढ़ रहे हैं। ध्वनि-प्रदूषण भी शहरों में बढ़ता जा रहा है। बसों के हॉर्न तथा मशीनों के चलने से उठने वाली भारी कर्कश आवाज से यह प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। इससे बहरेपन का खतरा बढ़ रहा है। इससे उच्च रक्तचाप, तेज सिर दर्द, अनिद्रा आदि रोग भी हो सकते हैं। इस पर काबू पाया जाना जरूरी है।	6

lLÑr vkn'k i'ui=e
dfUnde (Core)
d{kk & }kn'kh XII
i'ui=L; :ijs[kk

कोड सं. : 322 पूर्णाङ्काः 100

[k.M uke	i'u l[;k	i'u&mís';e	i'u idkj	vd lkr	पूर्णाङ्काः
खण्डः क अपठितांश– अवबोधनम्	1 अ ब स द	तथ्यबोध–परीक्षणम् „ भाषिकतत्त्वबोध–परीक्षणम् शीर्षक प्रदानम्	अतिलघूत्तरः लघूत्तरः अतिलघूत्तरः „	½ × 4 = 2 1 × 2 = 2 1 × 4 = 4 2 = 2	10
खण्डः ‘ख’ रचनात्मकः कार्यम्	2	पत्रलेखने अनौपचारिककार्य–विषयवस्तुबोधरीक्षणम्	रिक्तस्थानपूर्ति (अतिलघूत्तरः)	½ × 10	5
	3	अवबोधपूर्वकम् वाक्यसंरचनाप्रयोग–परीक्षणम्	रिक्तस्थानपूर्ति (अतिलघूत्तरः)	½ × 10	5
	4	अवबोधपूर्वकम् वाक्यनिर्माणम्	(लघूत्तरः)	½ × 10	5 15
खण्डः ‘ग’ अनुप्रयक्त– व्याकरणम्	5	वाक्येषु सन्धिच्छेद–परीक्षणम्	अनुप्रयोगात्मकः (अतिलघूत्तरः)	1 × 6	6
	6	वाक्येषु समस्तपदानां विग्रहः	स्थूलाक्षर–पदानां विग्रहः (अतिलघूत्तरः)	1 × 6	6

[k.M uke	i'u l[;k	i'u&mís';e	i'u idkj%	vÄ lÄr%	पूर्णाङ्काः
खण्डः 'ग' अनुप्रयक्त–व्याकरणम्	7	वाक्येषु कृदन्त–तद्धित–प्रत्ययानां प्रयोग–परीक्षणम्	प्रकृति–प्रत्यय–योगेन रिक्त–स्थानपूर्ति' (अतिलघूत्तरः)	1 × 8	8
	8 अथवा	कर्तृ–क्रियापद–अन्विति परीक्षणम् विशेषण पदचयन–परीक्षणम्	शुद्ध क्रियापद–चयनेन रिक्त–स्थानपूर्तिः मंजूषातः विशेषणपदचयनं कृत्वा रिक्तस्थान–पूर्तिः (अतिलघूत्तरः)	1 × 5 अथवा 1 × 5	5
	9	उपपदविभक्तिप्रयोग–परीक्षणम्	कोष्ठकात्–शब्देषु उपपद–विभक्ति प्रयोगेण रिक्तस्थानपूर्तिः (लघूत्तरः)	1 × 5	5 30
खण्डः 'घ' भाग : 1 पठितांश–अवबोधनम्	10	पठितगद्यांशबोध – परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः लघूत्तरः च	½ × 2 = 1 1 × 1 = 1 1 × 3 = 3	5
	11	पठितनाट्यांशबोध् परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः लघूत्तरः च	½ × 2 = 1 1 × 1 = 1 1 × 3 = 3	5
	12	पठितपद्यांशबोध् परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः लघूत्तरः च	½ × 2 = 1 1 × 1 = 1 1 × 3 = 3	5
	13	प्रसंग–सन्दर्भ–ग्रन्थ–लेखक परीक्षणम्	1. सन्दर्भग्रन्थस्य लेखकस्य च 2. कः कथयति कं कथयति	1 + 1 = 2 1 + 1 = 2	4

[k.M uke	i'u l[;k	i'u&mí';e	i'u idkj	vङ्क lङ्कr	पूर्णाङ्काः
	14	भावार्थबोध परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः रिक्तस्थानपूर्तिः	½ × 8	4
	15	अन्वय परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः रिक्तस्थानपूर्तिः माध्यमेन	2 + 2	4
	16	सार्थक वाक्य–संयोजन परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः वाक्यानां क्रमानुसारं संयोजनम्,	1 × 4	4
	17	प्रसंगानुसारम् अर्थचयनम्	अतिलघूत्तरः शुद्धशब्दार्थ चयनम्	1 × 4	4 35
खण्डः 'घ' भाग : 2 संस्कृत–साहित्य सामान्य परिचयः	18	संस्कृतसाहित्यसामान्य बोधपरीक्षणम् अथवा संस्कृतनाट्यवैशिष्ट्य बोधपरीक्षणम्	अतिलघूत्तरः (देश–काव्य–कृति कवीनाम्) अथवा अतिलघूत्तरः	3 + 3 + 4 5 + 5	10 10 100

vkn’ki'ui=e l- 1
lLdre ¼dfUnde½
SANSKRIT (CORE)
dkM l[;k 322
}kn'k&d{kk

अवधिः होरात्रयम्	पूर्णाङ्काः : 100
समयः तीन घण्टे	पूर्णांङ्कः : 100
Time: 3 Hours	Maximum Marks : 100

fun'kk

- सङ्केताभावे सर्वेषां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतेनैव लेखनीयानि।
  जहाँ स्पष्ट संकेत नहीं है, वहाँ उत्तर संस्कृत में ही दीजिए।
  Answer the questions in Sanskrit only unless stated otherwise.
- उत्तराणि पृथक् दत्तायाम् उत्तरपुस्तिकायाम् एव लेखनीयानि।
  सभी उत्तर अलग दी गई उत्तरपुस्तिका में लिखें।
  Answers should be written only in the separately provided answer-book
- अस्मिन् प्रश्नपत्रे चत्वारः खण्डाः सन्ति।
  इस प्रश्नपत्र में चार खण्ड हैं।
  There are four sections in this question paper.

[k.M d	अपठितांश–अवबोधनम् (अपठितांश अवबोधन)	
SECTION A	(Reading Comprehension)	10 अङ्काः
[k.M [k	संस्कृतेन रचनात्मककार्यम् (संस्कृत में रचनात्मक कार्य)	
SECTION B	(Sanskrit writing Skill)	15 अङ्काः
[k.M x	अनुप्रयुक्तव्याकरणम् (अनुप्रयुक्त व्याकरण)	
SECTION C	(Applied Grammer)	30 अङ्काः
[k.M ¼?k½	भाग (i) पठितांश –अवबोधनम् (पठितांश अवबोधन)	35 अङ्काः
	भाग (ii) सामान्य संस्कृतसाहित्यपरिचयः (सामान्य संस्कृत साहित्य परिचय)	10 अङ्काः
SECTION D	Part (i) Reading Comprehension	
	(ii) General Introduction to Sanskrit Literature	

[k.M ¼d½

Section (A)

vifBrka'k & vockk/kue

10

Unseen Reading Comprehension

1. v/kksfyf[kr x|ka'k ifBRok iz'ukuke~ mÙkjkf.k laLd`rsu fy[krA
fuEufyf[kr x|ka'k dk i<dj iz'uksa ds mÙkj laLd`r esa fy[k,A
Read the following passage and answer the questions in Sanskrit.

पुरा कश्चित् एकः बालः अध्ययने रतः आसीत्। स यत् अपठत् तत् विस्मरति स्म। अतः तस्य सहपाठिनः तम् उपहसन्ति स्म। एकदा आत्मग्लानिपीडितः सः विद्यालयात् निरगच्छत् मार्गे च अचिन्तयत्–नूनम् अहम् मूर्खः अस्मि। अत एव सर्वे माम् उपहसन्ति। मम भाग्ये विद्या नास्ति। सम्प्रति किं करोमि इति चिन्तयन् भ्रमन् मार्गे तेनैकः कूपः दृष्टः। तत्र काश्चन महिलाः स्वघटान् जलेन पूरयन्ति स्म। स कुतूहलात् तत्र स्थितः। अत्रान्तरे सः अपश्यत् यत् यस्मिन् शिलाखण्डे घटः निहितः आसीत् तत्रैकः गर्तः वर्तते। सः वनितां पृच्छति–अम्ब! इमं सुन्दरं गर्तं कः निर्मितवान् इति?'' सा विहस्य अवदत्, ''गर्तः एषः तु प्रतिदिनं घटस्थापनेन निर्मितः, न कोऽपि अस्य निर्माता। ''तद्वचः श्रुत्वा सः अचिन्तयत् यदि भूयोभूयः मृत्तिकाघटस्य स्थापनेन पाषाणशिलायाम् अपि गर्तः सम्पद्यते तदा पुनः पुनः पठनेन मम मतिः कथं न तीव्रा भवेत् इति विचार्य स पुनः विद्यालयं प्रत्यागच्छत्। कालान्तरे विद्याभ्यासेन अयमेव बालः महान् वैयाकरणः बोपदेवः अभवत्। उक्तं च अभ्यासाद् लभते विद्याम् इति।

iz'uk%

I. ,dinsu mÙkjr
,d in esa mÙkj nhft,A
Answer in one word. ½ × 4 = 2

(i) बालेन मार्गे कः दृष्टः?

(ii) काश्चन महिलाः जलेन कान् पूरयन्ति स्म?

(iii) गर्तः कुत्र आसीत्?

(iv) महान् वैयाकरणः कः अभवत्?

II. iw.kZokD;su mÙkjr
iw.kZokD; esa mÙkj nhft,A
Answer in one sentence. 1 × 2 = 2

(i) आत्मग्लानिपीडितः बालः किम् अकरोत्?

(ii) गर्तः तु कथं निर्मितः जातः?

III· ;Fkkfun'ke mÙkjr 4

fun'kkuqlkj mÙkj nhft,

Answer as directed.

(i) 'सुन्दरं गर्तं' अत्र विशेषणपदं किम्?

(ii) ''सर्वे माम् उपहसन्ति' इत्यत्र कर्तृपदं किम्?

(iii) ''मन्दा'' इत्यस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(iv) अतः तस्य सहपाठिनः तम् उपहसन्ति स्म ' अत्र' 'तस्य' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

IV· vL; x|k'kL; lefpra 'kh"kZda fy[krA 2

bl x|k'k dk fy, lefpr 'kh"kZd fyf[k,A

Please give a suitable title to this paragraph.

[k.M ^[k*

Section "B"

lLd`ru jpukRed dk;Z — 15

Sanskrit Writing Skill

2· Hkoku iz.ko% pUubZuxjs fuolfrA Hkor% fe=e okxh'k% ijh{kk;ke mÙkeka~d% mÙkh.k%A ijh{kk;k lQyrk;S o/kkiu inkuk; fe=a ifr fyf[kr vfLeu i= e×tw"kkin% fjDrLFkkukfu iwj;Rok mÙkjiqfLrdk;k i= iqu% fy[krA

vki iz.ko pUubZ uxj esa jgrs gSA vkid fe= okxh'k ijh{kk esa mÙke vadks ls mÙkh.kZ gq, gSA ijh{kk esa lQyrk ds fy, c/kkbZ nsus ds fy, fe= dks fy[ks bl i= esa fjDrLFkkuksa dks e×tw"kk esa fn, x, inksa ls Hkjdj i= dks mÙkj iqfLrdk esa iqu% fyf[k,A

You are Pranava from Chennai. Your friend Vageesh has succeded in the Board Examination scoring very good marks. Fill in the blanks in the following letter written to your friend congratulating him on his success in the examination. You can take the help of words given in the box and rewrite the letter again.

½ × 10=5

(i)................................

तिथिः ....

प्रिय (ii) ....

(iii) ....

अत्र कुशलं तत्रास्तु। केन्द्रीयमाध्यमिकशिक्षासङ्घटनेन अद्यैव 8.00 अष्टवादने द्वादशकक्षायाः (iv) ....समुद्घोषितः। मया इण्टरनेट इति माध्यमेन तव परीक्षा परिणामः (v) ....। अस्यां परीक्षायाम् त्वम् पञ्चनवतिः प्रतिशतम् (vi) .... प्राप्य समुत्तीर्णः। संस्कृते तु शतम् एव अङ्कान् लब्धवान् असि। योग्यतासूच्याम् अपि तव नाम दृष्ट्वा अहम् हार्दिकं हर्षम् अनुभवामि। (vii) ....कठोरः परिश्रमः सफलः जातः। त्वया न केवलम् आत्मनः अपि तु स्वकुटुम्बस्य अपि (viii) .... वर्धितम्। त्वं भूयोभूयः प्रशंसनीयोऽसि। अहम् एतस्यै उच्च–सफलतायै तुभ्यं हार्दिकं (ix) .... यच्छामि। भविष्ये तव का योजना इति लिखतु।

मातृ–पितृचरणयोः प्रणामाः।

तव अभिन्नसुहृद्

(x)......................

e t|"kk

विदितः वागीश, चेन्नईतः, तव, अङ्कान्, यशः, प्रणवः, नमस्ते, वर्धापनम् परीक्षापरिणामः

3- e t|"kk i|nÙk'kCnl|ph lkgk¸;|u y?k|dFkk'k i|jf;Rok i|u% fy[krA ½ ×10 =5
e¤t|"kk e| fn, 'kCnk| dh lgk;rk l| y?k| dFkk d| v|'k dk| i|.k dj i|u% fyf[k,A
Complete the short story with the words given in the box below and rewrite the same.

एकदा कश्चित् व्याधः जालम् आदाय विहगान् अन्वेष्टुम् इतः ततः परिभ्रमन् वनम् (i)___________। ततः स व्याधः वने (ii)______________ विकीर्य जालं च प्रसार्य स्वयं प्रच्छन्नः अभवत्। एतस्मिन् अन्तराले कपोतराजः चित्रग्रीवः सपरिवारः तान् तण्डुलान् दृष्ट्वा अनुयायिनः (iii)______________ अवदत् अस्मिन् (iv)______________ वने तण्डुलानां संभवः कुतः? तद् भद्रम् इदं न (v)______________। यतः अनिष्टात् इष्टलाभः अपि न (vi)______________। एतच्छ्रुत्वा कश्चित् पण्डितम्मन्यः सदर्पम् अवदत् संशयात्मा (vii)______________ तदनन्तरं ते लुब्धाः कपोताः (viii)______________________च बद्धाः अभवन्। ततः चित्रग्रीवः तान् अकथयत् – विपत्काले (ix)______________ धारणीयम्। वयं सर्वे स्वमित्रस्य हिरण्यकस्य मूषकराजस्य समीपं गच्छामः। तदा सर्वे कपोताः संहताः जालम् एवं गृहीत्वा उदपतन्। हिरण्यकेन छिन्नपाशाः कपोताः (x)______________तं प्रशंसन्ति स्म।

e¤t|"kk

तण्डुलान्, कपोतान्, अगच्छत्, निर्जने वरम्, पश्यामि, जालेन, धैर्यम्, विनश्यति, कृतज्ञतया।

4- v/kkfyf[krfo"k;sq ,dl fo"k;e~ vf/kdR; i×pokD;fere~ vuqPNsn~ laLd`ru fyf[kr! $1 \times 5 = 5$

fuEufyf[kr fo"k;ksa esa ls ,d fo"k; ij ikp okD;ksa dk laLd`r esa ,d vuqPNsn fyf[k,A

Write a passage of five sentences in Sanskrit on any one of the following topics.

(i) विद्याविहीनः पशुः।

(ii) संस्कृतं मह्यम् किमर्थं रोचते?

(iii) विद्यालयस्य सम्पत्तेः रक्षा करणीया।

[k.M% ^x*

Section C

vuqiz;qDr0;kdj.ke~

vuqiz;qDr 0;kdj.k

30

Applied Grammar

5- v/kkfyf[krs"kq okD;s"kq js[kkfdrin"kq lfU/kfoPNsna d#rA $1 \times 6 = 6$

fuEufyf[kr okD;ksa esa js[kkfÍr inksa esa lfU/kPNsn dhft,A

Disjoin Sandhis in the bold typed words in the following sentences.

(i) सत्यमेव जयति **uku`reA**

(ii) **thoR;ukFkk·fi** वने विसर्जितः।

(iii) **bu'p** दिनस्य।

(iv) अद्य **eekiokl%** अस्ति।

(v) **rnU;=** गम्यताम् इति।

(vi) **fgrkUu** यः **lÜk.kr** स किंप्रभुः।

6. v/kkfyf[krs"kq okD;s"kq LFkwyinkuka foxzgk% y[;;kA

fuEufyf[kr okD;ksa esa LFkwyinksa dk foxzg fyf[k,A

Expound the compounds in bold words in the following sentences. $1 \times 6 = 6$

(i) **'kksdfoeksd%** कोकलोकस्य।

(ii) अयमेव **vgkjk=** जनयति।

(iii) सर्वे **;FkkLFkkue** उपविशन्ति।

(iv) तेऽपि **mRlofi;k%A**

(v) **lefgek** यद्यस्ति किं मण्डनैः।

(vi) दुराराध्या **jktyf{eh%A**

7- v/kksfyf[kr"k okD;"k dk"BdkUrxZr ifdfr iR;; p ;ktf;Rok fjDrLFkkukfu iwj;rA

uhps fy[ks g, okD;ks e dk"Bd ds vUrxZr ifdfr d lkFk fufn"V iR;; dks tksMd dj [kkyh LFkku Hkfj,A

Rewrite the following sentences by adding suffixes to the roots and words given in the brackets. 1 × 8 = 8

(i) तिष्ठ तिष्ठ न ——————————— (गम् + तव्यत्)

(ii) अस्य प्रयोजनं (ज्ञा+तुमुन्) —————————— इच्छामि।

(iii) आर्यः शिरसा (प्र+नम्+ल्यप्)————— विज्ञापयति।

(iv) हुतं च (दा + क्त) ——————————— च सदैव तिष्ठति।

(v) अन्यत्र (भुज् + क्त्वा) ———————— गच्छामि।

(vi) सूर्यम् आश्रित्य ——————— परार्द्धसंख्या भवति। (परमेष्ठ + इन्)

(vii) मत्यस्यजीविभिः सरः ——————— नीतम्। (निर्मत्स्य + तल्)

(viii) इदम् अभियानं रोचकं ——————— चासीत्। (साहस+ठक्)

8- v/kksfyf[kr"k okD;"k drZfØ;kin;k% vfUofr% fØ;rkeA

v/kksfyf[kr okD;ks e drk vkj fØ;k dh vfUofr dhft,A

Please write the suitable verb according to the subject or vice versa in the following sentences. 1 × 5 =5

(i) आर्य! निमंत्रितः अस्ति/असि।

(ii) एते गिरयः अतीव शोभते/शोभन्ते।

(iii) अद्भिः गात्राणि शुद्ध्यति/शुद्ध्यन्ति।

(iv) आर्य वैहीनरे! सुगाङ्गमार्गम् आदेशय/आदेशयति।

(v) मत्स्यजीविनः अत्र मत्स्यसंक्षयं करिष्यति/करिष्यन्ति।

अथवा **(Or)**

v/kknÙk"k okD;"k e~t"kkr% fo'k"k.kinkfu fpRok fo'k";in% lg ;kt;r
v/kkfyf[kr okD;k e fo'k"k.k in e~t"kk l NkV dj fo'k"; ink d lkFk tkfM,A

Match the adjectives with nouns in the following sentences.
(The adjective words have been given in the box)

(i) —————— ऋषयः भवन्ति।

(ii) कथं स्पर्धते मया सह———————— राक्षसः।

(iii) ———————— छदिप्रान्तः।

(iv) ————————— भोजनानां दात्री भव।

(v) ———————— एव भवत्याः प्रस्तुतिः।

e~t"kk

प्रशंसनीया, दुरात्मा, शोभनानां, आप्तकामाः, अतिनमितः

9- v/kkfyf[kr"k okD;"k dk"BdkUrxr 'kCn"k miinfoHkfDr i;T; fjDrLFkkuifr% fØ;rkeA
fuEufyf[kr okD;k e dk"Bd d 'kCnk e miin foHkfDr dk i;kxdj fjDr LFkkuk dh ifr dhft,A

Fill in the blanks using appropriate case-endings with the words given in the brackets. 1 × 5 =5

(i) अये! ————————— अध्यास्ते वृषलः। (सिंहासन)

(ii) ———————— समम् अन्यत्र भुक्त्वा गच्छामि। (पारावत)

(iii) तदलं भवतः —————————— (सन्ताप)

(iv) एषः स्तम्भः —————————— विना तथैव तिष्ठति। (विकृति)

(v) ——— नमो नमः (सर्व)

[k.M% ^?k* (Section D)

Hkkx% ¼1½ Part - 1

35

ifBrk'k vock/kue~

ifBrk'k&vock/ku

Reading Comprehension

10- v/kkfyf[kr x|k'k ifBRok lLd`ru i'uku mÙkjrA
uhp fy[k x|k'k dk i<dj lLd`r e i'uk d mÙkj nhft,A
Read the following prose passage and answer the questions in Sanskrit. 5

अयमेव अहोरात्रं जनयति। अयम् एव वत्सरं द्वादशसु भागेषु विभनक्ति। अयम् एव कारणम् षण्णाम् ऋतूनाम्। एष एव अङ्गीकरोति उत्तरं दक्षिणं चायनम्। अनेन एव सम्पादिताः युगभेदाः। अनेन एव कृताः कल्पभेदाः। एनम् एव अश्रित्य भवति परमेष्ठिनः परार्धसख्या। वेदा एतस्य एव वन्दिनः। गायत्री अमुम् एव गायति। धन्य एष कुलमूलं श्रीरामचन्द्रस्य। प्रणम्यः एषः विश्वेषाम्।

I- **,dinu mÙkjr** ½ × 2 =1
,d 'kCn e mÙkj nA
Answer in one word.

(i) श्री रामचन्द्रस्य कुलमूलं कः अस्ति?

(ii) सूर्यस्य वन्दिनः के सन्ति?

II- **i.kokD;u mÙkjrA** 1 × 2 =2
i.kokD; e mÙkj nA
Answer in a complete sentence.

सूर्यः वत्सरं कति भागेषु विभनक्ति?

III- **;Fkkfun'keÙkjr** ½ × 2 =1
fun'kkuqlkj mÙkj nhft,A
Do as directed

(i) ''रात्रिन्दिवम्'' इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?

(ii) ''षण्णाम् ऋतूनाम्' अत्र किं विशेषणपदम्?

(iii)	प्रणम्यः एषः विश्वेषाम् अत्र 'एषः' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?	1× 2 =2
(iv)	''गायति' क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?	

11· v/kkfyf[kr ukV;k'k ifBRok i'uku mÙkjr

fuEufyf[kr ukV;k'k dk i<dj i'uk d mÙkj nhft,A

Read the following drama passage and answer the questions.

¼rr½ ifo'kfr pk#nÙk fon"kd½ p³~fjdkgLrk pVh p½ 5

चारुदत्तः (दीर्घं निःश्वस्य) भोः दारिद्र्यं खलु नाम मनस्विनः पुरुषस्य सोच्छ्वासं मरणम्।

विदूषकः अलम् इदानीं भवतः अतिमात्रं सन्तप्तुम्। दानेन विपन्नविभवस्य बहुलपक्षचन्द्रस्य ज्योत्स्नापरिक्षय इव भवतः रमणीयोऽयं दरिद्रभावः।

चारुदत्तः न खल्वहं नष्टां श्रियम् अनुशोचामि। गुणरसज्ञस्य तु पुरुषस्य व्यसनं दारुणतरं मां प्रतिभाति।

I· **,dinu mÙkjr** ½ × 2 =1

,d in e mÙkj nhft,A

Answer in one word.

(i) चङ्केरिकाहस्ता का अस्ति?

(ii) कस्य पुरुषस्य व्यसनं दारुणतरं भवति?

II· **i.kokD;u mÙkjrA** 1 × 1 =1

iwj okD; e laLd`r e mÙkj nhft,A

Answer in one sentence in Sanskrit.

चारुदत्तस्य किमिव रमणीयोऽयं दरिद्रभावः?

III· **;Fkkfun's'keÙkjr**

fun's'kkuqlkj mÙkj nhft,

Do as directed.

(i)	''रमणीयोऽयं दरिद्रभावः'', अत्र किं विशेषणपदम्?	½
(ii)	''सम्पन्न'' इत्यस्य विपरीतार्थकं पदं किम्?	½
(iii)	''भवतः रमणीयोऽयं दरिद्रभावः' अत्र 'भवतः' सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?	1 ×1 =1
(iv)	अनुशोचामि इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?	1 ×1 =1

12 v/kksfyf[kra i|a ifBRok iz'ukuka mÙkjr

fuEufyf[kr i| dks i<+dj iz'uksa ds mÙkj nhft,A

Read the following verse and answer the questions.

f'k{kk {k;a xPNfr dkyi;Z;kRlqc)eqyk fuirfUr ikniksA

ty tyLFkkuxra p 'kq";fr gqra p nÙka p lnSo fr"BfrAA

I. **,dinsu mÙkjr** ½ × 2 =1

,d 'kCn esa mÙkj nhft,A

Answer in one word.

(i) सुबद्धमूलाः के निपतन्ति?

(ii) कालपर्ययात् क्षयं का गच्छति?

II. **iw.kZokD;su mÙkjr** 1 × 2 =2

iwjs okD; esa mÙkj nhft,A

Answer in one sentence in Sanskrit.

सदैव किं किं तिष्ठति?

III. **;FkkfunsZ'keqÙkjr**

funsZ'kkuqlkj mÙkj nhft,

Answer as directed ½ × 4 =2

(i) 'जलं जलस्थानगतं' अत्र किं विशेषणपदम्?

(ii) 'विनाशम्' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

(iii) 'तिष्ठति' इति क्रियापदस्य किं विलोमपदम्?

(iv) 'सुबद्धमूलाः निपतन्ति पादपाः अत्र कर्तृपदं किम्?

13- v/kksnÙkks 'yksd};a ifBRok ;FkkfunsZ'ke mÙkjr

uhps fy[ks nks 'yksdksa dks i<+dj funsZ'kkuqlkj mÙkj nhft,A

Read the following two verses and answer as directed.

I. अशक्तैर्बलिनः शत्रोः कर्तव्यं प्रपलायनम्।

आश्रितव्योऽथवा दुर्गः नान्या तेषां गतिर्भवेत्।। 1 +1 =2

vL; 'yksdL; d% lUnHkZxzUFk% ys[kd% pA

II. विभवानुवशा भार्या समदुःखसुखो भवान्।
सत्त्वं च न परिभ्रष्टं यद् दरिद्रेषु दुर्लभम्।।

be 'ykd d% de ifr dFk;fr 1 +1 =2

14- v= inÙkHkkokFk=;s 'k)HkkokFkp;u dRok fy[kr
iR;sd v'k d fy, fn;s x, rhu HkkokFkk e l 'k) HkkokFk p;u djd fyf[k,A
Three explanations are given for each line. Select the correct one and write.

I. **mfÙk"Br tkxr ikI; ojku fucks/kr**
HkkokFk%

(क) निद्रां त्यक्त्वा इष्टवस्तूनि लभध्वम्।

(ख) अज्ञाननिद्रां विहाय श्रेष्ठान् उपगम्य ज्ञानं लभध्वम्।

(ग) जागरणेनैव इष्टवस्तूनि प्राप्तुं यतध्वम्।

II. **fuLigR;kfxfHk% ,rkn'k% tu% jktk r.kon x.;rA**

(क) राजा त्यागिनः जनान् किमपि न गणयति।

(ख) त्यागिनः राजानम् स्वल्पं वस्तु याचन्ते। 2+2 = 4

(ग) इच्छारहिताः त्यागिनः जनाः राजानम् अपि न गणयन्ति।

vFkok (Or)

v/kknÙkL; 'ykdL; inÙk HkkokFk e×tw"kknÙkin% ijf;Rok fy[kr
uhp fn;s x, 'ykd d HkkokFk dk e×tw"kknÙk ink l i.k djd fyf[k,A
Complete the central idea of the given verse with the words given in the box and rewrite the same.

अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य हिमं न सौभाग्यविलोपि जातम्।
एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः।।

हिमालयः अनन्तरत्नानाम् (i) --------------सन् शोभते। एषः पर्वतः (ii) -------------- अपि पूर्णः वर्तते। परं हिमं (iii) --------------सौन्दर्यं (iv) --------------------------नैव समर्थः। यतो हि एकः दोषः (v) -------------- तथैव विलुप्तः (vi) --------------यथा (vii) --------------किरणेषु (viii) ------------तिरोहितः भवति।

e×tw"kk

हिमेन, हिमालयस्य, उत्पादकः दृश्यते,
चन्द्रस्य, विनष्टुं, कलङ्कः, गुणसमूहेषु

15. v/kksfyf[kr'ykssd};L; iznÙkkUo;s fjDrLFkkuifrZ dRok iqu% fy[kr & fuEufyf[kr nks 'yksdks d fn, x, vUo;ksa e fjDrLFkkuksa dh iwfrZ dj iqu% fyf[k,&

Fill in the blanks in the prose order rendering of the following two verses and re-write the same. ½×4 =2

¼v½ ;Lrq lokZf.k Hkwrkfu vkRe;sokuqi';frA lo÷Hkwrs"kq pkRekue rrks u fotqxqIlrsAA

अन्वयः

यः तु ————————— भूतानि आत्मनि एव —————————, सर्वभूतेषु

च ———————— ततः ————————— विजुगुप्सते।

¼vk½ fuoSjk foeq[khHkofUr lqân% LQhrk HkoUR;kin%A ikia deZ p ;r~ ijSjfi d`ra rÙkL; lEHkkO;rAA ½×4 =2

अन्वयः – निर्वैराः ——————— विमुखीभवन्ति —————— स्फीताः

भवन्ति, पापं कर्म च ————— परैः अपि कृतम् तत् ——————— सम्भाव्यते।

16- LrEHk};s v/k% iznÙkokD;kuka lkFkZda l;kstua dRok Øe.k fy[krA nks LrEHkksa e fn, x, fuEufyf[kr okD;ksa dk lkFkZd l;kstu dj Øe ls fyf[k,A

Rewrite the following sentences as per their sequential order.

(i) उत्तिष्ठत जाग्रत	(क) लद्दाख इति वदन्ति।	
(ii) तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते	(ख) यद् दरिद्रेषु दुर्लभम्।	
(iii) उत्तुङ्गपर्वतानाम् उपत्यकाभूमिम्	(ग) त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा।	
(iv) सत्त्वं च न परिभ्रष्टं	(घ) प्राप्य वरान् निबोधत।	1 × 4 = 4

17- v/kksfyf[kri³fDr"kq LFkwyk{kjinkuka iz ls³kuqlkje vFk fpRok fy[kr & v/kksfyf[kr iafDr;ksa e LFkwyk{kj inksa dk iz l³ ds vuqlkj 'kq) vFk pudj fyf[k,A

Select and write the appropriate meaning of the bold words as per reference to their context.

(i) lÙoa च न परिभ्रष्टं यद् दरिद्रेषु दुर्लभम्।
(क) सतोगुणः (ख) चरित्रम् (ग) मनः

(ii) vnfHk% गात्राणि शुध्यन्ति।
(क) भोजनेन (ख) जलेन (ग) वस्त्रेण

(iii) onua प्रसादसदनम्।
(क) मुखम् (ख) शरीरम् (ग) सङ्गीतम्

(iv) जम्बूवृक्षस्य प्रा॰oYehd%A
(क) वाल्मीकिः (ख) परिधिः (ग) सर्पगृहम् $1 \times 4 = 4$

[k.M ^?k* Section D
Hkkx II Part II
lkekU;% lLd`r lkfgR; ifjp;%
lkekU; lLd`r lkfgR; ifjp;
General Sanskrit Literature

18- v/kkfyf[krkuk dohuk n'k&dky&d`rhuk ;Fkkfun'k ukekfu fy[krA
fuEufyf[kr dfo;k d n'k] dky ,o d`fr;k dk fun'kku lkj uke fyf[k,A
Write the names of the place, date and works of the following poets as directed.

do;%

(i) बाणभट्टः
(ii) भवभूतिः } देशः
(iii) आर्यभटः

(i) भासः
(ii) वराहमिहिरः } कालः
(iii) अम्बिकादत्तव्यासः

(i) भारविः
(ii) सुश्रुतः
(iii) श्री विष्णुशर्मा } काचिदेका कृतिः $3 + 3 + 4 = 10$
(iv) कौटिल्यः

vFkok (OR)

¼v½ v/k% e~tw"kk;k% inÙk'kCn% fjDrLFkkuiwfr% d#rA
uhps e~tw"kk esa fn;s x, inksa ls fjDr LFkkuksa dh iwfrZ dhft,A 5
Fill in the blanks with the words given in the box below -

(i) छन्दोयुक्तरचना ——————— कथ्यते। तस्य मुख्यतः भेदद्वयम् – महाकाव्यम् —————— च।

(ii) संस्कृतसाहित्ये ————————— रसाः भवन्ति। तेषु प्रधानः रसः ——————— अस्ति।

(iii) गद्यं कवीनां —————————— वदन्ति। कथा ———————— च तस्य प्रमुखं भेदद्वयम्।

(iv) रूपकस्य ——————— भेदाः सन्ति। ——————————रूपकस्य भेदः।

(v) नाटकस्य मुख्यं तत्त्वं ——————————— अस्ति। नाटकस्य आदौ ——————— भवति।

e~tw"kk

निकषं, पद्यम्, खण्डकाव्यं, दश, अभिनयः
नाटकम्, शृङ्गारः, नव, नान्दी, आख्यायिका

¼c½ laLd`rukVdL; i~p fo'ks"krk% laLd`rsu fy[krA
laLd`r ukVd dh ikap fo'ks"krk,a laLd`r esa fyf[k,A
Write five characteristics of Sanskrit Drama in Sanskrit. 5

vkn'kZ iz'ui= la-&1

dfUnde ¼CORE½

vङ्क;ktuk

d{kk & }kn'kh XII

vof/k% gkjk=;e	dkM la- 322
i.kkZङ्क% 100

Time : 3 Hours | Maximum Marks : 100

Øekङ्क%	mi'ke	iz'uizdkj%	vis{kr&mÙkjkf.k	vङ्क-lङ्केr%	vङ्क-foHkkx%
1. अ	तथ्यबोध–परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः एकपदेन उत्तरम्	(i) कूपः (ii) घटान् (iii) शिलाखण्डे (iv) बोपदेवः	½ ½ ½ ½	2
ब	तथ्यबोध–परीक्षणम्	लघूत्तरः पूर्णवाक्येन उत्तरम्	(i) आत्मग्लानिपीडितः बालः विद्यालयात् निरगच्छत् मार्गे च अहम् मूर्खः अस्मि इति अचिन्तयत्। (ii) गर्तः तु प्रतिदिनं घटस्थाप–नेन एव निर्मितः जातः।	1 1	2
स	भाषिकतत्त्वबोध–परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः			
द	भाषिकतत्त्वबोधः	(i) विशेषणचयनम् (ii) कर्तृपदचयनम् (iii) विलोमचयनम् (iv) संज्ञापदचयनम्	(i) सुन्दरं (ii) सर्वे (iii) तीव्रा (iv) बालस्य	1 1 1 1	4
ङ	शीर्षकप्रदानम्	अतिलघूत्तरः	(i) श्रमशीलः बालः vFkok अभ्यासात् लभते विद्याम् vFkok बोपदेवः vFkok किमपि अन्यत्	2	2
					10

[k.M% ^[k*

jpukRedddk;e

अस्मिन् खण्डे त्रयः प्रश्नाः सन्ति। प्रथमे प्रश्ने लिखिते पत्रे मञ्जूषातः शब्दान् चित्वा विभिन्नरिक्तस्थानानां पूर्तिः करणीया। दश रिक्तस्थानानि सन्ति। प्रतिशुद्धरिक्तस्थानपूर्तिकृते अर्धः (½) अङ्कः निर्धारितः।

Øekadः	mís';e	i'uidkj%	vif{kr&mÙkjkf.k	vad- ladsrk%	vad- foHkkx%
2.	पत्रलेखने अनौपचारिक–कार्यपरीक्षणम्	रिक्तस्थानपूर्तिः औपचारिककार्यम्	(i) चेन्नईतः	½	2
			(ii) वागीश	½	
			(iii) नमस्ते	½	
			(iv) प्रणवः	½	
			(v) परीक्षापरिणामः	½	
			(vi) विदितः	½	
	विषयवस्तु–बोधपरीक्षणम्	रिक्तस्थानपूर्तिः विषयवस्तु–अवबोधनम्	(vii) अङ्कान्	½	
			(viii) तव	½	
			(ix) यशः	½	3
			(x) वर्धापनं	½	
					5
3. अस्मिन् प्रश्ने लघुकथायां रिक्तस्थानपूर्तिः अपेक्षिता। (प्रतिशुद्धरिक्तस्थानपूर्तिकृते अर्धः (½) अङ्कः निर्धारितः।					
	अवबोधपूर्वकम् वाक्यसंचरना / प्रयोगपरीक्षणम्	रिक्तस्थानपूर्तिः	(i) अगच्छत्	½	
			(ii) तण्डुलान्	½	
			(iii) कपोतान्	½	
			(iv) निर्जने	½	
			(v) पश्यामि	½	
			(vi) वरम्	½	
			(vii) विनश्यति	½	
			(viii) जालेन	½	
			(ix) धैर्यम्	½	
			(x) कृतज्ञतया	½	5
4. कमपि एकं विषयम् अवलम्ब्य पंचवाक्यानि लेखनीयानि। अवबोधपूर्वकं वाक्यनिर्माणम्।					5

15

[k.M% ^x*

vu|i;|Dr0;kdj.ke

vfLeu [k.M Hkk"kk;k% rÙokuk 0;kogkfjdi;kx% vif{kr%A

vL; vk/kkj% ikB;iLrde ^_frdk* f}rh;% Hkkx% vfLrA

Øekd%	mís';e	i'uidkj%	vif{kr&mÙkjkf.k	vd& lJrk%	vd- foHkkx%
5.	वाक्येषु सन्धिच्छेद–परीक्षणम्	अनुप्रयोगात्मकः स्थूलाक्षरपदानां सन्धिविच्छेदः	(i) न + अनृतम्	1	
			(ii) जीवति+अनाथः+अपि	½ + ½	
			(iii) इनः + च	1	
			(iv) मम + उपवासः	1	
			(v) तत् + अन्यत्र	1	
			(vi) किम् + प्रभुः	1	
					6
6.	वाक्येषु समस्त–पदानां विग्रहः	स्थूलाक्षरपदानां विग्रहः करणीयः	(i) शोकस्य विमोकः	1	
			(ii) अहः च रात्रिः च तयोः समाहारः	1	
			(iii) स्थानम् अनतिक्रम्य	1	
			(iv) उत्सवः प्रियः येभ्यः ते	1	
			(v) शोभनः महिमा	1	
			(vi) राज्ञः लक्ष्मीः	1	
					6
7.	वाक्येषु कृदन्त–तद्धितप्रत्ययानां प्रयोगपरीक्षणम्	प्रकृति–प्रत्ययौ योजयित्वा वाक्य–सन्दर्भानुसारं रिक्त–स्थानपूर्तिः	(i) गन्तव्यम्	1	
			(ii) ज्ञातुम्	1	
			(iii) प्रणम्य		
			(iv) दत्तं	1	
			(v) भुक्त्वा	1	
			(vi) परमेष्ठिनः	1	
			(vii) निर्मत्स्यगतां	1	
			(viii) साहसिकम्	1	
					8

Øekङ्कः	mí';e	i'uidkj%	vif{kr&mÙkjkf.k	vङ्क&lङ्केrk%	vङ्क-foHkkx%
8.	कर्तृक्रियापद– अन्विति– परीक्षणम्	वाक्येषु शुद्धक्रियापद– चयनेन रिक्तस्थानपूर्तिः	(i) असि (ii) शोभन्ते (iii) शुद्धयन्ति (iv) आदेशय (v) करिष्यन्ति	1 1 1 1 1	
			vFkok or		
	विशेषण– पदचयन– परीक्षणम्	मञ्जूषातः विशेषणपद– चयनं कृत्वा रिक्तस्थानपूर्तिः	(i) आप्तकामाः (ii) दुरात्मा (iii) अतिनमितः (iv) शोभनानां (v) प्रशंसनीया	1 1 1 1 1	
					5
9.	उपपदविभक्ति– प्रयोग– परीक्षणम्	कोष्ठकात् शब्देषु उपपदविभक्ति– प्रयोगेण रिक्तस्थानपूर्तिः	(i) सिंहासनम् (ii) पारावतैः (iii) सन्तापेन (iv) विकृतिं (v) सर्वेभ्यः	1 1 1 1 1	
					5
					30

[k.M ^?k*

ifBrk'k&vocks/kue~

Hkkx% I

Øekad%	mís';e	iz'uizdkj%		vis{kr&mÙkjkf.k	vad& laHkkrk%	vad& foHkkx%
10.	पठितगद्यांश– बोध परीक्षणम्	अ	अतिलघूत्तरः एकपदेन उत्तरम्	(i) सूर्यः (ii) वेदाः	½ ½	1
		ब	लघूत्तरः पूर्णवाक्येन	सूर्यः वत्सरं द्वादशसु भागेषु विभनक्ति	1	1
	भाषिकतत्व– प्रयोगपरीक्षणम्	स.(i)	पर्यायपद– चयनम्	(i) अहोरात्रम्	½	1
		(ii)	विशेषणपदम्	(ii) षण्णाम्	½	
		द(i)	सर्वनामस्थाने संज्ञाप्रयोगः	(i) सूर्यस्य कृते	1	
		(ii)	कर्तृपदचयनम्	(ii) गायत्री	1	2
						5
11.	पठितनाट्यांश– बोधपरीक्षणम्	अ.	अतिलघूत्तरः एकपदेन उत्तरम्	(i) चेटी (ii) गुणरसज्ञस्य	½ ½	1
		ब.	लघूत्तरः पूर्णवाक्येन उत्तरम्	चारुदत्तस्य बहुलपक्ष– चन्द्रस्य ज्योत्स्नापरिक्षयः इव रमणीयोऽयं दरिद्रभावः।	1	1
	भाषिकतत्व– प्रयोगपरीक्षणम्	स.	विशेषणपद– चयनम्	(i) रमणीयः, अयम्	½	1
		(ii)	विलोमपद– चयनम्	(ii) 'विपन्न' इति	½	
		द. (i)	सर्वनामस्थाने संज्ञाप्रयोगः	(i) 'चारुदत्तस्य' कृते	1	
		(ii)	कर्तृपदचयनम्	(ii) अहम्	1	2
						5

Øekad%	mís';e	iz'uidkj%	vis{kr&mÙkjkf.k	vad& ladsr%	vad- foHkkx%
12.	पठितपद्यांश–बोधपरीक्षणम्	अ. अतिलघूत्तरः एकपदेन उत्तरम् लघूत्तरः	(i) पादपाः (ii) शिक्षा	½ ½	1
		ब. लघूत्तरः पूर्णवाक्येन उत्तरम्	हुतं च दत्तं च सदैव तिष्ठति	1	1
	भाषिकतत्त्व–प्रयोगपरीक्षणम्	स. (i) विशेषणपद–चयनम् (ii) पर्यायपद–चयनम्	(i) जलस्थानगतं (ii) क्षयम्	½ ½	1
		द. (i) विलोमपद–चयनम् (ii) कर्तृपदचयनम्	(i) 'गच्छति (ii) पादपाः	1 1	2
					5
13.	प्रसङ्गसन्दर्भ–ग्रन्थलेखक–परिचयपरीक्षणम्	1. सन्दर्भग्रन्थस्य लेखकस्य च् नामलेखनम्	(i) पञ्चतन्त्रम्–ग्रन्थः श्री विष्णुशर्मा–लेखकः	1 1	2
		2. कः कथयति कं कथयति	(i) चारुदत्तः (कः) विदूषकम् (प्रतिं)	1 1	2
14.	भावार्थबोध–परीक्षणम्	प्रदत्तेषु भावार्थेषु शुद्धभावार्थचयनम्	I 'ख' II 'ग'	2 2	4
			अथवा		
	भावार्थबोध–परीक्षणम्	प्रदत्तभावार्थे मञ्जूषादत्तपदैः पूरणम् (रिक्तस्थानपूर्तिः)	(i) उत्पादकः (ii) हिमेन (iii) हिमालयस्य (iv) विनष्टुं (v) गुणसमूहेषु (vi) दृश्यते (vii) चन्द्रस्य (viii) कलङ्कः	½ ½ ½ ½ ½ ½ ½ ½	4

Øekड्क:	mís';e	iz'uizdkj%	vif{kr&mÙkjkf.k	vड्क& lड्केrk%	vड्क- foHkkx%
15.	अन्वय– परीक्षणम्	रिक्तस्थान– पूर्तिमाध्यमेन	अ (i) सर्वाणि	½	
			(ii) अनुपश्यति	½	
			(iii) आत्मानम्	½	
			(iv) न	½	2
			आ (i) सुहृदः	½	
			(ii) आपदः	½	
			(iii) यत्	½	
			(iv) तस्य	½	2
16.	सार्थकवाक्य– संयोजनपरीक्षणम्	वाक्यानां क्रमानुसारं संयोजनम्	(i) → घ	1	
			(ii) → ग	1	
			(iii) → क	1	
			(iv) → ख	1	4
17.	प्रसङ्गानुसारम्– अर्थचयनम्	त्रिषु शब्दार्थेषु शुद्धशब्दार्थ– चयनम्	(i) मनः	1	
			(ii) जलेन	1	
			(iii) मुखम्	1	
			(iv) सर्पगृहम्	1	4

35

[k.M ^?k*

Hkkx% 2

lkekU; laLd`r lkfgR; ifjp;% **10**

Øekad%	mís';e	iz'uizdkj%	vis{kr&mÙkjkf.k	vad& ladsrk%	vad& foHkkx%
18.	संस्कृतसाहित्य–बोध परीक्षणम्	कवीनां देश–काल–कृतीनाम् उल्लेखनम्	देशः (i) प्रीतिकूटः ग्रामः	1	
			(ii) पद्मपुरम्	1	3
			(iii) कुसुमपुरम्	1	
			कालः (i) ई.पू.–चतुर्थ शताब्दी	1	
			(ii) षष्ठी शताब्दी	1	3
			(iii) एकोनविंशति शताब्दी	1	
			कृतिः (i) किरातार्जुनीयम्	1	
			(ii) सुश्रुत संहिता	1	4
			(iii) पञ्चतन्त्रम्	1	
			(iv) अर्थशास्त्रम्	1	
		vFkok			**10**
	संस्कृतसाहित्य बोध परीक्षणम्	अ मञ्जूषायां प्रदत्त–पदैः रिक्तस्थान–पूर्तिमाध्यमेन	(i) पद्यम्	½	
			(ii) खण्डकाव्यम्	½	
			(iii) नव	½	
			(iv) शृङगारः	½	
			(v) निकषं	½	
			(vi) आख्यायिका	½	
			(vii) दश	½	
			(viii) नाटकम्	½	
			(ix) अभिनयः	½	
			(x) नान्दी	½	5
	संस्कृतसाहित्य अवबोध परीक्षणम्	ब संस्कृतनाटकानां पञ्चवैशिष्ट्य लेखनम्	ukVde&		
			(i) अभिनयः प्रमुखं तत्त्वम् भवति।	1	
			(ii) कथानकं प्रसिद्धं पौराणिकं वा भवति।	1	
			(iii) नाटकस्य आरम्भे नान्दी भवति। अन्ते च भरतवाक्यम्	1	5
			(iv) न्यूनतमाः पञ्च अङ्काः भवन्ति।	1	
			(v) शृंगारः वीर करूणः वा रसः भवति।	1	**10**

vkn'ki'ui=e l- 2
¼lLdrdfUnde½
dkM l[;k & 322
d{kk }kn'kh

[k.M ^d* Section A
vifBrk'kkockk/kue

10

Reading -Comprehension

1- **v/kkfyf[krx|k'k ifBRok i'ukuke mÙkjkf.k fy[kr**
fuEufyf[kr x|k'k dk i<dj i'uk d mÙkj fyf[k,A
Read the following passage and answer the questions.

एकदा महात्मागांधिः लेखनकार्ये व्यस्तः आसीत्। लेखन्यां मसी समाप्ता जाता। सः तां लेखनीं तत्रैव स्थापयित्वा अन्यत्र गतवान्। पुनः आगत्य लेखनीम् अपश्यत्। पार्श्वे स्थितः आश्रमवासी अवदत्–बापू! तस्यां मसी न आसीत् अतः मया लेखनी बहिः प्रक्षिप्ता। महात्मागान्धिः अवदत्–किमपि वस्तु क्षुद्रं मूल्यरहितं न भवति। किम् अस्माकं देशः तादृशं धनस्य अपव्ययं कर्तुं शक्नोति? नैव। गच्छतु भवान् ताम् एव लेखनीम् आनयतु। तस्यामेव मसीं पूरयित्वा कार्यं करिष्यामि इति।

यदि वयं सर्वे अपि देशस्य धनविषये तथा जागरूकाः भवामः तर्हि देशस्य दारिद्र्यम् अचिरादेव दूरी–भवेत्। अस्माकम् आवश्यकतानुसारमेव अस्माकं समीपे धनं, वस्त्राणि अन्यानि च वस्तूनि भवेयुः एष एव योगस्य प्रमुखाः नियमः।

i'uk%

I- **,dinu mÙkjr**
,d in e mÙkj nhft,A
Answer in one word only. ½ × 4 = 2

(i) अस्माकं देशः कस्य अपव्ययं कर्तुं न शक्नोति?

(ii) कः महात्मनः पार्श्वे स्थितः?

(iii) लेखन्यां का समाप्ता जाता?

(iv) मसीरहितां लेखनीम् आश्रमवासी कुत्र अक्षिपत्?

II- **i.kokD;u mÙkjr**
lLdr d i.kokD; e mÙkj nhft,A
Answer in one sentence. 1 × 2 = 2

(i) योगस्य प्रमुखः नियमः कः?

(ii) आश्रमवासिना महात्मनः लेखनी किमर्थं क्षिप्ता?

III· funs'kkuqlkja iz'uku mÙkjr
funs'k d s vuql kj iz'uks d s mÙkj nsA

Do as directed 1× 4 = 4

(i) ''किमपि वस्तु क्षुद्रं मूल्यरहितं न भवति''इत्यस्मिन् वाक्यांशे ''क्षुद्रम्''इति पदं कस्य विशेषणम्? 1

(ii) ''गच्छतु भवान्, ताम् एव आनयतु'' इत्यस्मिन् वाक्ये ''आनयतु'' इति क्रियापदस्य कर्ता कः? 1

(iii) ''अन्तः'' इति पदस्य कः विलोमः अत्र प्रयुक्तः? 1

(iv) ''शीघ्रमेव'' इत्यस्य कः पर्यायः अत्र प्रयुक्तः? 1

IV· vL; x|ka'kL; lefprs 'kh"kZda fy[krA 2
bl x|ka'k d s fy, lefpr 'kh"kZd fyf[k,A

Please give a suitable title to this paragraph.

[k.M% ^[k*

Section B

15

laLd`rsu jpukRedk dk;Ze

Writing Skill in Sanskrit

2· dkuiqjfuoklh vkyksd% dydkrkfuokfluea viwokZukekuea Lofe=ae ,da i=ezvfy[krA oLrqr% vkyksd% ,dL;k lkekU;Kkuizfr;ksfxrk;ka izfrHkkfxrka vdjksr~] ;su rL; 0;fDrRos vrho ifjorZua tkreA vfLeu~ i=s e tq"kkr% mfprinS% fjDrLFkkukfu iwjf;Rok i=a iqu%fy[krA

dkuiqj fuoklh vkyksd us dydRrk fuoklh viwoZ uked viu s fe= dks ,d i= fy[kkA oLrqr% vkyksd u s ,d lkekU;Kku izfr;ksfxrk esa Hkkx fy;k Fkk ftlls mlds 0;fDrRo esa cgqr ifjorZu gqvkA mlds }kjk fy[ks i= esa e tq"kk es fn, inks esa ls mfpr in yss dj [kkyh LFkku Hkjrs gq, i= dks iqu% mÙkj iqfLrdk esa fyf[k,A

Aloka, a resident of Kanpur, wrote a letter to his friend Apoorva, living in Calcutta Actually Aloka had just participated in a ''General Knowlege Quiz Competition', which brought about remarkable change in his personality. File in the blanks in the following letter and rewrite it in your answer sheet (select the words from the box.)

½ × 10=5

प्रिय ———(ii) ————(i)

तिथिः ————

सप्रेम नमस्ते।

अत्र कुशलं तत्रास्तु। आशासे यदिमं समाचारं प्राप्य भवान् प्रसन्नो भविष्यति यत् अस्माकं नगरे आयोजितायाम् अन्तर्विद्यालयसामान्यज्ञानप्रतियोगितायां मया विद्यालयस्य ———————— (iii) कृतम्, प्रथमपुरस्कारः च जितः। इयं प्रतियोगिता अस्माकम् एव विद्यालये समायोजिता। अस्याम् नगरस्य विविधविद्यालयेभ्यः त्रिंशत् प्रतिभागिनः आगच्छन्। अस्यै प्रतियोगितायै अहं पूर्वमेव विविधपुस्तकानाम् अध्ययनम्————(iv) ।

अस्यां प्रतियोगितायां मया पुरस्कारः एव न जितः स्वविद्यालयस्य पित्रोश्च गौरवमेव न ———— (v) अपितु अन्ये अनुभवाः अपि महत्त्वपूर्णाः आसन् यथाहि अन्यसहभागिभिः सह संभाषणं, म चस चालनं, प्रस्तुतीकरण च। अपि च परिश्रम–आत्मविश्वास–सहयोगादीनां गुणानां ———— (vi) मम व्यक्तित्वे पि——— ———(vii) परिवर्तनं जातम्।

मम अनुरोधः अस्ति यत् भवानपि ———— (viii) प्रतियोगितासु प्रतिभागी भवतु। सर्वेभ्यः यथायोग्यम् अभिवादनम्।

भवदीयः सुहृद्

---------------(ix)

वेष्टनम्

श्रीमान् अपूर्व घोषः
52 बालीग जः, कोलकाता
———— (x)

e tl"kk

विकासेन, वर्धितम्, अभूतपूर्वम्, अपूर्व! कानपुरतः अकरवम्, आलोकः, पश्चिमबंगालप्रदेशः, एतादृशीसु, प्रतिनिधित्वम्

3- inÙklwphlgk;su v/kksnÙkk dFkk ifjf;Rok mÙkjiqfLrdk;k iqu% fy[krA

½ ×10= 5

e tl"kk e= fn, x, 'kCnksa dh lgk;rk ls fuEufyf[kr y?kqdFkk dks Hkjh dj mÙkj iqfLrdk esa iqu% fyf[k,A

Please fill in the blanks in the following story and rewrite it in your answer sheet with the help of words given in the box.

बर्दवान–रेलयान–विश्रामस्थले कदाचित् रात्रौ/आङ्ग्लपरिधानविभूषितः कश्चित् भद्रपुरुषः ____________ (i) अवारोहत्। तस्य पार्श्वे एका पेटिका आसीत् यां वाहयितुं सः ____________ (ii) पश्यन् उवाच "भारवाहक! भारवाहक!" इति। तत्कालमेव एकः ____________ (iii) जनः तत्रागतः तं चापृच्छत् "भवान् किम् इच्छति"? इति! सोऽवदत् 'इमां पेटिकां ____________ (iv) मया सह आगच्छ।" स एवमेव अकरोत्। यदा तौ ____________ (v) बहिरागतौ तदा पेटिकास्वामी तस्मै कतिचित् मुद्राः अयच्छत् परं सः अस्वीकृतवान्। "तर्हि कति मुद्राः वा छसि" इति पृष्टः भारवाहकः गभीरस्वरेण अवदत् धनं तु न इष्टं मया परं एकः ____________ (vi) वर्तते यत् अद्यप्रभृतिः ____________ (vii) भवेत् भवान्। स्वभारं स्वयमेव वहने लज्जितः न भवतु इति। "भारवाहकस्य ____________ (viii) श्रुत्वा विस्मितः भद्रपुरुषः यावदेव समीपे दीपप्रकाशे सध्यानं पश्यति, तावदेव तं ____________ (ix) तस्य चरणयोः पतति। वस्तुतः स भारवाहको न कश्चिदन्यः परं विख्यातनामा श्री ईश्वरचन्द्रः विद्यासागरः एव आसीत् यस्य ____________ (x) एव स दूरात् तत्र आगतः आसीत्।

e~tw"kk

अनुरोधः, गुरुगम्भीरस्वरं, रेलयानात्, वोढ्वा, परिचीय, साधारणवस्त्रयुक्तः, इतस्ततः दर्शनार्थम्, स्वावलम्बी, विश्रामस्थलात्

4- v/kkfyf[krs"kq ,dfLeu~ fo"k;s vf/kdre~ i~pokD;kfRede~ ,de~ vuqPNsna laLd`rsu fy[krA
fdlh ,d fo"k; ij ikap okD;ksa dk laLd`r esa ,d vuqPNsn fyf[k,A

Write a passage of five sentences in Sanskrit on any one of the following topics.

1× 5 =5

(i) मम विद्यालयस्य क्रीडाङ्गणम्।

(ii) क्रिकेट – क्रीडा मया दृष्टा।

(iii) दीपावलि – मेलकम्।

[k.M% ^x* Section C

vuqiz;qDr0;kdj.ke~ vuqiz;qDr 0;kdj.k

30

Applied Grammar

5- **v/kksfyf[krs"kq okD;s"kq LFkwyk{kjinkuka lfU/kfoPNsna d#r**
uhps fy[ks okD;ksa esa LFkwyk{kjinksa esa lfU/kfoPNsn dhft,A

Disjoin Sandhis in the bold-typed words in the following sentences $1 \times 6 = 6$

(i) इदं लेह **¼bR;fHk/kkuu½** प्रसिद्धं पर्यटनस्थलम्।

(ii) **¼dfLeaf'pr½** जलाशये त्रयो मत्स्याः प्रतिवसन्ति स्म।

(iii) **,rnnoL;** शासनम्।

(iv) **¼,"k ,o½** अङ्गीकरोति उत्तरं दक्षिणं चायनम्।

(v) **¼f}rh;HkkxLlzpkjk½** जलस्यान्तर्बहिः क्रमात्।

(vi) **¼fueTtrhUnk%½** किरणेष्विवाङ्कः।

6. **v/kksfyf[krs"kq okD;s"kq LFkwyk{kjinkuka foxzgk% y{kuh;k%A** $1 \times 6 = 6$
fuEufyf[kr okD;ksa esa ekVs v{kjksa esa Nis inksa dk foxzg dhft,A

Disjoin Compounds in the bold- lettered words in the following sentences.

(i) **fu#)p"VL;** मे बन्धनमिव राज्यम्।

(ii) न **fu"ii;ksatu** प्रभुभिः आहूयन्ते अधिकारिणः।

(iii) **nsogr** सुरक्षितम् अपि नश्यति।

(iv) भगवान् मरीचिमाली **cãk.MHkk.ML;** दीपकः।

(v) सूर्य एव **vgksjk=** जनयति।

(vi) जलाशये **eRL;=;** प्रतिवसति।

7- **fuEufyf[krs"kq okD;s"kq dks"BdkUrxZr izd`fr izR;;ksa p ;kstf;Rok fjDrLFkkukfu iwj;rA**
uhps fy[ks gq, okD;ksa esa dks"Bd ds vUrxZr izd`fr ds lkFk fufn"V izR;; dks tksM+dj [kkyh LFkku Hkfj,A

Rewrite the following sentences by adding suffixes to the roots and words given in the brackets. $1 \times 8 = 8$

(i) चाणक्येन कौमुदीमहोत्सवः (प्रति+सिध्+क्त)।

(ii) मत्स्यपूर्णजलाशयं दृष्ट्वा मत्स्यजीविनः (वच्+क्तवतु)।

(iii) सर्वे छात्राः प्रक्षेपकमाध्यमेन यात्रावृत्तं ―――――― उत्सुकाः अभवन् (दृश् + तुमुन्)

(iv) सर्वसम्पदः परस्परानुकूलेषु नृपमंत्रिषु――――कुर्वन्ति। (रम् + क्तिन्)

(v) चारुदत्तः यथाविभवं गृहदैवतान् ―――――― आगच्छति। (अर्च् + शतृ)

(vi) ―――――――――― मरीचिमालिनः प्रकाशः अरुणः वर्तते। (भग + मतुप्)

(vii) योग्याः जनाः मायाविषु ―――――― भवन्ति। (माया + इनि)

(viii) ―――――――――― यद्यस्ति किं पातकैः (पिशुन + तल्)

8- v/kkfyf[kr'k okD;'k dr`fØ;kin;k% vfUofr% fØ;rkeA
v/kkfyf[kr okD;k e dr`k vkj fØ;k dh vfUofr djsA

Please write the suitable verb according to the subject or vice versa in the following sentences. (1 × 5 =5)

(i) लद्दाखस्य प्राकृतिकस्थलानां विषयेऽपि भवती किञ्चित्――――――। (ब्रवीतु/ब्रूहि)

(ii) ――――――विमानशास्त्रे त्रिपुरविमानस्य वर्णनं श्रूयताम्। (यूयम्, युष्माभिः)

(iii) श्वः प्रभाते मत्स्यजीविनः अत्र ――――― (आगच्छन्, आगमिष्यन्ति)

(iv) तर्हि उपालब्धुं वयम् अत्र ――――――――――। (आहूताः, आहूतवन्तः)

(v) कनकं चतुर्भिः प्रक्रियाभिः――――――――――। (परीक्षते, परीक्ष्यते)

अथवा

v/kknÙk'k okD;'k eatw"kkr% fpRok fo'ks"k.kin% lg fo'ks";in% ;kt;rA
v/kkfyf[kr okD;k e fo'ks"k.k in eatw"kk l NkV dj fo'ks"; ink d lkFk tkM+A

Match the adjectives with nouns in the following sentences. (The adjective words have been given in the box)

(i) चन्द्रगुप्तः ――――――― कुसुमपुरं द्रष्टुमिच्छति स्म।

(ii) मत्स्यजीविनः ――――――――― सरः अपश्यन्।

(iii) शीते ऋतौ लद्दाखप्रदेशे ――――――― हिमराशिः निपतति।

(iv) ――――――――― पादपाः निपतन्ति।

(v) शालिनी भारतस्य ――――――― सुश्रुतस्य विषये सभायाम् अभाषत।

eatw"kk

महान्, अतिरमणीयं, सुबद्धमूलाः, प्रमुखचिकित्सकस्य, बहुमत्स्यं

9- v/kksfyf[kr"kq okD;"kq dks"BdkUrxZr'kCns"kq mi infoHkfDr i;qDr; fjDrLFkkuiwfr% fØ;rke~A

uhps fy[ks gq, okD;ksa esa dks"Bd esa fn, x, 'kCnksa ds lkFk mi in foHkfDr dk i;ksx djds [kkyh LFkku Hkfj,A

Please fill in the blanks after using suitable "Upapada-vibhaktis" with the words given in the brackets in the following sentences. 1 × 5 =5

(i) जनाः ——————— प्रति भक्तिभावं दर्शयन्ति (बुद्ध)

(ii) मत्स्यजीविभिः तत्सरः ——————————— सह निर्मत्स्यतां नीतः। (यद्भविष्य)

(iii) न ————————— अन्तरा चाणक्यः स्वप्नेऽपि चेष्टते। (प्रयोजन)

(iv) स्वभावाद् एव ———————— उत्सवाः रोचन्ते। (मानव)

(v) अपयशः यदि जीवने, किं ————————। (मृत्यु)

[k.M% ^?k* Section D

Hkkx% ¼1½ (Part -1)

ifBrk'k&vocks/kue~

(Text - Book Comprehension)

35

10- v/kksfyf[kr x|ka'k ifBRok i'uku~ mÙkjrA

uhps fy[ks x|ka'k dks i<+dj i'uksa ds mÙkj nsA

Answer the questions after reading the following prose passages. (5)

वयं वर्तमानकाले सङ्गणकस्य प्रयोगं कुर्मः। परन्तु यदि आर्यभटेन शून्यस्य आविष्कारः न कृतः स्यात् तर्हि सङ्गणकभाषायाः जन्म एव न अभविष्यत्, यतः तत्र तु एकं शून्यञ्च द्वे एव संख्ये महत्त्वपूर्णे। अपि च, सूर्यं प्रति पूर्वाभिमुखा पृथिवी 365.25 वारं प्रतिवर्षं भ्रमति। आधुनिकैः वैज्ञानिकैरपि तथैव मन्यते। अपि च यथा नौकायां स्थितः मनुष्यः वृक्षादीन् पृष्ठं प्रति गच्छतः पश्यति, तथैव नक्षत्रादयः भूमध्यरेखास्थितस्य नरस्य कृते पश्चिमं प्रति धावन्तः प्रतीयन्ते।

I- ,dinsu mÙkjr ½ × 2 =1

,d 'kCn esa mÙkj nsA

Answer in one word.

(i) पृथिवी कतिवारं प्रतिवर्षं भ्रमति?

(ii) वर्तमानकाले वयं कस्य प्रयोगं कुर्मः?

II. i|.kokD;su mÙkjrA 1 × 1 =1

i|j| okD; e| mÙkj nhft.A

Answer in a complete sentence.

(i) भूमध्यरेखास्थितस्य नरस्य कृते किं प्रतीयते?

III- funs'kkuqlkjs i|'uku mÙkjr ½ × 2 =1

funs'kkuqlkj i|'uk d| mÙkj nhft,A

Do as directed

(i) ''पूर्वाभिमुखा इति पदं कस्य विशेषणम्?

(ii) ''प्राचीनैः'' इति पदस्य कः विलोमः अत्र प्रयुक्तः?

(iii) 'तर्हि संगणकभाषायाः जन्म एव न अभविष्यत्''' इत्यत्र ''अभविष्यत्'' इति क्रियापदस्य कर्ता कः?

(iv) ''ग्रहादय'' इति पदस्य कः पर्यायः अत्र प्रयुक्तः?

11. v/kkfyf[kr| ukV';kak'k ifBRok i|'uku mÙkjrA 1+ 1=2

uhp| fy[k| ukV';k'k dk i<dj mÙkj nhft,A

Answer the questions after reading the following Drama passage.

¼ukV';kak'k½

¼uiF;| o|rkfydk| dk0;ikB| d|#r½ (5)

राजा आर्य वैहीनरे! आभ्यां वैतालिकाभ्यां सुवर्णशतसहस्रं दापय।

चाणक्यः (सक्रोधं) वैहीनरे! तिष्ठ तिष्ठ ! न गन्तव्यम्। किमस्थाने महान् प्रजाधनापव्ययः?

राजा (सक्रोधं) आर्येण एवं सर्वत्र निरुद्धचेष्टस्य मे बन्धनमिव राज्यं, न राज्यमिव।

चाणक्यः वृषल! स्वयम् अनभियुक्तानां राज्ञाम् एते दोषाः सम्भवन्ति।

राजा यद्येवं तर्हि कौमुदीमहोत्सवस्य प्रतिषेधस्य तावत् प्रयोजनं श्रोतुमिच्छामि।

चाणक्यः कौमुदीमहोत्सवस्य आयोजनस्य प्रयोजनं ज्ञातुमिच्छामि।

राजा प्रथमं मम आज्ञायाः पालनम्।

चाणक्यः प्रथमं ममापि तव आज्ञायाः उल्लंघनमेव। अथ अपरमपि प्रयोजनं श्रोतुमिच्छसि, तदपि कथयामि।

राजा कथ्यताम्।

I- ,dinsu mÙkjr ½ × 2 =1

,d 'kCn e| mÙkj nhft,A

Answer in one word.

(i) कौमुदीमहोत्सवः केन प्रतिषिद्धः?

(ii) वैतालिकौ कुत्र काव्यपाठं कुरुतः?

II. **i.kokD;u mÙkjr** 1×1 =1

ij okD; e mÙkj nhft,A

Answer in one Sentence.

चाणक्यस्य मते वैतालिकाभ्यां शतसहस्रसुवर्णस्य दानं किम् अस्ति?

III. **funs'kkulkj mÙkjr** ½ +½+1+1=3

funs'k d vulkj mÙkj nhft,A

Do as directed

(i) ''प्रथम मम आज्ञायाः पालनम्'' इत्यत्र ''मम'' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ii) ''व्ययः'' इत्यस्य पदस्य कः विलोमः अत्र प्रयुक्तः?

(iii) ''यद्येवं .... श्रोतुम् इच्छामि'' इत्यत्र ''इच्छामि'' इति क्रियापदस्य कर्ता कः?

(iv) ''तिरस्करणं'' इति पदस्य कः पर्यायः अत्र प्रयुक्तः?

12- v/kkfyf[kr i|k'k ifBRok i'uku mÙkjrA 1+ 1=2

uhp fy[k i|k'k dk i<dj mÙkj nhft,A

Answer the questions after reading the following poetry passage.

भागत्रयं भवेदस्य त्रिपुरस्य यथाक्रमम्।
तेषु प्रथमभागस्य सञ्चारः पृथिवीतले,
द्वितीयभागस्सञ्चारो जलस्यान्तर्बहिः क्रमात्।
तृतीयभागस्सञ्चारस्त्वन्तरिक्षे भवेत् स्वतः।।

I. **,dinu mÙkjr** ½ × 2 =1

,d in e mÙkj nhft,A

Answer in one word.

(i) प्रथमभागस्य सञ्चारः कुत्र स्यात्?

(ii) अत्र कस्य वर्णनं कृतम्?

II. **i.kokD;u mÙkjrA** 1 × 1 =1

ij okD; e mÙkj nhft,A

Answer in one Sentence.

जलस्यान्तर्बहिः कस्य भागस्य सञ्चारो भवेत्?

III. **;Fkkfuns'ke mÙkjr** ½ + ½ + 1+1 =2

funs'k d vuqlkj mÙkj nhft,A

Answer as directed

(i) ''आकाशे' इति पदस्य कः विलोमः अत्र प्रयुक्तः?

(ii) ''भवेदस्य'' इत्यस्मिन् 'अस्य' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(iii) ''क्रमशः'' इति पदस्य कः पर्यायः अत्र प्रयुक्तः?

(iv) ''तृतीयभागस्सञ्चारस्त्वन्तरिक्षे भवेत् स्वतः'' इत्यस्मिन् वाक्ये सञ्चारः इति कर्तृपदस्य किं क्रियापदं प्रयुक्तम्?

13- I. **funs'kkuqlkj i'uku mÙkjr** 1+1 = 2

funs'k d vuqlkj i'uk d mÙkj nhft,A

Do as Directed

^,"k Hkxoku ekf.kjkdk'ke.MyL;] pØorh [kpjpØL;*A

(अ) एषा पङ्क्तिः कस्मात् ग्रंथात् संकलिता?
(आ) अस्य ग्रन्थस्य लेखकः कः?

II. **v/kkfnÙk okD;k'k dku d ifr mDr** 1+1 = 2

fuEufyf[kr okD;k'k fdlu fdl dgk g

Who has spoken the following "Vakyansa" and to whom?

''अशक्तैः बलिनः शत्रोः कर्तव्यं प्रपलायनम्'' ।

14- **v/kkfyf[krL; 'ykd};L; inÙkHkkokFk e t"kkr mfprin**

ijf;Rok fy[krA

fuEufyf[kr nk 'ykdk dk HkkokFk fn;k x;k gA e t"kk dh

lgk;rk l mfpr ink l Hkj dj fyf[k,A

The explanation of two shlokas has been given. Fill in the blanks with the help of words given in the box. 2+2=4

I. सुखं हि दुःखान्यनुभूयशोभते

यथान्धकारादिव दीपदर्शनम्

सुखात्तु यो याति दशां दरिद्रतां,

स्थितः शरीरेण मृतः स जीवति।

यथा अन्धकारात् निर्गम्य दीपस्य प्रकाशस्य दर्शनं (i) --------------भवति, एवमेव दुखानां पश्चात् सुखस्य आगमनं शोभनं भवति किन्तु (ii) ---------------------------- जीवने सहसा वज्रपातमिव (iii) -------------- अनुभवः तु साक्षात् (iv) -------------- असहनीयः एव।

II. उत्तिष्ठत जाग्रत, प्राप्य वरान् निबोधत
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्गं पथस्तत् कवयो वदन्ति।

हे जनाः यूयं (i) -------------- त्यक्त्वा ज्ञानं प्राप्तुं तत्पराः भवत। (ii) -------------- समीपे गत्वा ज्ञानं प्राप्तुं प्रयत्नं कुरुत। यथा (iii) ------------------- तीक्ष्णा धारा पद्भ्यां अनुल्लङ्घनीया तथैव (iv) -------- ज्ञानमार्गम् अतीव कठिनं वदन्ति।

e`t"kk

महापुरुषाणाम्, छुरिकायाः, अज्ञाननिद्राम्, सुखदं, ऐश्वर्यशालिनि, दारिद्र्यस्य, महापुरुषाः मरणमिव

15- v/kkfyf[krL; 'ykd};L; iznÙkkUo;s fjDrLFkkuifr% dRok iqu% fy[krA 2+2=4
uhps nks 'yksdksa dk vUo; fn;k x;k gSA mues fjDr LFkkuksa dh iwfrZ djds vUo; iqu% fyf[k,A

The prose-order-renderings of the following two shlokas have been given below. Fill in the blanks and rewrite the prose order.

(i) व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं, ½ × 4=2

भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।

प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधा

नसंवृत्ताङ्गान्निशिता इवेषवः।।

vUo;%

ते मूढधियः (i)——————व्रजन्ति, ये मायाविषु (ii)————— न भवन्ति।हि शठाः तथाविधान् (iii)———————— (जनान्) निशिता (iv)——————इव घ्नन्ति।

(ii) अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य,
हिमं न सौभाग्यविलोपि जातम्,
एको हि दोषो गुणसन्निपाते,
निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः ।।

vUo;%

यस्य (i) ——————— हिमम् (ii)—————— न जातम्। हि (iii) —————— एकः दोषः इन्दोः (iv)—————— अङ्कः इव निमज्जति।

16- v/kksfyf[krkuka ^d* LrEHkL; okD;ka'kkuka ^^[kLrEHkL; okD;ka'kS% lg mfpresyua d#rA**

fuEufyf[kr ^d* LrEHk esa iznÙk okD;ka'kksa dk ^^[k LrEHk esa fn, x, okD;ka'kksa ds lkFk mfpr feyku dhft,A**

Match the sentences of column ^d* with those of column ^^[k** 1×4=4

LrEHk ^^d**		**LrEHk ^^[k****	
(i)	येन आक्रमन्त्यृषयः आप्तकामाः	अ)	तर्हि चतुर्गुणेन सीसेन शोधयेत।
(ii)	यदि स्वर्णम् अशुद्धं भवेत्।	ब)	न उत्सवकालः।
(iii)	स्टाकप्लेस संग्रहालये	स)	यत्र तत् सत्यस्य परं निधानम्।
(iv)	सोऽयं व्यायामकालो	द)	सप्तसप्ततिः कक्षाः सन्ति।

17- v/kksfyf[kr"ka okD;s"kq js[kkf¤rinkuka iz laxkuqlkjae mfprkFkZa dks"Bdkr~ fpRok fy[krA

fuEufyf[kr okD;ksa esa js[kkf¤r 'kCnksa ds izlaxkuqlkj mfprkFkZ dks"Bdksa ls pqu dj fyf[k,A

Write the meanings of the bold-typed words which are suitable to the context). Select the words from the brackets. 1×4=4

(i) एष भगवान् मरीचिमाली चक्रवर्ती **[kpje.MyL;A** (नक्षत्रमण्डलस्य, पक्षिसमूहस्य, राक्षसगणस्य)

(ii) इदानीं **nqxZlaLdkj%** कर्तव्यः। (दुर्गस्य सुरक्षादिकार्यं, दुर्गसंबंधी–उत्सवः, दुर्गस्य शोभाभिवृद्धये प्रसाधनम्)

(iii) एतादृशैः जनैः राजा **r`.kor~** गण्यते। (शष्पखण्डमिव, महत्त्वपूर्णः, तुच्छः इव)

(iv) अरक्षितं तिष्ठति **nSojf{kre~A** (स्वामिरक्षितम्, भाग्यरक्षितम्, देवतारक्षितम्)

[k.M% ^?k* Section D

Hkkx% ¼II½ (Part II)

lLd`r lkfgR;ifjp;%

(General Introduction to Sanskrit Literature)

18- v/kksfyf[krkuka dohuka n'kdkyd`rhuka ;FkkfunZs'ka ukekfu fy[krA 10
fuEufyf[kr dfo;ksa ds n'k] le; vkSj jpukvksa ds uke funsZ'kkuqlkj fyf[k,A
Write the names of the place, time and works of the following poets, as per instructions.

I. कवयः

(i) अम्बिकादत्तव्यासः			
(ii) भर्तृहरिः	}	देशः	$1 \times 3 = 3$
(iii) भासः			

II. कवयः

(i) भर्तृहरिः			
(ii) विशाखदत्तः	}	कालः	$1 \times 3 = 3$
(iii) अम्बिकादत्तव्यासः			

III. कवयः

(i) वराहमिहिरः			
(ii) कौटिल्यः	}	काऽपि एका रचना	$1 \times 4 = 4$
(iii) विष्णुशर्मा			
(iv) भारविः			

vFkok (OR)

v- fuEufyf[krokD;s"kq dks"BdkH;% fpRok mfpr'kCn% fjDrLFkkuiwfr% fØ;rke~A
fuEufyf[kr okD;ksa esa dks"Bdksa ls pqudj mfpr 'kCnksa ls fjDr LFkku iwfrZ dhft,A
Fill in the blanks in the following sentences with the suitable words. (Select the words from the brackets). $(1 \times 5 = 5)$

(i) नाटकस्य आरम्भे विघ्नविनाशाय देवानां स्तुतिः ——— भवति। (आत्मगतम्, भरतवाक्यं, नान्दी)

(ii) ——————— गद्यकाव्यस्य भेदः अस्ति। (रूपकं, आख्यायिका, स्तोत्रं)

(iii) क चुकी राजभवनस्य ——————— वर्तते। (सन्देशवाहकः, वृद्धसेवकः, राजपुरोहितः)

(iv) महाकाव्यं ——————— भेदः भवति। (पद्यकाव्यस्य, गद्यकाव्यस्य, नाटकस्य)

(v) गद्यपद्यमयं काव्यं ——————— उच्यते। (महाकाव्यम्, नाटकम्, चम्पू)

vk- lLd`regkdk0;L; i च विशेषताः संस्क तेन लिखत 5

lLd`regkdk0; dh fdUgh ikp fo'k"krkvk dk lLd`r e fyf[k,A

Write five characteristics of Mahakavya in Sanskrit.

vkn'k iz'ui=e~ l- 2
¼vÄ;kstuk½ Marking Scheme
dkM l[;k &022
¼lLd`rdfUnde½
d{kk }kn'kh

अवधिः होरात्रयम्	पूर्णाङ्काः : 100
समय : तीन घण्टे	पूर्णाङ्क : 100
Time : 3 Hours	Maximum Marks : 100

[k.M ^^d** Section A
vifBrk'k&vocks/kue~ 10

vfLeu~ [k.M 50 'kCnkuke~ ,d% ljy% vifBr% x|k'k% vfLrA iz'uk%

Øekad%	mís';e~	iz'uizdkj%	vis{kr&mÙkjkf.k	vad- ladsr%	vad- foHkkx%
1. I.	तथ्यबोधपरीक्षणम्	अतिलघूत्तरः एकपदेन	(i) धनस्य (ii) आश्रमवासी (iii) मसी (iv) बहिः	½ ½ ½ ½	2
II.	तथ्यबोधपरीक्षणम्	लघूत्तरः पूर्णवाक्येन	(i) अस्माकं समीपे आवश्यकतानुसारम् एव धनं, वस्त्राणि च अन्यवस्तूनि भवेयुः (ii) आश्रमवासिना महात्मनः लेखनी क्षिप्ता यतः तस्यां मसी न आसीत्	1 1	2
III.	भाषिकतत्त्वप्रयोग–परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः एकपदेन	(i) विशेष्यपदचयनम् – वस्तु (ii) कर्तृपदचयनम् – भवान् (iii) विलोमपदचयनम् – बहिः (iv) पर्यायचयनम् – अचिरात्	1 1 1 1	4

IV.	शीर्षक प्रदानम्	अतिलघूत्तरः	(i) क्षुद्रवस्तुनः महत्त्वम् अथवा क्षद्रुवस्तुमहत्त्वम् (ii) महात्मागान्धिनः लेखनी (iii) अपरिग्रहस्य महत्त्वम्	 2 **10**

[k.M% ^[k** Section B
¼lLd`r u jpukdk;e½

अस्मिन् खण्डे त्रयः प्रश्नाः सन्ति। प्रथमप्रश्ने लिखिते पत्रे म जूषातः चित्वा विभिन्नरिक्तस्थानानां पूर्तिः करणीया। दशरिक्तस्थानानि सन्ति। प्रतिशुद्धरिक्तस्थानपूर्तिकृते अर्ध : अङ्कः निर्धारितः। ½

Øekad:	mís';e	i'ui dkj%	vif{kr&mÙkjkf.k	vad- lad`r%	vad- foHkkx%
2	पत्रलेखने औपचारिककार्य– परीक्षणम्	यस्मात् नगरात् पत्रं प्रेषितं तस्य नाम	(i) कानपुरतः	½	
		पत्र प्रेषकस्य अभिधानम्	(ii) अपूर्व	½	
		यस्य कृते पत्रं प्रेषितं तस्य अभिधानम् (सम्बोधनं)	(iii) प्रतिनिधित्वम्	½	
		पत्रसंकेते यत्र पत्रं प्रेष्यते तस्य स्थानस्य नाम	(iv) अकरवम्	½	2
	पत्र लेखने विषयवस्तु परीक्षणम्	संदर्भानुकूलं विषयवस्तुज्ञानम् (रिक्तस्थानपूर्ति)	(iv) वर्धितम्	½	
			(vi) विकासेन	½	
			(vii) अभूतपूर्वं	½	
			(viii) एतादृशीसु	½	3
			(ix) आलोकः	½	
			(x) पश्चिमबंगप्रदेशः	½	
					5

3. अस्मिन् प्रश्ने प्रदत्तायां कथायां सन्दर्भानुकूलरिक्तस्थानपूर्तिः अपेक्षिता। अत्र दश रिक्तस्थानानि सन्ति। प्रतिशुद्धरिस्थानपूर्तिकृते (½) अर्धः अङ्कः निर्धारितः।

	कथायां सन्दर्भानुकूलं रिक्तस्थान–पूर्तिः, शब्दप्रयोगपरीक्षणम्	(i) रेलयानात् (ii) इतस्ततः (iii) साधारणवस्त्रयुक्तः (iv) वोढ्वा (v) विश्रामस्थलात् (vi) अनुरोधः (vii) स्वावलम्बी (viii) गुरूगंभीरस्वरं (xi) परिचीय (x) दर्शनार्थम्	½ ½ ½ ½ ½ ½ ½ ½ ½ ½	(5)

4. कमपि एकं विषयम् अधिकृत्य प चवाक्येषु लेखनम् अपेक्षितम्। प्रतिवाक्यम् एकः अङ्कः निर्धारितः। अर्धः अङ्कः शुद्धतथ्यकृते अर्धः च शुद्धभाषाप्रयोगाय।

अवबोधपूर्वकम् वाक्यसंरचना–परीक्षणम्	वाक्यनिर्माणम्	पञ्च वाक्यानि	½ + ½ ½ + ½ ½ + ½ ½ + ½ ½ + ½	1 1 1 1 1

5

[k.M% x* Section C
vuqiz;qDr0;kdj.ke~

¼vfLeu~ [k.M% Hkk"kk;k% 0;kogkfjdiz;ksx% vis{kr%½

iz'uk%

Øekad%	mís';e~	iz'uizdkj%	vis{kr&mÙkjkf.k	vad- ladsrk%	vad- foHkkx%
5	वाक्येषु पाठाधरित–सन्धिविच्छेदः	अनुप्रयोगात्मकः कोष्ठकान्तर्गतानां पदानां सन्छिच्छेदः बोधपरकः अतिलघूत्तरः	(i) इति+अभिधानेन (ii) कस्मिन् + चित् (iii) एतत् + देवस्य (iv) एषः+एव (v) द्वितीयभागः+ स चारः (vi) निमज्जति+इन्दोः	1 1 1 1 1 1	6

Øekad:	mís';e	i'uidkj	vif{kr&mÙkjkf.k	vad- ladsrk	vad- foHkkx
6	वाक्येषु समस्त–पदानां विग्रह–दक्षतापरीक्षणम्	वाक्येषु स्थूलाक्षर–पदानां विग्रहः	(i) निरुद्धा चेष्टा यस्य तस्य(मम)	1	
			(ii) प्रयोजनस्य अभावः	1	
			(iii) दैवेन हतम्	1	
			(iv) ब्रह्माण्डम् एव भाण्डम् तस्य	1	
			(v) अहश्च रात्रिश्च	1	
			(vi) त्रयाणां मत्स्यानां समाहारः	1	6
7	वाक्येषु कृदन्त–पदानां प्रयोग–परीक्षणम्	प्रकृतिप्रत्ययौ योजयित्वा वाक्य–संदर्भानुसारं रिक्तस्थानपूर्तिः	(i) प्रतिषिद्धः	1	
			(ii) उक्तवन्तः	1	
			(iii) द्रष्टुम्	1	
			(iv) रतिम्	1	
			(v) अर्चयन्	1	
			(vi) भगवतः	1	
			(vii) मायिनः	1	
			(viii) पिशुनता	1	8
8	कर्तृ–क्रियापद–अन्विति–परीक्षणम्	वाक्येषु रिक्त–कोष्ठकात् समुचितं पदं विचित्य पूर्तिः	(i) ब्रवीतु	1	
			(ii) युष्माभिः	1	
			(iii) आगमिष्यन्ति	1	
			(iv) आहूताः	1	
			(v) परीक्ष्यते	1	5
8(वैकल्पिक)	विशेषणपद–चयनपरीक्षणम्	म जूषातः विशेषण–पदचयनं रिक्तस्थान पूर्तिः	(i) अतिरमणीयं	1	
			(ii) बहुमत्स्यं	1	
			(iii) महान्	1	
			(iv) सुबद्धमूलाः	1	
			(v) प्रमुखचिकित्सकस्य	1	5
9	उपपदविभक्ति–प्रयोगपरीक्षणम्	कोष्ठकात् शब्देषु उपपदविभक्ति–प्रयोगेण रिक्तस्थानपूर्तिः	(i) बुद्धं	1	
			(ii) यद्भविष्येण	1	
			(iii) प्रयोजनम्	1	
			(iv) मानवेभ्यः / मानवाय	1	
			(v) मृत्युना	1	5
				Total	**30**

[k.M% ?k
ifBrka'k&vocks/kue~
¼vfLeu~ [k.M~ lo s i'uk% ikB~;iqLrde~ vk/kkfjrk%½
¼_frdk & f}rh;% Hkkx%½

i'uk%

Øekad%	mís';e~	i'uizdkj%	vis{kr&mÙkjkf.k	vad- ladrk%	vad- foHkkx%
10	पठितगद्यांश–बोधपरीक्षणम्	1. अतिलघूत्तरः एकपदेन उत्तरम्	(i) 365.25 वारं	½	1
			(ii) सङ्गणकस्य	½	
		2. लघूत्तरः पूर्णवाक्येन उत्तरम्	(i) भूमध्यरेखास्थितस्य नरस्य कृते नक्षत्रादयः पश्चिमं प्रति धावन्तः प्रतीयन्ते।	1	1
	भाषिकतत्त्व–परीक्षणम्	3. अतिलघूत्तरः			
		(i) विशेष्यपदचयनम्	(i) ''पृथ्वी'' इति पदं विशेष्यम्	½	
		(ii) विलोम्चयनम्	(ii) आधुनिकैः	½	
		(iii) कर्तृपदचयनम्	(iii) जन्म	1	
		(iv) पर्यायपदस्य	(iv) नक्षत्रादयः	1	3
					5
11	पठितनाट्यांशस्य बोधपरीक्षणम्	1. अतिलघूत्तरः (एक पदेन)	(i) चाणक्येन	½	
			(ii) नेपथ्ये	½	1
		2. लघूत्तरः पूर्णवाक्येन उत्तरम्	(i) निरुद्धचेष्टा–कारणात् चाणक्यस्य मते वैतालिकाभ्यां शतसहस्त्र–सुवर्णदानम् अस्थाने प्रजाधनापव्ययः अस्ति	1	1

Øekad:	mís';e	iz'uizdkj	vif{kr&mÙkjkf.k	vad- ladsrk	vad- foHkkx
	भाषिकतत्त्व–प्रयोगपरीक्षणम्	3. अतिलघूत्तरः			
		(i) सर्वनामस्थाने संज्ञाप्रयोगः	(i) राज्ञः कृते / राज्ञे	½	
		(ii) विलोमचयनम्	(ii) अपव्ययः	½	
		(iii) कर्तृपदचयनम्	(iii) राजा	1	
		(iv) पर्यायपदस्यचयनम्	(iv) उल्लंघनम्	1	3
					5
12	पठितपद्यांश–बोधपरीक्षणम्	1. अतिलघूत्तरः एकपदेन उत्तरम्	(i) पृथिवीतले	½	
			(ii) त्रिपुरस्य (विमानस्य)	½	1
		2. लघूत्तरः पूर्णवाक्येन उत्तरम्	जलस्यान्तर्बहिः द्वितीय–भागस्य सञ्चारो भवेत्	1	1
	भाषिकतत्त्व–प्रयोगपरीक्षणम्	3. अतिलघूत्तरः एक पदेन			
		(i) विलोमचयनम्	(i) पृथिवीतले	½	
		(ii) सर्वनामस्थाने संज्ञा चयनम्	(ii) त्रिपुरस्य कृते / त्रिपुराय	½	
		(iii) पर्यायचयनम्	(iii) यथाक्रमम्	1	
		(iv) क्रियापदचयनम्	(iv) भवेत्	1	3
					5
13	उद्धृत–अंशस्य प्रसङ्गसन्दर्भ–ग्रन्थलेखक–परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः	(i) (अ) शिवराजविजयात्	1	2
			(आ) श्री अम्बिकादत्तव्यासः	1	
			(ii) अनागतविधाता	1	2
			अन्यमत्स्यान्	1	**4**

Øekad%	mís';e	i'uiidkj	vif{kr&mÙkjkf.k	vad- ladsrk	vad- foHkkx
14.	भावार्थबोध–	रिक्तस्थानपूर्ति–	1. (i) सुखदं	½	
	परीक्षणम्	माध्यमेन	(ii) ऐश्वर्यशालिनि	½	
			(iii) दारिद्र्यस्य	½	2
			(iv) मरणमिव	½	
			2. (i) अज्ञाननिद्राम्	½	
			(ii) महापुरुषाणाम्	½	
			(iii) छुरिकायाः	½	
			(iv) महापुरुषाः	½	2 [4]
15.	पद्यस्य अन्वयबोध–	प्रदत्तेषु अन्वयेषु	1. (i) पराभवं	½	
	परीक्षणम्	श्लोकं पठित्वा	(ii) मायिनः	½	
		रिक्तस्थानपूर्तिः	(iii) असंवृत्ताङ्गान्	½	
			(iv) इषवः	½	2
			2. (i) अनन्तरत्नप्रभवस्य	½	
			(ii) सौभाग्यविलोपि	½	
			(iii) गुणसन्निपाते	½	
			(iv) किरणेषु	½	2 [4]
16.	वाक्यांशानां	सार्थकमेलनं	1. (i) यत्र तत् सत्यस्य परं निधानम्	1	
	सार्थकसंयोजनम्	(संयोजनम्)	(ii) तर्हि चतुर्गुणेन सीसेन शोधयेत	1	
			(iii) सप्तसप्ततिः कक्षाः सन्ति	1	
			(iv) न उत्सवकालः	1	[4]
17.	प्रसङ्गानुसारं	प्रदत्तविकल्पेभ्यः	(i) नक्षत्रमण्डलस्य	1	
	शब्दार्थबोध–	शुद्ध–अर्थ चयनम्	(ii) दुर्गस्य सुरक्षादिकार्यम्	1	
	परीक्षणम्		(iii) तुच्छ इव	1	
			(iv) भाग्यरक्षितम्	1	4

खण्डः घ, भाग II — 10
संस्कृतसाहित्यपरिचयः

क्रमाङ्कः	उद्देश्यम्	प्रश्नप्रकारः	अपेक्षित-उत्तराणि	अङ्क-सङ्केताः	अङ्क-विभागः
18.	संस्कृतसाहित्यस्य	अ) कविः			
	सामान्यज्ञानम्	(i) अम्बिकादत्तव्यासः	(i) जयपुरम्	1	
	(अतिलघूत्तरः)	(ii) भर्तृहरिः	(ii) उज्जयिनी	1	
	(केवलं नामोल्लेखः	(iii) भासः	(iii) पद्मनाभपुरम्	1	3
	अपेक्षितः)				
	(आ)	(i) भर्तृहरिः	(i) षष्ठीशताब्दी	1	
		(ii) विशाखदत्तः	(ii) 5–6 शताब्दी	1	
		(iii) अम्बिकादत्तव्यासः	(iii) एकोनविंशतिःशताब्दी	1	3
	(इ)	(i) वराहमिहिरः	(i) बृहत्संहिता	1	
		(ii) कौटिल्यः	(ii) अर्थशास्त्रम्	1	
		(iii) विष्णुशर्मा	(iii) पंचतन्त्रम्	1	
		(iv) भारविः	(iv) किरातार्जुनीयम्	1	4
		अथवा			**10**
अ	संस्कृतसाहित्यस्य	अतिलघूत्तरः	अ) (i) नान्दी	1	
	सामान्यज्ञानम्	(रिक्तस्थानपूतिः)	(ii) आख्यायिका	1	
			(iii) संदेशवाहकः	1	
			(iv) पद्यकाव्यस्य	1	
			(v) चम्पू	1	
					5
आ	संस्कृतमहाकाव्य–	संस्कृतेन	(i) न्यूनतमाः अष्टसर्गाः	1	
	लक्षणबोध–	पञ्चवाक्येषु	(ii) धीरोदात्तः नायकः	1	
	परीक्षणम्	वैशिष्ट्यलेखनम्	(iii) सर्गबद्धः कथानकः	1	
			(iv) धर्मार्थकाममोक्षेषु एकं फलम्	1	
			(v) कोऽपि एकः प्रमुखः रसः	1	**5**
					10

lLÑr&vkn'ki'ui=e

,fPNde (Elective)

d{kk & }kn'kh XII

i'ui=L; :ijs[kk

कोड सं. : 022 | पूर्णाङ्काः 100

[k.M& uke	i'u l[;k	i'u&mís';e	i'u idkj%	vad lad r%	पूर्णाङ्काः
खण्डः क अपठितांश–अवबोधनम् 15	1	तथ्यबोध–परीक्षणम्	I. अतिलघूत्तरः II. लघूत्तरः III. अतिलघूत्तरः	1 2 2	5
	2	तथ्यबोध–परीक्षणम्	I. अतिलघूत्तरः II. लघूत्तरः III. अतिलघूत्तरः IV. लघूत्तरः	2 4 2 2	10 15
खण्डः 'ख' रचनात्मक–लेखनम् 15	3.	रूपरेखामधिकृत्य वाक्यविन्यास–परीक्षणम्	निबंधात्मकः (कथालेखनम्)	1 × 10	10
	4.	मञ्जूषासहायतया वाक्यःसंरचना–बोधः	निबंधात्मकः (अनुच्छेदलेखनम्)	1 × 5	5 15
खण्डः 'ग' पठित–अवबोधनम् 50	5 अ	गद्यांशतथ्यबोध–परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः लघूत्तरः च	I. ½ × 2=1 II. 1 + 1=2 III. ½ × 2=2	5
	आ	पद्यांशतथ्यबोध–परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः लघूत्तरः च		5

[k.M uke	i'u l[;k	i'u&mís';e	i'u idkj%	vad lad r%	पूर्णाङ्काः
	इ	नाट्यांशतथ्य–बोध–परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः लघूत्तरः च	1+2+2=5	15
	6.	शब्दार्थमेलनम्	अतिलघूत्तरः	½ x 4=2	2
	7.	प्रश्ननिर्माण–कौशल–परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः	1 x 4 = 4	4
	8.	भावार्थपूर्तिबोध–परीक्षणम्	लघूत्तरः	3+3=6	6
	9.	अन्वयपूर्तिबोधः	लघूत्तरः	3+3=6	3
	10.	कवि–काव्य–परिचय–बोध परीक्षणम्	लघूत्तरः	1 x 10=10	10
	11.	भाषिककार्य–परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः	2+2+2+2+2	10 50
खण्डः 'घ' छन्दोऽलङ्कार–परिचयः 20	12.	स्वरविवेकः, परिभाषा पूर्तिः, छन्दसः अभिज्ञानम् उदाहरणज्ञानं च बोधपरीक्षणम्	अतिलघूत्तरः लघूत्तरः लघूत्तरः	1+1+1+1=4 1+1+1=3 1 = 1 2 = 2	10
	13.	अलंकार–अभिज्ञान–बोधपरीक्षणम्	लघूत्तरः निबन्धात्मकः लघूत्तरः	1+1+1+1=4 3 1+1+1=3	10 20

vkn'k lLÑr i'ui=e l- I

lLÑre ¼,fPNde½

dkM l[;k 022

}kn'k d{kk

अवधिः होरात्रयम्	पूर्णाङ्काः : 100
समय : तीन घण्टे	पूर्णाङ्क : 100
Time : 3 Hours	Maximum Marks : 100

vfLeu i'ui= pRokj% [k.Mk% lfUr A

bl i'ui= e pkj [k.M gA

This question paper has four sections.

[k.M% ¼d½	**vifBrk'k&vocks/kue**	15
Section (A)	**Reading Comprehension**	
[k.M% ¼[k½	**lLÑru jpukReddk;e**	20
Section (B)	**Writing Skill in Sanskrit**	
[k.M% ¼x½	**ifBr&vocks/kue lLÑr lkfgR;L; p ifjp;%**	40+10=50
Section (C)	**Textual Comprehension and Introduction to History of Sanskrit Literature**	
[k.M% ¼?k½	**NUnk·y³dkjk%**	20
Section (D)	**Meters and Figures of Speech**	

funs'kk%

funs'k

Instructions

1- mÙkjkf.k mÙkjiqfLrdk;ke ,o y[kuh;kfu A

mÙkj mÙkjiqfLrdk e gh fy[k A

Write answers in the answer-sheet only.

2- ldrkHkko lo"kk i'ukukeÙkjkf.k lLÑruo y[kuh;kfu A

tgk ldr u gk] ogk lHkh i'uk d mÙkj lLÑr e gh fy[k A

Answer all questions in Sanskrit unless instructions are given otherwise.

[k.M% ^d* Section A

vifBr&vock/kue~ | 15

Reading Comprehension

1- v/kkfyf[kre~ vuPNn}; ifBRok i'uku~ lLÑru mÙkjr 5

fuEufyf[kr nkuk vuPNnk dk i<dj i'uk d mÙkj lLÑr e nhft,A

Read the following passages and answer the questions in Sanskrit.

iFke% vuPNn%

जीवने यः समयः गतः स गतः। तस्य विषये चिन्तां मा कुरुत। किमपि एकं सेवाकार्यं स्वीकुरुत। तत् कार्यम् आजीवनं व्रतरूपेण आचरत। शनैः शनैः स्वार्थः न्यूनः भविष्यति। परार्थः अधिकाधिकः भविष्यति। अत्रैव सुखस्य रहस्यम् अस्ति। यदा सेवाकार्यं निश्चितं भवेत् तदा तस्य कृते प्रयत्नः करणीयः। श्रमः करणीयः। तेन जीवनम् आनन्दमयं भविष्यति। जीवनम् अर्थपूर्णं भविष्यति। जीवनकथा अपि प्रेरणादायिनी भविष्यति।

i'uk%

I. **,dinu mÙkjr**

,d 'kCn e mÙkj nhft,A (1/2x2=1)

Answer in one word only

(i) सेवाकार्येण जीवने कः न्यूनः भविष्यति?

(ii) जीवने वयं किं स्वीकुर्याम?

II. **i.kokD;u mÙkjr**

i.kokD; e mÙkj nhft,A (2)

Answer in a complete sentence.

जीवने कस्य विषये चिन्ता न करणीया?

III. **;Fkkfun'ke~ mÙkjr**

;Fkkfun'k mÙkj nhft,A (½ x 4 = 2)

Answer as directed.

(i) आनन्दमयम् इति पदं कस्य विशेषणम्?

(ii) तस्य कृते प्रयत्नः करणीयः अत्र तस्य इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(iii) स्वार्थः इति पदस्य किं विलोमपदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?

(iv) भवेत् इति क्रियापदस्य कर्ता कः?

2½ f}rh;% vuPNnm% 10

प्रायः शतवर्षेभ्यः पूर्वं कश्चन महापुरुषः विदेशात् भारतं प्रति आगच्छत्। सः भारतस्य धूलिम् अस्पृशत्। धूलौ अलिम्पत्। आनन्दितः भूत्वा अवदत्–अहो! अद्य अहं पवित्रः सञ्जातः। स च महापुरुषः आसीत् स्वामी विवेकानन्दः। सः च पवित्रः भूभागः रामेश्वरम्। पुराणेषु रामेश्वरक्षेत्रस्य महिमा वर्णितः। अस्य मृत्तिकाकणः अपि प्रत्येकं भारतीयस्य श्रद्धाकेन्द्रम्। अत्रैव रामः वानराणां सहायतया लङ्कां प्रति सेतुं निर्मितवान्। एकदा अस्माकं राष्ट्रपतिः केरलप्रदेशे अमृतसेतुः इति पुस्तकस्य विमोचनं करोति स्म। एतत् पुस्तकं मात्रा अमृतानन्दमय्या लिखितम्। सः अवदत् एतत् पुस्तकं दृष्ट्वा अहम् रामसेतुं स्मरामि। तद् एकम् ऐतिहासिकं चिह्नम्। उपग्रहचित्रैः तस्य अस्तित्वं निरूपितम् अस्ति इति। अहो विचित्रम् अस्माकं भारतम्।

i'uk%

I. **,dinu mÙkjr** (1x2 = 2)

,d 'kCn esa mÙkj nhft,A

Answer in one word only

(i) पुराणेषु कस्य महिमा वर्णितः?

(ii) अमृतसेतुः इति पुस्तकस्य विमोचनम् अस्माकं राष्ट्रपतिः कुत्र करोति स्म?

II. **i.kokD;u mÙkjr** (1x2 = 2)

i.kokD; esa mÙkj nhft,A

Answer in a complete sentence

विवेकानन्दः भारतस्य मृत्तिकायां विलुण्ठनं कृत्वा किम् अवदत्?

III. **;FkkfunsZ'k mÙkjr** (1x4= 4)

;Fkk funsZ'k mÙkj nhft,A

Answer as directed

(i) ऐतिहासिकम् इति पदं कस्य विशेषणम्?

(ii) उपग्रहचित्रैः तस्य अस्तित्वम् इति वाक्ये तस्य इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(iii) निर्मितवान् इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(iv) 'पश्चात्' इति अव्ययपदस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

IV. **vuPNnL; Ñr mi;qä 'kh"kZd fy[kr** (2)

vuPNn d fy, mi;qä 'kh"kZd fyf[k,A

Write an appropriate title for this paragraph.

[k.M% [k (Section B)

jpukRedy[kue

15

Writing Skill

3- e¨t"kkr% mfpr lङ्केrku xghRok v/kkfyf[krk dFkk iqu% mÙkjiqfLrdk;k fy[kr
e¨t"kk ls mfpr lङ्केr ysdj fuEufyf[kr dFkk dk iqu% mÙkjiqfLrdk esa fyf[k,A

Rewrite the following story taking hints from the words given in the box. (1x10=10)

एकदा साबरमती आश्रमे रात्रौ एकः चौरः (i).................... । आश्रमवासिनः तं (ii)..................... रज्ज्वा बद्ध्वा एकस्मिन् कक्षे प्राक्षिपन्। प्रातः व्यवस्थापकः चौरं कक्षात् (iii)..................आनयत्, महात्मागांधिनः समीपं च अनयत्। भीतः चौरः शिरः (iv).................तूष्णीं स्थितः आसीत्। सः चिन्तयति स्म–इदानीं किं भविष्यति? सम्भवतः (v)..................सूचयित्वा माम् समर्पयिष्यन्ति इति। तं दृष्ट्वा करुणहृदयः बापू अपृच्छत्–किं (vi)....................प्रातराशः स्वीकृतः? इति। चौरः किमपि न अवदत्। व्यवस्थापकः उवाच–बापू! एषः तु चौरः। प्रातराशस्य ---------------एव नास्ति इति। महात्मागांधिनः मुखमण्डलं कठोरं जातम्। सः (viii)...................अवदत् – किं चौरः मानवः नास्ति। नयत। प्रथमम् एषः प्रातराशं (ix)..................। इति चौरः श्रद्धया (x).............चरणयोः अपतत्। तस्य नेत्राभ्याम् अश्रूणि प्रावहन्। कालान्तरे सः महात्मनः प्रमुखः शिष्यः अभवत्।

e¨t"kk

बहिः, प्रश्नः, महात्मनः, गृहीत्वा, अवनम्य, भवता, दुःखेन,
प्राविशत्, रक्षाधिकारिणः, करोतु

3-4 iknÙk'kCnlgk;r;k i¥pokD;"kq iknj{kk&vki.kL; o.kZua d#rA (1x5=5)
uhps fn, x, 'kCnksa dh lgk;rk ls pliyksa dh nqdku dk o.kZu dhft,A

Describe a shoe-shop with the help of the following words.

'kCnk%
पादरक्षायाः आपणम्, बह्वयः पादरक्षाः, पीतवर्णाः हरितवर्णाः कृष्णवर्णाः, आपणिकः, दर्शयति, बहवः जनाः, विविधानि मूल्यानि, धारयित्वा पश्यन्ति, मूल्यं पृच्छन्ति, दृढां, चित्रितां, अहम्, गतवान्। गतवती, क्रीतवान्/क्रीतवती, मूल्यं दत्तवान्/दत्तवती। पेटिकायां स्थापयित्वा, केचन केवलं पश्यन्ति, क्रयं न कुर्वन्ति।

[k.M% x (Section C)

ifBr&vockk/kue] lÑr&lkfgR;k ifjp;% 40$10

Text-book Comprehension and Introduction to History of Sanskrit Literature

5. **v/kksfyf[kr x|ka'k] i|ka'k] ukV~;ka'k p ifBRok rnk/kkfjrku~ iz'uku~ mÙkjr ifLrdk;ke~ mÙkjrA**

fuEufyf[kr x|ka'k] i|ka'k rFkk ukV~;ka'k dks i<dj iz'uksa ds mÙkj nhft,A

Read the following extracts from prose, poetry and drama and answer the questions.

v x|ka'k%

समुद्ररूपी ब्राह्मणः अवदत् – ''तस्मै राज्ञे व्ययार्थं रत्नचतुष्टयं दास्यामि। एतेषां माहात्म्यम् – एकं रत्नं यद्वस्तु स्मर्यते तद् ददाति। द्वितीयरत्नेन भोजनादिकममृततुल्यमुत्पद्यते। तृतीयरत्नाच्चतुरङ्गबलं भवति। चतुर्थाद्रत्नाद्दिव्याभरणानि जायन्ते। तदेतानि रत्नानि गृहीत्वा राज्ञो हस्ते प्रयच्छेति।'' ततो ब्राह्मणस्तानि रत्नानि गृहीत्वा उज्जयिनीं यावदागतः तावत् यज्ञसमाप्तिः जाता।

iz'uk%

I **,dinsu mÙkjr** (½ x 2=1)

,d 'kCn esa mÙkj nhft,A

Answer in one word only

(i) ब्राह्मणः रत्नानि गृहीत्वा कुत्र आगतः?

(ii) तृतीयरत्नात् किं भवति?

II **iw.kZokD;su mÙkjr**

iw.kZokD; esa mÙkj nhft,A (1 x 2=2)

Answer in a complete sentence

(i) कस्य व्ययार्थं समुद्रः रत्नानि अयच्छत्?

(ii) प्रथमं रत्नं किं दातुं शक्नोति?

III **;FkkfunsZ'ka d#r** (½x4=2)

;FkkfunsZ'k dhft,A

Do as directed

(i) जायन्ते इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(ii) अमृततुल्यम् इति कस्य पदस्य विशेषणम्?

(iii) 'चत्वारि रत्नानि' इति स्थाने किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

(iv) तानि इति पदस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

vk i|k'k%

पापान्निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहाति, ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।।

i'uk%

I **,dinu mÙkjr** (½ x 2=1)

,d 'kCn e mÙkj nhft ,A

Answer in one word only

(i) सन्मित्रं कान् प्रकटीकरोति?

(ii) सन्मित्रं कीदृशं पुरुषं न त्यजति?

II **i.kokD;u mÙkjr**

i.kokD; e mÙkj nhft ,A (1x2=2)

Answer in a complete sentence

सन्मित्रस्य कानिचित् चत्वारि लक्षणानि लिखत

III **;Fkkfun'k d#r** (½ x 4=2)

;Fkkfun'k dhft ,A

Do as directed

(i) रहस्यम् इति स्थाने किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

(ii) 'प्रवदन्ति' इति क्रियापदस्य किं कर्तृपदम्?

(iii) 'प्रकटीकरोति' इत्यस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

(iv) 'इदम्' इति सार्वनामिकविशेषणस्य विशेष्यं किम्?

b- ukV;k'k%

पुरुषः धिक् चपल! किमुक्तवानसि? तीक्ष्णतरा ह्यायुधश्रेणयः शिशोरपि दृप्तां वाचं न सहन्ते। राजपुत्रश्चन्द्रकेतुर्दुर्दान्तः, सोप्यपूर्वारण्यदर्शनाक्षिप्तहृदयो न यावदायाति, तावत् त्वरितमनेन तरुगहनेनापसर्पत!

बटवः कुमार! कृतं कृतमश्वेन। तर्जयन्ति विस्फारितशरासनाः कुमारमायुधश्रेणयः। दूरे चाश्रमपदम्। इतस्तदेहि। हरिणप्लुतैः पलायामहे।

लवः किं नाम विस्फुरन्ति शस्त्राणि? (इति धनुरारोपयति)।

i'uk%

I **,dinu mÙkjr** (½ x 2=1)

,d 'kCn e mÙkj nhft,A

Answer in one word only

(i) धनुर्धारिणः सैनिकाः कं तर्जयन्ति?

(ii) कः धनुः आरोपयति?

II **i.kokD;u mÙkjr**

i.kokD; e mÙkj nhft,A (1x2=2)

Answer in a complete sentence

चन्द्रकेतुः कस्य दर्शनेन आक्षिप्तहृदयः आसीत्?

III **;Fkkfun'ke mÙkjr** (½ x 4=2)

;Fkkfun'k mÙkj nhft,A

Do as directed

(i) सहन्ते इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(ii) दुर्दान्तः इति पदं कस्य विशेषणम्?

(iii) समीपे इति अस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

(iv) सः इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

6- **'kCnkFkku ey;r** (½ x 4=2)

'kCnk dk vFkk l feyku dhft,A

Match the words with their meanings.

'kCnk%			**vFkk%**
अ	अभिधाय	(i)	पाण्डित्यम्
आ	अपगतमले	(ii)	तिरस्कुर्वन्तः
इ	अवधीरयन्तः	(iii)	दोषरहिते जाते
ई	वैदग्ध्यम्	(iv)	उक्त्वा

7 j[kkf³~rinkfu vk/kR; i'ufuek.k d#r 1x4=4

j[kkf³~r ink ij vk/kkfjr i'u fuek.k dhft,

Frame questions based on the underlined words.

(i) Hkxo}kD;kfu समाप्तानि न भवन्ति।

(ii) परमेश्वरः i'fFk0;k% सप्तविभागान् कृतवान्।

(iii) llriorku सप्तकुलाचलान् वदन्ति।

(iv) कैलासश्च e;knkiorE;% अतिरिक्तः।

8- v/kkfyf[kr;k% i|;k% HkkokFk;k% fjäLFkkuifr e~t"kklgk;r;k d#rA

fuEufyf[kr HkkokFkk e fjä LFkkuk dh ifr e~t"kk dh lgk;rk l dhft,A

Fill in the blanks in the explanations of the following verses with the help of words given in the box

I. b'kkokL;fen lo] ;fRd~o txR;k txrA

r u R;Dru Hk~TkhFkk%] ek x/k% dL;fon /kueAA

II. doUuog dekf.k ftthfo"kr 'kr lek%A

,o Rof; ukU;Fkrk·fLr] u de fyl;r uj%AA (3+3=6)

HkkokFk%

I. यत् किमपि संसारे (i)................... अस्ति तत्सर्वम् (ii)...............व्याप्तम्। (iii)............अस्य संसारस्य भोगं कुरुत। (iv).............अपि (v)..................प्रति लोलुपः मा (vi).............. ।

HkkokFk%

II. मनुष्यः (i)...............कुर्वन् एव शतं (ii).............जीवितुम् इच्छेत्। एवमेव सर्वम् ईश्वरस्य अस्ति (iii)...........किमपि न अस्ति, कर्मणि (iv).............न भवेत्। एवं करणेन मनुष्ये कर्मणः (v).............न भवति। एतद् (vi)............कोऽपि अन्यः मार्गः नास्ति।

e~t"kk

कर्म, चेतनतत्त्वम्, कस्यचिद, तव, वर्षाणि, लेपः, ईश्वरेण, लिप्तः, त्यागपूर्वकम्, धनं, अतिरिच्य, भव।

9- v/kkfyf[kr;k% vUo;;k% fjäLFkkukfu iwj;rA 1-½+1-½=3

v/kkfyf[kr nkuk] vUo;;ks esa fjDr LFkkuksa dh iwfrZ dhft,A

Fill in the blanks in the following prose-order-renderings

एतावदुक्त्वा प्रतियातुकामं,

शिष्यं महर्षेर्नृपतिर्निषिध्य।

किं वस्तु विद्वन् गुरवे प्रदेयं,

त्वया कियद्वेति तमन्वयुङ्क्त।।

vUo;%

एतावत् उक्त्वा नृपतिः प्रतियातुकामम् (i) .... शिष्यम् निषिध्य विद्वन्! (ii) त्वया किम् वस्तु ....प्रदेयम्, (ii) ....वा इति तम् अन्वयुङ्क्त।

II समाप्तविद्येन मया महर्षि –

र्विज्ञापितोऽभूद्गुरुदक्षिणायै।

स मे चिरायास्खलितोपचारां,

तां भक्तिमेवागणयत्पुरस्तात्।।

vUo;%

समाप्तविद्येन मया (i)..................गुरुदक्षिणायै विज्ञापितः अभूत्। स मे (ii)............अस्खलितोपचाराम् ताम् भक्तिम् एव पुरस्तात् (iii)................ ।

v/kkfyf[krk% iDr;% dL; do% dLekr~ dk0;kr~ ladfyrk%

fuEufyf[kr iafä;k¡ fdl dfo ds fdl dk0; ls yh xbZ gS

From which work of which poet, have the following lines been extracted? (½x10=5)

(i) असक्तो ह्याचरन् कर्म परमाप्नोति पूरुषः।

(ii) दृढसङ्कल्पोऽयं सादी न स्वकार्याद् विरमति।

(iii) अनन्तरं सर्वे अश्रुलहृदयैः सौप्रस्थानिकीं ज्ञापितवन्तः।

(iv) न धर्ममनुधावन्ति, न सत्यमनुबध्नन्ति।

(v) हा हन्त! तस्या अबोधबालिकाया अग्रे किं भावि?

10v v/kkfyf[kr dk0;kuk y[kdkuka uke fyf[kr& (1×5=5)

v/kkfy[kr dk0;ksa ds y[kdksa ds uke fy[ksa &

Write the name of the authores of the following works :

(i) गीता

(ii) शिवराजविजयः

(iii) पाषाणीकन्या

(iv) प्रबन्ध मञ्जरी

(v) प्रबन्धपारिजातः

vk v/kkfyf[kry[kdkuk ,dL; ,dL; dk0;L; uke fyf[kr& (1×5=5)

fuEufyf[kr y[kdk d ,d ,d dk0; dk uke fyf[k, &

Write the name of one work of each of the following poets :

(i) भर्तृहरिः

(ii) भारविः

(iii) भवभूतिः

(iv) कालिदासः

(v) बाणः

11 - ;Fkkfun'k d#r (2x5=10)

;Fkkfun'k dhft,A

Do as directed

I dr`in fØ;kin p fpur (½ x 4=2)

(i) अथाकस्मात् परितो मेघमाला पर्वतश्रेणीव प्रादुरभूत्।

(ii) एकः षोडशवर्षदेशीयो गौरो युवा हयेन गच्छति स्म।

II fo'k"k.kfo'k"; in fpur (½ x 4=2)

(i) यत्र यत्राहं गच्छामि तत्र तत्रैवास्य शत्रुता सम्मुखस्थिता भवति।

(ii) क्रूरः 'किन्तु' मध्ये प्रविश्य सर्वं विनाशयति।

III j[kkf³r lokukein dLe i;äe (1 x 2=2)

(i) एवंविधयापि च अनया कथमपि दैववशेन परिगृहीताः विक्लवाः भवन्ति राजानः।

(ii) विशेषेण तु राज्ञाम्। उपदिश्यमानमपि ते न शृण्वन्ति।

IV lekuin fpur (1 x 2=2)

(i) **lkjghuk%**

न केवलमेते पशुभ्यो निकृष्टास्तृणेभ्योऽपि निस्साराः एव

(ii) **R;äok**

न तु कदाचित् कापुरुषा इव स्वस्थानम् अपहाय प्रपलायन्त।

V **d% d dFk;fr** (½ x 4=2)

(i) अधुना मम गमनसमयः समुपागत एव।

(ii) भगवान् त्वां दीर्घजीवनं कारयतु।

[k.M% ^?k* Section D
NUnk· yङ्कkjk% **10+10=20**
Meters and Figures of speech

I· **i'uku mÙkjr**

12· **i'uk d mÙkj nhft,A** (1x4=4)

Answer the questions

(i) मः इति वर्णः गुरुः अस्ति वा लघुः?

(ii) अनुष्टुप् छन्दसि पञ्चमः वर्णः कीदृशः भवति?

(iii) 'प्रदत्ते' इति पदे कः गणः?

(iv) 'मालिनी' छन्दसि प्रतिचरणं कति वर्णाः?

II· **v/kkfyf[kr ifjHkk"kk% iwj;r** (1x3=3)

fuEufyf[kr ifjHkk"kk,¡ iw.kZ dhft,A

Fill in the blanks in the following definitions

(i) जतौ तु वंशस्थ............................

(ii) ....तभजाजगौगः।

(iii) रसैरुद्रैश्छिन्ना......................शिखरिणी।

III· **v/kkfyf[krpj.k fd NUn%** (1)

fuEufyf[kr pj.k e dku lk NUn g

What is the meter in the following charana?

सा वाणी विनयः स एव सहजः पुण्यानुभावोप्यसौ।

IV· **dL;fpndL; NUnl% mnkgj.k fy[kr** (2)

fdlh ,d NUn dk mnkgj.k fyf[k,A

Give an example of any one of the following.

mitkfr] vu"Vi·

I· vyङ्कjk.kke v/kkfyf[krk% ifjHkk"kk% i|j;r (1x4=4)

13· vyङ्कjk dh fuEufyf[kr ifjHkk"kk,¡ iwjh dhft,A

Complete the following defintions of the figures of speech.

(i) ....उपमा.................... ।

(ii) ....उपमानोपमेययोः ।

(iii) .... अनुप्रासः ।

(iv) तद्रूपकम्................................ ।

II· dL;fpnsdL; vyङ्कjL; mnkgj.k fy[kr (3)

fdlh ,d vyङ्कj dk mnkgj.k fyf[k,A

Write an example of any one of the following figures of speech?

'ys"k%] mRizs{kk

III· v/kkfyf[kr iafä"kq d% vyङ्कjk%

fuEufyf[kr iafä;ksa esa dkSu&lk vyङ्कj gS

What are the figures of speech in the following lines? (1x3=3)

(i) अमङ्गलमिव उपघ्नन्ति विश्वासम् ।

(ii) भयानकेन स्वनेन कवलीकृतमिव गगनतलम् ।

(iii) श्यामश्यामैर्गुच्छगुच्छैः कुञ्चितकुञ्चितैः कचकलापैः

शिववीरस्य विश्वासपात्रं तोरणदुर्गं प्रयाति ।।

vkn'k i'ui= l-&1
,fPNd ikB ;Øe%
d{kk & }kn'kh
dkM l[;k 022
vڇ;k tuk

अवधिः होरात्रयम् | पूर्णाङ्काः 100
समय : तीन घण्टे | पूर्णाङ्क : 100
Time : 3 Hours | Maximum Marks : 100

[k.M% d

I d- y?k&vuPNn% **vifBr & vocks/kue** **15**

Øekڇ:	mís';e	i'uidkj%	vif{kr&mÙkjkf.k	vڇ- lڇrk%	vڇ- foHkkx%
I.	तथ्यबोध– परीक्षणम्	एकपदेन उत्तरम्	(i) स्वार्थः	½	
			(ii) सेवाकार्यम्	½	
II.	,,	पूर्णवाक्येन उत्तरम्	गतसमयस्य विषये	2	2
III.	भाषिककार्यम्	अतिलघूत्तरप्रश्नाः	(i) जीवनस्य / जीवनम् इत्यस्य	½	
			(ii) सेवाकार्यस्य इति पदाय / सेवाकार्याय	½	
			(iii) परार्थः	½	2
			(iv) सेवाकार्यम्	½	
					5

I [k- f}rh;% vuPNn% 10 80&100 'kCnk% **2$2$4$2**

I	तथ्यबोध– परीक्षणम्	एकपदेन उत्तरम्	(i) रामेश्वरक्षेत्रस्य	1	2
			(ii) केरलप्रदेशे	1	
II	,,	पूर्णवाक्येन उत्तरम्	अहो अद्य अहं पवित्रः जातःइति	2	2
III		भाषिककार्यम्	(i) चिह्नम् इति पदस्य	1	
			(ii) रामसेतोः	1	
			(iii) रामः	1	
			(iv) पूर्वम्	1	4
			अन्यत् किमपि उपयुक्तं शीर्षकम्		
IV	शीर्षकप्रदानम्		(i) ऐतिहासिकः रामसेतुः	2	2
			(ii) विचित्रं भारतम्	2	10

[k.M% [k
jpukRed y[kue **15**

Øekड्ड:	mís';e	i'uidkj%	vif{kr&mÙkjkf.k	vड्ड- lड्ढrk%	vड्ड- foHkkx%
3.	वाक्यविन्यासः	निबन्धात्मकः	मञ्जूषासहायतया रिक्तस्थानपूर्तिः (i) प्राविशत् (ii) गृहीत्वा (iii) बहिः, (iv) अवनम्य (v) रक्षाधिकारिणः, (vi) भवता (vii) प्रश्नः (viii) दुःखेन (ix) करोतु (x) महात्मनः	1×10	10
4.	वाक्यविन्यासः	निबन्धात्मकः	शब्दसूचीप्रयोगेण पञ्चदशवाक्यानां लेखनम्	1×5	05
					15

[k.M% x
ifBr&vocks/kue % lLÑr lkfgR;L; pfrgkl ifjp;% **40+10**
Text Book Comprehension :Introduction to History of Sanskrit Literature

Øekड्ड:	mís';e	i'uidkj%	vif{kr&mÙkjkf.k	vड्ड- lड्ढrk%	vड्ड- foHkkx%
5 **v**	**x|ka'k%**				
1.	तथ्यबोध – परीक्षणम्	I. एकपदेन उत्तरम्	(i) उज्जयिनीम् (ii) चतुरङ्गबलम्	½ ½	1
		II. पूर्णवाक्येन उत्तरम्	(i) राज्ञः व्ययार्थम् (ii) यद्वस्तु स्मर्यते तद् ददाति	1 1	2
	भाषिककार्यम्	III. लघूत्तरः	(i) दिव्याभरणानि (ii) भोजनादिकम् (iii) रत्नचतुष्टयम् (iv) एतानि	½ ½ ½ ½	2 5
5. **c-**	**i|ka'k%**				
	'तथ्यबोध–	एकपदेन उत्तरम्	(i) गुणान्	½	1

क्रमाङ्कः	उद्देश्यम्	प्रश्नप्रकारः	अपेक्षित-उत्तराणि	अङ्क-संकेतः	अङ्क-विभागः
	परीक्षणम्		(ii) आपद्गतम्	½	
		II. पूर्णवाक्येन उत्तरम्	पापात् निवारयति हिताय गुह्यं निगूहति, गुणान् प्रकटीकरोति आपद्गतं न जहाति, काले ददाति, कानिचित् चत्वारि	½×4	2
	भाषिककार्यम्	III. लघूत्तरः	(i) गुह्यम्	½	5
			(ii) सन्तः	½	2
			(iii) निगूहति	½	
			(iv) सन्मित्रलक्षणम्	½	
5. इ	नाट्यांशः				
	तथ्यबोध–परीक्षणम्	I. एकपदेन उत्तरम्	(i) कुमारम्	½	1
			(ii) लवः	½	
		II. पूर्णवाक्येन उत्तरम्	अपूर्व–अरण्यदर्शनेन	2	2
	भाषिककार्यम्		(i) आयुधश्रेणयः	½	5
		III. लघूत्तरः	(ii) चन्द्रकेतोः	½	2
			(iii) दूरे	½	
			(iv) चन्द्रकेतवे	½	
6.	शब्दार्थज्ञानम्	मेलनम्	अ + (iv) आ + (iii) इ + (ii) ई + (i)	½×4	2 [2]
7	प्रश्ननिर्माणम्	अतिलघूत्तरः	(i) कानि (ii) कस्याः (iii) कान् (iv) केभ्यः	1×4	4 [4]
8.	भावार्थबोधनम्	I. रिक्तस्थानपूर्तिः	(i) चेतनतत्वम् (ii) ईश्वरेण (iii) त्यागपूर्वकम् (iv) कस्यचिदपि (v) धनम् (vi) भव	½×6	3
		II. रिक्तस्थानपूर्तिः	(i) कर्म		

Øekड्ः	mís';e	i'uidkj%	vif{kr&mÙkjkf.k	vड्- lड्ेrk%	vड्- foHkkx%
			(ii) वर्षाणि	½×6	3
			(iii) कस्यचिद्		
			(iv) लिप्तः		6
			(v) लेपः		
			(vi) अतिरिच्य		
9.	अन्वयबोधनम्	I. रिक्तस्थानपूर्तिः	(i) महर्षेः		
			(ii) गुरवे	½×3	1½
			(iii) कियद्		
		II. रिक्तस्थानपूर्तिः	(i) महर्षिः		3
			(ii) चिराय	½×3	1½
			(iii) अगणयत्		
10.	भाषिककार्यम्				
		I कर्तृक्रियापदचयनम्	(i) मेघमाला–प्रादुरभूत्	½+½	
			(ii) युवा – गच्छति स्म	½+½	2
		II विशेषण–विशेष्यचयनम्	(i) सम्मुखस्थिता शत्रुता	½+½	
			(ii) क्रूरः किन्तुः	½+½	2
		III सर्वनामपदप्रयोगम्	(i) लक्ष्म्या	1	
			(ii) राजानः	1	2
		IV समानपदचयनम्	(i) निस्साराः	1	
			(ii) अपहाय	1	2
		V कः कं कथयति?	(i) श्रीनायारः – कार्यालयलिपिकम्	1	10
			(ii) सुश्रीमेरी – श्रीनायारम् (पत्रद्वारा)	1	2 45

[k.M% ?k

NUnks·yadkjifjp;% **10+10=20**

Øekad%	mís';e	iz'uizdkj%	vif{kr&mÙkjkf.k	vad- ladsr%	vad- foHkkx%
अ 12.	लघुगुरुवर्णविवेकः	लघूत्तरः	I (i) गुरुः	1	
			(ii) लघुः	1	
			(iii) यगणः	1	4
			(iv) पञ्चदश	1	
आ	परिभाषाज्ञानम्	लघूत्तरः	II (i) मुदीरितौ जरौ	1	
			(ii) उक्ता वसन्ततिलका	1	3
			(iii) यमनसभलागः	1	
इ	छन्दः अभिज्ञानम्	लघूत्तरः	III शार्दूलविक्रीडितम्	1	1
ई	छन्दसः उदाहरण–परीक्षणम्	लघूत्तरः	IV किमपि उदाहरणम्	2	2
अ 13.	परिभाषापूर्तिः	लघूत्तरः	I (i) साधर्म्यम् उपमा भेदे	1	
			(ii) अभेदो य उपमानोपमेययोः	1	4
			(iii) वर्णसाम्यम्	1	
			(iv) तद्रूपकमभेदो यः	1	
आ.	उदाहरणज्ञानम्	लघूत्तरः	II किमपि एकम् उदाहरणम्	3	3
इ.	अलङ्कार–परिज्ञानम्	अतिलघूत्तरः	III (i) उपमा	1	
			(ii) उत्प्रेक्षा	1	3
			(iii) अनुप्रासः	1	
					20

vkn'k lLÑr i'ui=e 2
lLÑre ¼,fPNde½
dkM l[;k 022
Sanskrit (Elective)

अवधिः होरात्रयम् | पूर्णाङ्काः 100
समय : तीन घण्टे | पूर्णाङ्क : 100
Time : 3 Hours | Maximum Marks : 100

funs'kk%

lo i'uk% lLÑruo mÙkj.kh;k%A
lHkh i'uk d mÙkj lLÑr e gh fy[kA
Answers should be written in Sanskrit only.

mÙkjkf.k i`Fkd nÙkk;ke mÙkjif=dk;ke ,o y[kuh;kfuA
lHkh mÙkj vyx nh xbZ mÙkj if=dk e gh fy[kA
Answers should be written in the separately provided answer-sheet only.

vfLeu i'ui= pRokj% [k.Mk% lfUrA
bl i'u i= e pkj [k.M gA
There are four sections in this question paper. **15 v‌ङ्काः**

[k.M% d vifBrk'k&vocks/kue
section A (Unseen Reading comprehension)

[k.M% [k jpukRedy[kue **15 v‌ङ्काः**
Section B (Writing Skill)

[k.M% x ifBrk'k&vocks/kue] lLÑrlkfgR;L; p ifjp;% **40$10 v‌ङ्काः**
Section C Reading comprehension

[k.M% ?k NUnks·y‌ङ्कkjk% **20 v‌ङ्काः**
Section D (Meters and figures of speech)

[k.M% d Section A

vifBrk'k & vocks/kue~

¼vifBrk'k & vocks/ku½

Unseen Reading Comprehension

5+10=15

1 v/kksfyf[kre~ vuqPNsn};ks ifBRok iz'uku~ laLÑrsu mÙkjr
v/kksfyf[kr nksuks vuqPNsnksa dks i<dj iz'uksa ds mÙkj laLÑr esa fyf[k,A
Read the following two passages and answer the questions in Sanskrit

d iFke% vuqPNsn%

एकदा सायङ्काले छाया मनुष्यम् अपृच्छत्, ''अये! ''कथं त्वम् आकारे तथैव तिष्ठसि, पश्य अहं तु प्रतिक्षणं सुदीर्घा भवामि इति।'' मनुष्यः अवदत्, सत्यम् उक्तम्। भगिनि! सत्ये असत्ये वास्तविके काल्पनिके एष एव भेदः। सत्यं यथावत् तिष्ठति असत्यं यथासमयं प्रतिक्षणं परिवर्तते। यः सत्यं वदति, सः निर्भयो भूत्वा तदेव वक्ति, असत्यवादी क्षणे क्षणे स्वकथने परिवर्तनं करोति। तेन मनः उद्विग्नं भवति। अतः उच्यते–सत्ये धर्मः प्रतिष्ठितः।

iz'uk%

I- ,dinsu mÙkjr
,d 'kCn esa mÙkj nhft,A
Answer in one word only. (1½×2=1)

(i) कः क्षणे क्षणे परिवर्तितं कथनं वदति?

(ii) धर्मः कुत्र प्रतिष्ठितः?

II- iw.kZokD;su mÙkjr (1×2=2)
iw.kZokD; esa mÙkj nhft,A
Answer in a complete sentence

सत्ये असत्ये कः भेदः?

III- ;FkkfunZ'kse~ mÙkjr
;FkkfunZ'k mÙkj nhft,A (½×4=2)
Do as directed.

(i) भगिनि! इति सम्बोधनं कस्यै प्रयुक्तम्?

(ii) 'वास्तविके' इत्यस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

(iii) समयानुसारम् इति अर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

(iv) 'अपृच्छत्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

[k- f}rh;% vuPNsn% (10)

एकः भवननिर्माता बहूनि वर्षाणि सर्वकारीयभवनानां निर्माणम् अकरोत्। सेवानिवृत्तिसमयः आगतः। तस्य स्वामी अवदत्, ''एकम् अन्यं गृहनिर्माणं करोतु भवान्। एतत् एव अन्तिमं कार्यम् इति। सोऽचिन्तयत् अहं तु षण्मासानन्तरं सेवानिवृत्तः भविष्यामि। अतः स निर्माणे निकृष्टतरां सामग्रीं योजितवान्। काष्ठमपि निम्नश्रेण्याः आसीत्। बालुकायाः अधिकाधिकं प्रयोगम् अकरोत्। उपरि प्रदर्शनार्थं सुन्दरं लेपनम् कारितवान्।

तस्य मनसि विचारः उद्भूतः, ''यदि भवनं वर्षान्तरे एव पतति? पुनः दुष्टभावना प्रबला अभवत्। तेन मम का हानिः? अहं तु सेवानिवृत्तः तावत् भविष्यामि इति। कार्यं समाप्य स भवननिर्माता स्वामिनम् उपगम्य भवनकुञ्जिकां समर्पितवान्। प्रहृष्टः स्वामी अवदत्,'' इदं गृहं तु, त्वदीयम् एव। सेवानिवृत्तिकाले इदम् एव तव मानधनम्। भवननिर्माता आकाशात् पतितः इव पश्चात्तापेन शिरः अताडयत्।

अतः अस्माभिः पूर्णकर्तव्यनिष्ठया कार्यं करणीयम्, तेन एव राष्ट्रस्य प्रगतिः भविष्यति। यथा कर्म तथा फलम्।

iz'uk%

I. ,dinsu mÙkjr

,d 'kCn esa mÙkj nhft,A (½×4=2)

Answer in one word only

(i) भवननिर्माता भवननिर्माणे कीदृशीं सामग्रीं योजितवान्?

(ii) कार्यं समाप्य भवननिर्माता कम् उपागच्छत्?

(iii) भवननिर्माता बहूनि वर्षाणि केषां निर्माणम् अकरोत्?

(iv) उपरि प्रदर्शनार्थं भवननिर्माता कीदृशं लेपनं कारितवान्?

II. iw.kkZokD;su mÙkjr (2)

iw.kZokD; esa mÙkj nhft,A

Answer in a complete sentence

(i) भवनस्य पूर्णतां ज्ञात्वा स्वामी भवन–निर्मातारं किम् अवदत्?

(ii) भवननिर्माता किमर्थं शिरः अताडयत्?

III. ;FkkfunsZ'ke~ mÙkjr (4)

;Fkk funsZ'k mÙkj nhft,A

Do as directed

(i) 'करोतु' इति क्रियापदस्य कर्ता कः?

(ii) 'अधिकाधिकम्' इति पदं कस्य विशेषणम्?

(iii) 'प्रकटितः' इति स्थाने किं पदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(iv) 'इदम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

IV. **vL; vuPNnL; Ñr lefpr 'kh"kd fy[kr** (2)

bl vuPNn d fy, lefpr 'kh"kd fyf[k,A

Write a suitable title for this paragraph.

[k.M% [k (Section B)

jpukRedy[kue 15

jpukRedy[ku

Writing Skill

2- v/kkfyf[krk : ij[kk ifBRok dFkk iu% mÙkjifLrdk;k n'kokD;"k fy[kr

fuEufyf[kr : ij[kk dk i<dj dgkuh dk iu% mÙkjifLrdk e n l okD;k e fyf[k,A

Read the following outline and rewrite the story in answer-copy in ten sentences only. (1×10=10)

स्वामी रामतीर्थः – अमेरिकादेशेप्रवचनं, एका अमेरिकन– महिला, आभूषणानां स्वामिनः चरणयोः स्थापनं, रुदनं, पुत्रः मृतः, जीवितं करोतु, प्रार्थना, त्वम् योगी, कर्तुं सक्षमः, आम् कर्तुं सक्षमः, बहुमूल्यं दातव्यम्, ददामि। पश्य तं निर्धनं नीग्रोबालकम्। तं नीत्वा पुत्रवत् पालय। महिला–दुष्करम् एतत्, स्वामी–तव प्रश्नः अपि तथैव। महिला तं बालकं गृहं नयति, पुत्रवत्, भारतीयसंस्कृत्याः सन्देशः, वसुधैव कुटुम्बकम्।

3- if.kek;ke jk=k xxuL; lkUn;e bfr fo"k;e vf/kÑR; inÙk'kCnkuk lgk;r;k iञ्च okD;kfu fy[kr

if.kek dh jkf= e ^vkdk'k dk lkUn;* fo"k; ij fn, x, 'kCnk dh lgk;rk l ikp okD; fyf[k,A

Write five sentences on the beauty of sky at full moon night with the help of given words. (1×5=5)

e>t"kk

पूर्णः चन्द्रः, सर्वत्र अमृतवर्षणम्, असंख्यानि तारकाणि, ध्रुवतारकं तीव्रप्रकाशपूर्णम्, सप्तर्षिमण्डलम्, तारकाणि पुष्पाणि इव, चन्द्रः अमृतकलशः इव, चन्द्रस्य किरणाः शीतलाः, केचन जनाः नौकाविहारं, गगनस्य सौन्दर्यं पश्यन्ति, सर्वत्र शान्तिः, विकसन्ति, विराजन्ते, द्योतन्ते, प्राचीनकाले कौमुदीमहोत्सवस्य आयोजनम्। मेघानाम् आच्छादनात् दृश्यं, सर्वत्र कृष्णाः मेघाः

[k.M% x (Section C)

ifBr&vocks/kue ,o lLÑr lkfgR;L; ifjp;% 50

Text Book Comprehension and Introduction to History of Sanskrit Literature

15

5- v/kksfyf[kr x|k'k i|k'k] ukV;k'k p ifBrok rnk/kkfjrku i'uku mÙkjrifLrdk;ke mÙkjr
fuEufyf[kr x|k'k] i|k'k rFkk ukV;k'k dk i<dj i'uks d mÙkj nhft,A
Read the following extracts from prose, poetry and drama and answer the questions

v- x|k'k% (5)

एवं सकलगुणनिवासः स विक्रमो राजा एकदा मनस्यचिन्तयत् अहो असारोऽयं संसारः, कदा कस्य किं भविष्यति इति न ज्ञायते। यत् च उपार्जितानां वित्तं तदपि दानभोगैर्विना सफलं न भवति। तथा चोक्तम्

उपार्जितानां वित्तानां त्याग एव हि रक्षणम्।
तटाकोदरसंस्थानां परीवाह इवाम्भसाम्।।

i'uk%

I ,dinu mÙkjr
,d 'kCn e mÙkj nhft,A (½×2=1)
Answer in one word only

(i) उपार्जितानां वित्तानां कः रक्षकः?
(ii) अयं संसारः कीदृशः?

II i.kokD;u mÙkjr
i.kokD; e mÙkj nhft,A
Answer in a complete sentence (1×2=2)

(i) वित्तं कैः विना सफलं न भवति?
(ii) तडागे स्थितानां जलानां रक्षकः कः?

III ;Fkkfun'ke mÙkjr (½×4=2)
;Fkkfun'k mÙkj nhft,A
Do as directed

(i) सकलगुणनिवासः इति पदं कस्य विशेषणम्?
(ii) अचिन्तयत् इति पदस्य किं कर्तृपदम्?
(iii) 'जलानाम्' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?
(iv) परीवाह इवाम्भसाम् इति वाक्यांशे किम् अव्ययपदम्?

vk- i|k'k%

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा,
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ,
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्।।

i'uk%

I ,dinu mÙkjr (1/2×2=1)

,d 'kCn e mÙkj nhft ,A

Answer in one word only

(i) सभायां किम् अपेक्षितम्?

(ii) महात्मनाम् अभिरुचिः कस्मिन् भवति?

II i.kokD;u mÙkjr

i.kokD; e mÙkj nhft ,A

Answer in a complete sentence (1×2=2)

महात्मनां विपत्तौ अभिवृद्धौ च किं किं प्रकृतिसिद्धं भवति?

III ;Fkkfun'k d#r

fun'kku|kj dhft ,A (1/2×4=2)

Do as directed

(i) 'वेदे' इति स्थाने किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

(ii) प्रथमपंक्त्यां किम् अव्ययपदम्?

(iii) 'दुरात्मनाम् इति पदस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

(iv) 'युद्धे' इति अर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

IV ukV;k'k%

लवः (प्रविश्य, स्वगतम्) अविज्ञातवयः क्रमौचित्यात् पूज्यानपि सतः कथमभिवादयिष्ये (विचिन्त्य) अयं पुनरविरुद्धप्रकार इति वृद्धेभ्यः श्रूयते। (सविनयमपुसृत्य) एष वो लवस्य शिरसा प्रणामपर्यायः।

अरुन्धतीजनकौ कल्याणिन्। आयुष्मान् भूयाः।

कौसल्या जात! चिरंजीव।

अरुन्धती एहि वत्स! (लवमुत्सङ्गे गृहीत्वा आत्मगतम्) दिष्ट्या न केवलमुत्सङ्गश्चिरान्मनोरथोऽपि मे पूरितः।

कौसल्या जात! इतोऽपि तावदेहि। (उत्सङ्गे गृहीत्वा) अहो, न केवलं मांसलोज्ज्वलेन देहबन्धेन, कलहंसघोषघर्घरानुनादिना स्वरेण च रामभद्रम् अनुसरति।

i'uk%

I **,dinu mÙkjr** (½×2=1)

,d 'kCn esa mÙkj nhft,A

Answer in one word only

(i) लवः स्वरेण कम् अनुसरति?

(ii) जात! चिरं जीव इति आशीर्वादं का प्रयच्छति?

II **i.kokD;su mÙkjr** (1×2=2)

i.kokD; esa mÙkj nhft,A

Answer in a complete sentence

(i) लवम् उत्सङ्गे गृहीत्वा कस्याः मनोरथः पूरितः जातः?

(ii) लवः क्रमौचित्यम् अजानन् पूज्यान् सविनयम् उपसृत्य कथम् अभिवादयति?

III **;FkkfunsZ'k d#r** (½×4=2)

;FkkfunsZ'k dhft,A

Do as directed

(i) 'आत्मगतम्' इत्यस्य किं समानपदम् अस्मिन् नाट्यांशे प्रयुक्तम्?

(ii) 'मांसलोज्ज्वलेन इति कस्य विशेषणम्?

(iii) जात! इति सम्बोधनं कस्मै प्रयुक्तम्?

(iv) 'अचिरात्' इति अस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

6- 'kCnkFkkZu~ esy;r (1/2×4=2)

'kCnksa dk vFkksZa ls feyku dhft,A

Match the words with their meanings

'kCnk%	**vFkkZ%**
अ निसर्गतः	(i) पात्राणि
आ अभिजातम्	(ii) वृद्धावस्था
इ भाजनानि	(iii) कुलीनम्
ई जरा	(iv) स्वभावतः

7- LFkwyinkfu vk/kR; iz'ufuekZ.ka d#r (1×4=4)

LFkwy 'kCnksa ij vk/kkfjr iz'u fuekZ.k dhft,A

Frame questions based on the bold-lettered words.

(i) अथ **i`fFkO;k%** विभागनिरूपणम्।

(ii) सप्तग्रहाः **Loxa** परितो मेखलावत् परिभ्रमन्ति।

(iii) एतेषां **lIr}hikuka** प्रत्येकमावेष्टनरूपाः सप्तसमुद्राः।

(iv) **ikSjkf.kdkLrq** सप्त द्वीपानि वदन्ति।

8- v/kfyf[kr ;k% i|;k% HkkokFk;k% fjäLFkkuifÙk e>t"kknÙkin% d#r (3+3=6)
fuEufyf[kr nkuk i|k d HkkokFkk e fjäLFkkuk dh ifÙk e>t"kk e fn, x, ink l dhft,A

Fill in the blanks in the following explanations of the two verses with the words given in the box.

I असूर्या नाम ते लोकाः अन्धेन तमसावृताः।
तॉंस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।

II तदेजति तन्नेजति, तद् दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तः सर्वलोकस्य, तद्धि बहिः प्रतिष्ठितः।।

HkkokFk%

I ये नराः (i)...............हत्यां कुर्वन्ति, आत्मपतनस्य (ii)....................अनुसरन्ति, ते (iii)..............
उपरान्तम् (iv)---------------परिपूर्णेषु (v)---------------युक्तेषु लोकेषु (vi)------------

II सः चलति, सः न (i)................,सः (ii)................दूरे अपि अस्ति (iii)...............अपि अस्ति,
स एव (iv).........सर्वस्य (v).........विद्यमानः अस्ति, सः अस्मात् जगतः (vi)..........अपि अस्ति।

e>t"kk

मार्गम्, आसुरीभावैः, चलति, अन्तः, आत्मनः, मृत्योः, इन्द्रियेभ्यः, अस्य, बहिः अन्धकारेण, पतन्ति, समीपे,

9- v/kfyf[kr ;k% vUo;;k% fjäLFkkukfu i|j;r (1½+1½=3)
fuEufyf[kr vUo;k e fjäLFkkuk dh ifrZ dhft,A

Fill in the blanks in the following prose-order-renderings.

I तमध्वरे विश्वजिति क्षितीशं,
निःशेषविश्राणितकोषजातम्!,
उपात्तविद्यो गुरुदक्षिणार्थी,
कौत्सः प्रपेदे वरतन्तुशिष्यः।।

vUo;% वरतन्तुशिष्यः कौत्सः (i)................ गुरुदक्षिणार्थी विश्वजिति (ii)................
निःशेषविश्राणितकोषजातं तं क्षितीशं (iii)................।

II सर्वत्र नो वार्तमवेहि राजन्।
नाथे कुतस्त्वय्यशुभं प्रजानाम्।
सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः
कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा।।

vUo;% राजन्! सर्वत्र नः वार्तम् (i)................। त्वयि नाथे प्रजानाम् (ii)................कुतः?
सूर्ये तपति तमिस्रा लोकस्य (iii)................आवरणाय कथं कल्पेत।

10v v/kkfyf[kr dk0;kuk y[kdkuk uke fyf[kr& (1×5=5)

v/kkfy[kr dk0;k d y[kdk d uke fy[k &

Write the name of the authores of the following works :

(i) गीता

(ii) शिवराजविजयः

(iii) पाषाणीकन्या

(iv) प्रबन्ध मञ्जरी

(v) प्रबन्धपारिजातः

vk v/kkfyf[kry[kdkuk ,dL; ,dL; dk0;L; uke fyf[kr& (1×5=5)

fuEufyf[kr y[kdk d ,d ,d dk0; dk uke fyf[k, &

Write the name of one work of each of the following poets :

(i) भर्तृहरिः

(ii) भारविः

(iii) भवभूतिः

(iv) कालिदासः

(v) बाणः

11 ;Fkkfun'k d#r (2×5=10)

;Fkkfun'k dhft,A

Do as directed

I dr`in fØ;kin p fpur (½×4=2)

(i) क्षणे क्षणे हयस्य खुराश्चिक्कणपाषाणखण्डेषु प्रस्खलन्ति।

(ii) कलविङ्काश्चाटकैर–रुतैः परिपूर्णेषु नीडेषु प्रतिनिवर्तन्ते।

II fo'k"k.kfo'k"; in fpur (½×4=2)

(i) अस्य किन्तोः कारणात् कस्मिन्नपि कार्ये सफलता न अस्ति।

(ii) अहं निश्चिन्तताया एकं निःश्वासम् अमुचम्।

III j[kkf³r lokukein dLe i;äe (1×2=2)

(i) तात चन्द्रापीड! अधीतसर्वशास्त्रस्य **r** नाल्पमपि उपदेष्टव्यम् अस्ति।

(ii) विशेषेण तु राज्ञाम्। विरला हि r"kke उपदेष्टारः।

IV **i|nÙk'kCn;k% lekukFkZdin fpuqr** (1×2=2)

(i) **filiy% &** सर्वविधविटपिनाम् मध्यभागे स्थितः सुमहान् अश्वत्थदेवः वदति।

(ii) **cHk{kk'kkfUr% &** श्वापदानां हिंसाकर्म किल जठरानलनिर्वाणमात्रप्रयोजकम्।

V **d% d dFk;fr** 1/2×4=2

(i) मम दायित्वहस्तान्तरणपत्रकं सज्जीकुरु।

(ii) भगवान् यीशुस्तव मङ्गलं वितनोतु।।

[k.M% ?k

Section D

NUnk· yÄkjk%

Meters and Figures of Speech

10+10=20

12 **I·** **i'uku mÙkjr**

i'uk d mÙkj nhft,A

Answer the questions (1×4=4)

(i) विप्रः इति पदे 'वि' वर्णः गुरुः अस्ति वा लघुः?

(ii) वसन्ततिलकाछन्दसि प्रथमः वर्णः गुरुः भवति वा लघुः?

(iii) अनुष्टुप् इति पदे कः गणः?

(iv) 'शिखरिणी' छन्दसि प्रतिचरणं कति वर्णाः?

II. **v/kkfyf[kr ifjHkk"kk% i j;r** (1×3=3)

fuEufyf[kr ifjHkk"kk, i jh dhft,A

Fill in the blanks in the following definitions.

(i) ------------मालिनी भोगिलोकैः।

(ii) सूर्याश्वैर्यदि................शार्दूलविक्रीडितम्।

(iii) अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ..............................

III. **v/kkfyf[krpj.k}; fd NUn%** (½×2=1)

fuEufyf[kr nk pj.kk e dkuIk NUn g

What is the meter in the following two charanas?

(i) वर्णाश्रमाणां गुरवे स वर्णी,

(ii) विचक्षणः प्रस्तुतमाचचक्षे।।

IV. **dL;fpn~dL; NUnl% mnkgj.ka fy[krA** (2)

fdlh ,d NUn dk mnkgj.k fyf[k,A

Write an example of any one of the following meters.

शिखरिणी, वंशस्थ

13- I- **vyÄkj.kke~ v/kksfyf[krk% ifjHkk"kk% iwj;r** (1×4=4)

vyÄkjksa dh fuEufyf[kr ifjHkk"kk,¡ iwjh dhft,A

Complete the following definitions of the figures of speech.

(i) ....प्रकृतस्य परात्मना।

(ii) ....अनेकार्थाभिधानैः.................... ।

(iii) भवेदर्थान्तरन्यासो................ ।

(iv) ....अनुप्रासः।

II- **dL;fpn~dL; vyÄkjL; mnkgj.ka fy[kr** (1x3=3)

fdlh ,d vyÄkj dk mnkgj.k fyf[k,

Write an example of any one of the following figures of speech

रूपकम्, यमकम्

III. **v/kksfyf[krifä"kq dkS vyÄkjkS** (1x3=3)

fuEufyf[kr iafä;ksa esa dkSu dkSu ls vyÄkj gSa

Name the figures of speech in the following lines.

(i) रमते न मरालस्य मानसं मानसं विना।

(ii) शब्दार्थौ सत्कविरिव द्वयं विद्वानपेक्षते।।

(iii) यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ, प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्।।

vkn'k lLdri'ui=e & 2
,fPNdikB;Øe%
d{kk }kn'kh (XII)
[k.M% ¼d½
vifBr & vocks/kue

15

dkM l[;k 022

vof/k% & gkjk=;e i.kk³d% 100

I d y?k&vuPNn% 5

Øek³d:	mí'";e	i'uidkj%	vif{kr&mÙkjkf.k	v³- l³rk%	v³- foHkkx%
I	तथ्यबोध–परीक्षणम्	एकपदेन उत्तरम्	(i) असत्यवादी	½	1
			(ii) सत्ये	½	
II	ʼʼ	पूर्णवाक्येन उत्तरम्	सत्यं यथावत् तिष्ठति,	1	
			असत्यं प्रतिक्षणं परिवर्तते	1	2
III	भाषिककार्यम्	लघूत्तरः	(i) छायायै	½	
			(ii) काल्पनिके	½	
			(iii) यथासमयम्	½	2
			(iv) छाया	½	5

II [k- f}rh;% vuPNn% 80&100 'kCnk% 10

Øek³d:	mí'";e	i'uidkj%	vif{kr&mÙkjkf.k	v³- l³rk%	v³- foHkkx%
I	तथ्यबोध–परीक्षणम्	एकपदेन उत्तरम्	I (i) निकृष्टतराम्	½	
			(ii) स्वामिनम्	½	2
			(iii) सर्वकारीयभवनानाम्	½	
			(iv) सुन्दरम्	½	
II	ʼʼ	पूर्णवाक्येन उत्तरम्	II (i) इदं भवनं तु त्वदीयमेव	1	
			(ii) पश्चात्तापेन	1	2
III	भाषिककार्यम्	अतिलघूत्तरः	III (i) भवान्	1	
			(ii) प्रयोगम् इत्यस्य/प्रयोगस्य	1	
			(iii) उद्भूतः इति पदस्य	1	4
			(iv) भवनस्य/भवनम् इत्यस्य	1	
IV	समुचितशीर्षकम्	लघूत्तरः	IV (i) कर्तव्यनिष्ठा		
			(ii) यथा कर्म तथा फलम्	2	2
					10 15

[k.M% [k

jpukRedy[kue~ 15

Øekङ्क:	mís';e	iz'uizdkj%	vङ्क- lङ्करk%	vङ्क- foHkkx%
3.	रूपरेखां पठित्वा कथालेखनम् रूपरेखानुसारं दशवाक्यानि लेखनीयानि प्रतिवाक्यम् एकः अङ्कः	निबन्धात्मकः	1×10	10
4.	मञ्जूषाप्रदत्तशब्दैः दशवाक्यानां निर्माणम् प्रतिवाक्यम् एकः अङ्कः विषयः रात्रौ गगनस्य वर्णनम्	निबन्धात्मकः	1×10	10
				20

[k.M% x

ifBr&vocks/kue~ ,oa lLÑrlkfgR;L; ifjp;% 40$10

Text Book Comprehension

Øekङ्क:	mís';e	iz'uizdkj%	vis{kr&mÙkjkf.k	vङ्क- lङ्करk%	vङ्क- foHkkx%
5. अ	गद्यांशः तथ्यबोध– परीक्षणम्	I एकपदेन उत्तरम्	(i) त्यागः (ii) असारः	½ ½	1
		II पूर्णवाक्येन उत्तरम्	(i) दानभोगैः (ii) परीवाहः	1 1	2
	भाषिककार्यम्	III लघूत्तरः	(i) विक्रमस्य (ii) विक्रमः (iii) अम्भसाम् (iv) इव	½ ½ ½ ½	2 5
आ	पद्यांशः तथ्यबोध– परीक्षणम्	I एकपदेन उत्तरम्	(i) वाक् पटुता (ii) यशसि	½ ½	1
		II पूर्णवाक्येन उत्तरम्	(i) धैर्यम्, क्षमा	1+1	2
	भाषिककार्यम्	III लघूत्तरः	(i) श्रुतौ (ii) अथ (iii) महात्मनाम् (iv) युधि	½ ½ ½ ½	2 5

Øekad%	mi'; e	ii'uidkj%	vif{kr&mÙkjkf.k	vad& ladrk%	vad& foHkkx%
b-	ukV;k'k%				
I	तथ्यबोध–परीक्षणम्	एकपदेन	(i) रामभद्रम्	½	1
			(ii) कौसल्या	½	
II		पूर्णवाक्येन	(i) अरुन्धत्याः	1	
			(ii) एष वो लवस्य शिरसा प्रणामपर्यायः	1	2
III	भाषिककार्यम्	अतिलघूत्तरः	(i) स्वगतम्	½	
			(ii) देहबन्धेन इत्यस्य	½	
			(iii) लवाय	½	2
			(iv) चिरात्	½	[5]
6.	शब्दार्थमेलनम्	अतिलघूत्तरः	अ + (iv)	½	
			आ + (iii)	½	
			इ + (i)	½	
			ई + (ii)	½	2
7.	प्रश्ननिर्माणम्	अतिलघूत्तरः	(i) कस्याः,	1	[2]
			(ii) कम्	1	
			(iii) केषाम्	1	4
			(iv) के	1	[4]
8.	भावार्थपूर्तिः	I लघूत्तरः	(i) आत्मनः	½	
			(ii) मार्गम्	½	
			(iii) मृत्योः	½	
			(iv) अन्धकारेण	½	3
			(v) आसुरभावैः	½	
			(vi) पतन्ति	½	
		II लघूत्तरः	(i) चलति	½	
			(ii) इन्द्रियेभ्यः	½	
			(iii) समीपे	½	
			(iv) आत्मनः	½	
			(v) अन्तः	½	
			(vi) बहिः	½	3 [6]

Øekङ्क:	mí';e	i'uidkj%	vif{kr&mÙkjkf.k	vङ्क- lङ्केrk%	vङ्क- foHkkx%
9.	अन्वयपूर्तिः	लघूत्तरः I	(i) उपात्तविद्यः	½	
			(ii) अध्वरे	½	
			(iii) प्रपेदे	½	1½
		II	(i) अवेहि	½	
			(ii) अशुभम्	½	1½
			(iii) दृष्टेः	½	3
10. अ			(i) वेदव्यासः	1	
			(ii) अम्बिकादत्तव्यासः	1	
			(iii) पाषाणीकन्या	1	
			(iv) प्रबन्धमञ्जरी	1	
			(v) श्रीमद् मधुरानाथ शास्त्री	1	
आ			(i) नीतिशतकम्	1	
			(ii) किरातार्जुनीयम्	1	
			(iii) उत्तररामचरितम्	1	5
			(iv) रघुवंशम्	1	
			(v) हर्षचरितम्	1	
11.	भाषिककार्य–परीक्षणम्	अतिलघूत्तरः			
	I कर्तृक्रिया–पदचयनम्		(i) कस्मिन् कार्ये	1	
			(ii) एकं निःश्वासम्	1	2
	II विशेषण–विशेष्यचयनम्		(i) चन्द्रापीडाय	1	
			(ii) राज्ञाम् इति कृते	1	2
	III सर्वनामपद–प्रयोगः		(i) अश्वत्थः	1	
			(ii) जठरानलनिर्वाणम्	1	2
	IV समानार्थक–पदचयनम्		(i) श्रीनायारः कार्यालयलिपिकम्	1	
	V कः कं कथयति?		(ii) सुश्रीमेरी–श्रीमायारम् (पत्रद्वारा)	1	2
				10	45

[k.M% ?k
NUnks·yÄ~dkjifjp;%

Øekad:	mi';e	i'uidkj%	vif{kr&mÙkjkf.k	vad& ladrk%	vad& foHkkx%
12. अ	स्वरविवेकः	लघुगुरुविभेदः	(i) गुरुः	1	
			(ii) गुरुः	1	
			(iii) यगणः	1	
			(iv) सप्तदशवर्णाः	1	4
आ	परिभाषापूर्तिः	लघूत्तरः	(i) ननमययुतेयम्	1	
			(ii) मःसजौ सततगाः	1	
			(iii) पादौ यदीयावुपजातयस्ताः	1	3
इ	छन्दसः अभिज्ञानम्		उपजातिः	1	1
ई	उदाहरणज्ञानम्		कस्यचिदेकस्य अलङ्कारस्य उदाहरणम्	2	2
					10
13. अ.	परिभाषापूर्तिः	लघूत्तरः	(i) भवेत् सम्भावनोत्प्रेक्षा।	1	
			(ii) श्लिषैः पदैः / श्लेष इष्यते	1	
			(iii) अनुषक्तार्थान्तराभिधः	1	
			(iv) वर्णसाम्यम्।	1	4
आ	उदाहरणज्ञानम्	निबन्धात्मकम्	कस्यचिदेकस्य अलङ्कारस्य उदाहरणम्		3
5.	अलङ्कार– अभिज्ञानम्	लघूत्तरः	(i) यमकः	1	
			(ii) उपमा	1	
			(iii) अर्थान्तरन्यासः	1	3
					10
				10+10=20	